आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 अप्रेल, 2023
डाक प्रेषण तिथि 10 अप्रेल, 2023

वर्ष : 81 अंक : 04
वैशाख, 2080 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

अप्रेल, 2023

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच नमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

Website : www.jinwani.in

जितनी समत्व की साधना बढ़ेगी,
उतना मोह-विजय सरल होता जाएगा।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार

आवृत्ति द्विवार्षिक

समता विभूति, समीक्षणध्यान योगी आचार्य श्री नानालालजी म.सा. ने समाज व विश्व को समता दर्शन और व्यवहार की अनमोल विरासत प्रदान की। आचार्यश्री की पुण्यस्मृति में श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ द्वारा 'आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार' हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित की जा रही है।

1. पात्रता :-

(1.1) यह पुरस्कार शिक्षा, समाजसेवा, अध्यात्म, स्वास्थ्य, आर्थिक उत्थान, कृषि, पशुपालन, वन संरक्षण, पर्यावरण, व्यसनमुक्ति, जल संरक्षण इत्यादि जनसेवा-क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित करने वाले व्यक्ति अथवा संस्था को प्रदान किया जाता है।

(1.2) जनसेवा पुरस्कार हेतु किसी भी वर्ग, वर्ण या समाज का व्यक्ति अथवा संस्था, जो भारत में उपरोक्त जनसेवा में कार्यरत हो, नामांकित किया जा सकता है।

2. आवेदन के नियम :

(2.1) आवेदन-पत्र में नाम, पता, मोबाइल नम्बर, ई-मेल, कार्यक्षेत्र, सेवाक्षेत्र आदि का पूर्ण उल्लेख हो। जिस व्यक्ति अथवा संस्था को नामांकित किया जा रहा है, उसके द्वारा प्रदत्त सेवाओं का रिकॉर्ड अर्थात् समाचार-पत्र की कटिंग, फोटोग्राफ्स, प्रमाण-पत्र, सम्मान-पत्र, स्मृति-चिह्न के फोटोग्राफ्स आदि भी अवश्य भिजवाएँ।

(2.2) नामांकित व्यक्ति एवं संस्था की सेवा से लाभान्वित होने वाले व्यक्तियों अथवा संस्थाओं के लेटर-हैड पर अनुशंषा-पत्र भी संलग्न किये जा सकते हैं। चूँकि यह पुरस्कार सेवाकार्य करने वाले व्यक्ति अथवा संस्था को दिया जा रहा है।

3. स्वरुप :

(3.1) इस हेतु चयनित व्यक्ति/संस्था को श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की ओर से दो लाख की राशि का चैक, अभिनन्दन-पत्र एवं स्मृति-चिह्न किसी विशिष्ट दिवस अथवा गरिमामय समारोह में सम्मानपूर्वक भेंट किया जायेगा।

: निवेदक :
अजय पारख, रायपुर
(संयोजक, आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार)

स्व. श्री प्रदीप कुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार

आवृत्ति वार्षिक

1. पात्रता :

इस पुरस्कार के अन्तर्गत जैनधर्म, दर्शन, इतिहास, कला एवं संस्कृति तथा जैन साहित्य, काव्य कला एवं संस्कृति और कथा, निबन्ध, नाटक, संस्मरण एवं जीवनी आदि के सम्बन्ध में लिखित मौलिक ग्रन्थ पर दिया जाता है।

2. पुरस्कार के नियम :

(2.1) पुरस्कार हेतु प्रकाशित /अप्रकाशित, (पाण्डुलिपि) दोनों प्रकार की कृतियाँ निर्धारित आवेदन-पत्र के साथ प्रस्तुत की जा सकती हैं।

(2.2) अन्य संस्थाओं द्वारा पूर्व में पुरस्कृत कृति पर यह पुरस्कार नहीं दिया जावेगा।

(2.3) प्रकाशित कृति का प्रकाशन पुरस्कार हेतु घोषित अवधि में (वर्ष 2016 से पूर्व नहीं) एवं घोषित विषय परिधि में ही होना चाहिये। यानि पुरस्कार हेतु प्रस्तुत कृति का प्रकाशन वर्ष 2016 के पश्चात् का होना चाहिए।

(2.4) पुरस्कार मूल्यांकन के लिए कृति की मुद्रित अथवा पाण्डुलिपि की चार प्रतियाँ निःशुल्क भेजनी होगी। पाण्डुलिपि की 3 प्रतियाँ आवेदक को पुनः लौटा दी जायेगी। मुद्रित कृतियाँ नहीं लौटाई जावेगी।

(2.5) अप्रकाशित कृति (पाण्डुलिपि) की प्रतियाँ स्पष्ट टंकण की हुई अथवा हस्तलिखित, सुवाच्य एवं जिल्द बँधी होनी चाहिये।

(2.6) प्रतिभागी विद्वानों के लिए यह आवश्यक होगा कि वे कृति के सम्बन्ध में स्वयं की कृति होने एवं इसके मौलिक होने का प्रमाण-पत्र साथ भेजें।

3. स्वरूप :

(3.1) पुरस्कार के अन्तर्गत संघ की ओर से 51 हजार रुपये की राशि का चैक, अभिनन्दन-पत्र एवं स्मृति चिह्न किसी विशिष्ट दिवस अथवा गरिमामय समारोह में सम्मान पूर्वक भेंट किया जाएगा।

निवेदक : प्रदीप बुरड़- जयपुर (रिटायर्ड आई.ए.एस.)
संयोजक- स्व. श्री प्रदीप कुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार समिति

प्रविष्टियाँ भिजवाने की अन्तिम तिथि 30 मई 2023 है, प्रविष्टियाँ केन्द्रीय कार्यालय के पते पर भिजवाएँ।

प्रविष्टियाँ भिजवाने का पता

केन्द्रीय कार्यालय : श्री अ.भा.सा. जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)-334401 फोन 0151-2270261, मो.नं. - 9116109777 ई-मेल :- ho@sadhumargi.com

अंक सौजन्य

श्री महावीराय नमः
श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः

।। जय गुरु हीरा ।। ।। जय गुरु महेन्द्र ।। ।। जय गुरु मान ।।

आत्मसुधार का एक निश्चित क्रम है-जीवनसुधार, मरणसुधार और आत्मसुधार। *-आचार्यश्री हस्ती*

मृत्यु की विभीषिका पर विजय प्राप्त कर लेना संथारा है। *-आचार्यश्री हीरा*

दीर्घकालीन वर्षीतप आराधना करने वाले, 36 वर्ष की युवावय से ब्रह्मचर्य के पालक, जमीकन्द एवं रात्रिभोजन के पूर्ण त्यागी, गत 15 वर्षों से बड़ी स्नान के त्यागी, नियमित 11 सामायिक की साधना एवं 2000 गाथाओं का स्वाध्याय करने वाले, अनशन तप की अनेक तपस्याएँ करने वाले, भजन-प्रार्थनाओं के माध्यम से भाव-विभोर होने वाले श्रद्धानिष्ठ, सरलमना, सेवाभावी, उदारमना वरिष्ठ सुश्रावक **तपस्वी रत्न संथारा साधक श्री लाभचन्दजी नाहर** के 11 मार्च, 2023 को संथारापूर्वक समाधिमरण पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

श्रद्धावनत
धर्मसहायिका श्रीमती लाड़श्री नाहर
राजीव, संजीव, सन्दीप (सुपुत्र)
एवं
समस्त नाहर परिवार, सूरत

2/3871, हल्दिया सैरी, महावीर हॉस्पिटल के पास, सगरामपुरा, सूरत-395002 (गुजरात)

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :

Rajeev Nita Daga Foundation Houston

ISSN 2249 - 2011 हिन्दी-मासिक

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरुपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक
अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, 2705088
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

सह-सम्पादक
नौरतनमल मेहता, जोधपुर
त्रिलोकचन्द जैन, जयपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

सम्पादकीय कार्यालय
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinwani@gmail.com / editorjinvani@gmail.com

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2021-23
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

पइण्णवाई, दुहिले,
थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अचियत्ते,
अविणीए त्ति वुच्चइ।।
-उत्तराध्ययनसूत्र, 11.9

जो असम्बद्ध भाषी द्रोही,
दर्पी लोभी मन-अनुगामी।
संविभागरहित अप्रीतिपात्र,
अविनीत न होता शुभकामी।।

अप्रेल 2023
वीर निर्वाण सम्वत्, 2549
वैशाख, 2080

वर्ष 81 अंक 4

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 8000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/सहयोग राशि ``JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में NEFT/RTGS से जमा कराकर जमापर्ची के साथ पेन नं. भी (काउन्टर-प्रति) श्री अनिलजी जैन के व्हाट्स एप्प नं. 9314635755 पर भेजें।

जिनवाणी में प्रदत्त सहयोग राशि पर आयकर में 80G की छूट उपलब्ध है।

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	मोह-जय	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	10
विचार-वारिधि-	अमूल्य शिक्षासूत्र	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	12
प्रवचन-	आत्मविकास में बाधक हैं कनक और कामिनी	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	13
	अहंकार पुण्यफल का नाशक	-भावीआचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	18
	परिवर्तनशील परिस्थिति का सदुपयोग ही साधक का धर्म	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	21
	उपकरणों से कषाय-विजय की प्रेरणा	-श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.	25
	जो होता है, वह अच्छे के लिए होता है	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	28
	चारित्र-प्राप्ति में पाँच समवाय की भूमिका	-श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा.	29
पाण्डुलिपि-	अपभ्रंश का अभिनव चरित ग्रन्थ : संतिणाहचरिउ	-प्रो. प्रेम सुमन जैन	33
English-section	**A Bird's Eye-View on Jainism**	***-Dr. Priyadarshana, Namrata***	38
संगोष्ठी-आलेख-	सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में पञ्च-कारण-समवाय की भूमिका	-श्री जितेन्द्र डागा	48
युवा-स्तम्भ-	फैशनजन्य समस्याएँ एवं वस्त्रविवेक	-डॉ. नवलसिंह जैन	54
अध्यात्म-विज्ञान-	ध्यान और रसायन	-श्री प्रमोद महनोत	58
	कैसे हो व्यर्थ-चिन्तन का त्याग?	-श्री धर्मेन्द्र कुमार जैन	60
जीवदया-	उड़ जा कबूतर	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	63
साधना-	संयम की संरक्षा : जिज्ञासा-समाधान	-संकलित	67
पुण्य-स्मरण-	साहित्य के सूर्य आचार्यश्री हस्ती	-श्री शुभम बोहरा	70
गीत/कविता-	सोचना है तो बड़ा सोचो	-श्री निपुण डागा	37
	लो समय, मैं तुमसे लड़ता हूँ	-श्री सुशील चणोदिया	57
	खुशी-खुशी हार जाइये	-श्री राजेन्द्र जैन 'राजा'	62
	सबको देती ज्ञान किताबें	-श्री शुभम बोहरा	66
	प्रभुवर महावीर भगवान	-श्री विजेन्द्र जैन	69
	क्षण-भंगुर जीवन की कलिका	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	89
विचार/चिन्तन-	निन्दा से होते अठारह पाप	-श्री कस्तूरचन्द सी. बाफना	11
	ज़िन्दगी बड़ी होनी चाहिए	-श्री जयदीप ढड्ढा	27
	कैरियर से पहले कैरेक्टर जरूरी	-श्री प्रियेश पारसमल दुग्गड़	62
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री गौत्तमचन्द जैन	71
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	73
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	90
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	91

ISSN 2249-2011

सम्पादकीय

मोह-जय

डॉ. धर्मचन्द जैन

मोह दुःख का कारण है, इसलिए मोह त्याज्य है। मोह के कारण व्यक्ति मूढ़ बना रहता है, उसकी सोच विकृत होती है और आचरण भी तदनुरूप विकारयुक्त होता है। मोही व्यक्ति को यह भान नहीं होता कि उसकी सोच विकृत है, एकांगी है या आग्रही है। वह अपनी विकृत सोच को ही सही मानता है तथा दूसरों को भी उसे स्वीकार करने के लिए बाध्य करता है। ऐसी सोच वाला व्यक्ति अपने सुख को दूसरों पर निर्भर समझता है। दूसरे व्यक्ति, वस्तु एवं परिस्थिति उसके अनुकूल हो जायेंगे तो वह सुखी हो जायेगा, इस सोच के साथ वह जीता है। वह सब कुछ अपने अनुकूल न होने पर अशान्त एवं दुःखी होता है तथा अपने को श्रेष्ठ समझता है। दूसरों के साथ मायावी आचरण करता है एवं स्वयं को भी धोखा देता है। विषय सुखों के प्रलोभन में फँसा रहता है। वह जिन विषयों का सेवन करता है, उनके प्रिय होने पर राग करता है तथा अप्रिय होने पर द्वेष करता है।

मोह अपनी देह के प्रति भी होता है, धन के प्रति भी होता है, परिवारजनों के प्रति भी होता है। इनमें प्राथमिकताएँ बदलती रहती हैं। कोई व्यक्ति धनार्जन के लिए शरीर की परवाह नहीं करता। धनादि कमाने एवं उनके संग्रह में शरीर को खो देता है। कोई शरीर की रक्षा में, उसे हृष्ट-पुष्ट करने में तथा शरीर से भोग भोगने में धन की परवाह नहीं करता। कोई परिवारजनों के प्रति मोह के कारण अपने धन और शरीर दोनों की बलि चढ़ा देता है। कोई धन के प्रति इतना अधिक मोहासक्त होता है कि वह पारिवारिकजनों के लिए भी उसका सदुपयोग करने में कंजूसी करता है। अपनी-अपनी धारणाओं के अनुसार व्यक्ति मोह का आचरण करता है। वह मोह किसी इष्ट वस्तु, व्यक्ति एवं परिस्थिति के प्रति हो सकता है। यह मोह रागात्मक एवं द्वेषात्मक दोनों प्रकार का हो सकता है। हम प्रायः रागात्मक मोह से परिचित हैं, किन्तु अनिष्ट वस्तु, व्यक्ति एवं परिस्थिति के प्रति द्वेषात्मक मोह होता है। मोह की प्रवृत्ति को बढ़ाने में काम-वासना, दूसरे का उपहास, भोगों में रुचि, सत्य में अरुचि, अपनी हानि का भय आदि भी सहायक होते हैं।

विकृत सोच वाला व्यक्ति तो मोह विमूढ़ होता ही है, किन्तु सम्यक् सोच वाला व्यक्ति भी त्याग प्रवृत्ति से युक्त न होने के कारण मूढ़ता का आचरण करता रहता है। मोह का अनादिकालीन संस्कार आसानी से नहीं छूटता। गृहस्थ जीवन का त्याग कर मुनिव्रत को अंगीकार कर लेने पर भी मोह की प्रवृत्ति सहज समाप्त नहीं होती। कभी मोह उपशान्त हो जाता है, जिससे कुछ काल के लिए निर्मलता का अनुभव होता है, किन्तु मोह का जड़मूल से विनाश करने के लिए आत्मपराक्रम की आवश्यकता होती है। इस आत्मपराक्रम में समत्व की साधना का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जितनी समत्व की साधना बढ़ेगी, उतना मोह-विजय सरल होता जाएगा। आत्मपराक्रम में क्रोधादि के त्याग के साथ प्रमाद का परिहार भी आवश्यक है। मोह का पूर्ण विनाश होने पर ही केवलज्ञान, केवलदर्शन, अनन्त वीर्य आदि गुण प्रकट होते हैं।

हम संसारी जीव अपने जीवन में व्यावहारिक स्तर पर किस तरह से मोह पर विजय प्राप्त करने की साधना करें, इस सम्बन्ध में आगमों, आचार्यों एवं ज्ञानियों के विचारों का आधार लेकर कुछ चिन्तन किया जा रहा है-

1. मोह-जय का प्रथम साधन है-शान्त रहने का अभ्यास। शान्तचित्त हुए बिना सत्य का दर्शन नहीं होता। प्रतिदिन कुछ समय शान्त रहने का अभ्यास करें तथा

तुरन्त किसी प्रतिकूल बात पर प्रतिक्रिया न करें। इससे अपने भीतर में रहे हुए सद्-असद् संस्कार प्रकट होंगे, किन्तु उनके साथ लड़े बिना शान्ति से उन्हें देखना प्रारम्भ करें तो अपने दोष देखने का सामर्थ्य विकसित होगा। यह सामर्थ्य हमें हमारे मोह की प्रवृत्तियों का भी दर्शन कराने में सक्षम होगा। मोह को देखने पर ही उस पर नियन्त्रण किया जा सकता है। दोष को जाने बिना उसे दूर करना शक्य नहीं।

2. अपनी धारणाओं के कारण हम दु:खी, सुखी होते हैं। हमारी धारणा है कि हमारे दु:ख का कारण कोई दूसरा है। इस धारणा को छोड़ना होगा। जब तक दूसरे को दु:ख का कारण मानेंगे तब तक सुखी बनने का मार्ग प्रशस्त नहीं होगा। दूसरे शब्दों में कहें तो मोह का प्रभाव नहीं छूटेगा।

3. मोह में हम दूसरों से सुख चाहते हैं, इसकी बजाय नि:स्वार्थ भाव से दूसरों को सुख देना प्रारम्भ करें। इससे मोह का दुर्गुण निष्काम प्रेम अथवा अनुराग के सुख में परिणत हो जायेगा। इससे विशिष्ट शान्ति एवं आनन्द का अनुभव होगा।

4. जिसके प्रति मोह है, उसको हम या तो सुखी देखना चाहते हैं अथवा उससे सुख चाहते हैं। सुख चाहने की अपेक्षा सुखी देखना उपादेय हो सकता है, किन्तु जिन साधनों से हम उसे सुखी बनाना चाहते हैं उनमें हम भ्रान्त रहते हैं। अपनी ओर से उसे दु:ख न दें तथा उसके हित एवं उन्नति में सहायक बनें तो स्थूल रूप से मोहरहित हुआ जा सकता है।

5. सबसे बड़ा साधन सोच का विकास है। यह दृष्टिकोण निर्मल होने तथा ज्ञान के सम्यक् होने पर सम्भव है। आगम और तत्त्वार्थसूत्र में भी रत्नत्रयी में इसे स्थान दिया गया है। दृष्टिकोण सही होने पर ज्ञान स्वत: सम्यक् हो जाता है। सही दृष्टिकोण एवं ज्ञान में वह सामर्थ्य है जो हमें मोह का ज्ञान कराकर उसे दूर करने की भी शक्ति प्रदान करता है।

6. आहार, भय, मैथुन और परिग्रह इन चार संज्ञाओं की पूर्ति में जो अधिक लिप्त है, वह शीघ्र मोहरहित नहीं हो सकता। ये चारों संज्ञाएँ जन्मजात होती हैं, किन्तु विवेकपूर्वक इन पर नियन्त्रण किया जा सकता है। उदाहरणार्थ परिग्रह संज्ञा से जो आच्छन्न होता है, वह धन-सम्पत्ति, क्षेत्र-वास्तु आदि के संग्रह में लगा रहता है तथा परिणाम में तनाव और दु:ख पाता है। जहाँ परिग्रह है वहाँ आसक्ति है, जहाँ आसक्ति है वहाँ मोह है। उत्तराध्ययनसूत्र (32.8) में कहा है-**'मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा'** अर्थात् जिसके तृष्णा नहीं होती उसके मोह का नाश हो जाता है।

7. जो ज्ञान हमें प्राप्त है, उसका आदर करने से मोह-जय का मार्ग प्रशस्त होता है। ज्ञान का आगे से आगे प्रकाश प्राप्त होता है। ज्ञान को आचरण में लाना ही ज्ञान का आदर है। कोई भी पदार्थ, व्यक्ति, परिस्थिति ऐसी नहीं है, जो शाश्वत हो। यह देह भी परिवर्तनशील है। इसका संयोग भी अनित्य है, वस्तु, व्यक्ति आदि का संयोग भी अनित्य है। इसलिये इनका संयोग बनाए रखने की इच्छा त्याज्य है।

8. संसार में कोई शरणभूत नहीं है। अरिहंत, सिद्ध, साधु और जिनप्रज्ञप्त धर्म ही शरणभूत हैं। किसी अन्य की शरण हमारी रक्षा करने वाली नहीं है। अरिहंत, सिद्ध एवं साधु की शरण भी धर्म का मार्ग प्रशस्त करती है। अत: धर्म की शरण सर्वोत्कृष्ट है। धर्म के अन्तर्गत क्षमा, मार्दव, सरलता, निर्लोभता, सत्य, संयम, तप, त्याग, अकिञ्चनता तथा ब्रह्मचर्य का समावेश होता है। सही मायने में धर्म के पथ पर चलकर मोह को जीता जा सकता है।

9. दूसरों की भूलों को क्षमा कर देना सुख का महत्त्वपूर्ण साधन है। क्षमा करने से वैर की गाँठ नहीं बँधती। मोह के कारण भी क्षमा कर दिया जाता है, किन्तु इस कारण से क्षमा करना उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, जितना मैत्री एवं आत्मीयता के कारण क्षमा करना है। मोह के कारण परिवारजनों की उन गलतियों की भी उपेक्षा कर दी जाती है, जिनके कारण उनका चारित्रिक विकास नहीं होता। उनके प्रति सद्भाव तो हो, पर पक्षपात न हो। वह क्षमा उनका पक्षपात है। गलत कार्यों

का समर्थन करना गलत है, किन्तु साथ ही उनसे द्वेष करना भी गलत है, द्वेष करने से चित्त अशान्त रहता है। अत: द्वेष किए बिना उनका सुधार करने का प्रयत्न हो।

10. जिसमें व्यक्ति अपनी सुरक्षा ढूँढ़ता है, सुख समझता है, उसके प्रति मोह करता है और मोह दु:ख का कारण है। सुरक्षा एवं सुख के साधनों को अपनाना बुरा नहीं, बुरा है उनके प्रति मोह। इस मोह को ज्ञानपूर्वक दूर किया जा सकता है। मोह के स्थान पर परिवारजनों के हित को महत्त्व दिया जाए।

11. संसार में वस्तुत: सब अपने-अपने कर्मों के अनुसार सुख-दु:ख प्राप्त कर रहे हैं। सबके अपने-अपने कर्म हैं। मुझे भी अपने कर्मों को सुधारना है। पूर्व में बाँधे गए कर्मों का क्षय करना है। इसके लिए आवश्यक है कि अब ज्ञान का आदर करूँ तथा मोह पर विजय प्राप्त करूँ। ज्ञान से अनेक समस्याओं का समाधान स्वत: हो जाता है। ज्ञानपूर्वक अहिंसा का पालन करूँ। किसी का शोषण नहीं करूँ और किसी को पीड़ा नहीं दूँ। स्वयं की हिंसा न करूँ। सत्यनिष्ठ बनूँ। ईमानदारी एवं प्रामाणिकता का आचरण करके मोह के प्रभाव को कम करूँ। काम-वासना को नियन्त्रित करूँ। परिग्रह की मर्यादा करूँ। मैं दु:ख के बीज बोकर सुख प्राप्त नहीं कर सकता। मोह को बढ़ाकर समस्या का निवारण नहीं हो सकता।

12. एक आत्मा ही शाश्वत है, शेष सब पदार्थों का संयोग-वियोग होता रहता है। उनका सदुपयोग हो, किन्तु उनसे मोह न हो। कहा गया है-

एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा।।

एक शाश्वत आत्मा ही मेरा अपना है और वह ज्ञानदर्शन युक्त है। शेष बाह्य पदार्थ हैं, जिनका संयोग-वियोग होता रहता है। जिनके प्रति मोह करते हैं, एक दिन उनको न चाहते हुए भी छोड़कर जाना पड़ता है। अत: उससे पहले ही उनके मोह का त्याग करना उचित है।

13. मोह को जीतने का एक उपाय है-प्राणिमात्र के प्रति मैत्री एवं आत्मीयता का भाव। सीमित लोगों से स्वार्थवश जो लगाव होता है वह मोह का रूप है, किन्तु सबके प्रति हित के भावपूर्ण जो मैत्री है वह मोह की सघनता को तोड़ती है। भोगों की प्राप्ति पर, दूसरों की हानि पर, अपने अहंकार पोषण पर प्रमोद न कर, अपने से अधिक गुणवानों को देखकर प्रमोद की अनुभूति हो तो भीतर का कषाय भाव कमजोर पड़ता है। हमारा दु:खियों के प्रति करुणा का भाव हो तथा अविनीतों के प्रति माध्यस्थ भाव हो।

14. जितना मोह विरल होगा उतना मनुष्य अपने को आनन्दित एवं तनावरहित अनुभव करेगा। जिसके पास कुछ नहीं है वह भी सघन मोह युक्त हो सकता है। अधिकतर निर्धन लोग भी सघन मोह के कारण मूढ़ता का जीवन जीते हैं। भीतर से ज्ञान का प्रकाश मोह के अन्धकार को दूर भगाता है। ज्ञान का प्रकाश आत्मिक सामर्थ्य का विकास करता है। ज्ञान ही विवेक एवं प्रज्ञा का स्वरूप ग्रहण करता है। जिसकी प्रज्ञा जितनी निर्मल होगी वह उतना मोहरहित हो सकता है।

15. दान की प्रवृत्ति भी मोह को कम करती है अथवा कहें मोह की कमी व्यक्ति को त्याग एवं दान के लिए प्रवृत्त करती है।

16. मोह का एक रूप 'काम' है। काम-विकारों पर विजय भी मोहविजय की ओर एक क़दम है।

17. मोह पर पूर्ण विजय के लिए सतत जागरूक रहने की आवश्यकता है। जो प्रमाद में जीता है वह मोह को नहीं जीत पाता। प्रमाद का त्याग कर अप्रमाद को अपनाना आवश्यक है। प्रमाद मनुष्य को मद्य, विषय, कषाय, निद्रा एवं विकथा में संलग्न रखता है।

18. समता अर्थात् सामायिक की साधना मोहविजय का एक अमोघ उपाय है। इससे समता में रहने का जितना अभ्यास बढ़ेगा उतना व्यक्ति मोह को किनारे करने में समर्थ होगा। ध्यान-साधना भी समता में रहने का साधन है। समता में रहकर व्यक्ति स्वयं का निरीक्षण कर सकता है। आलोचना, निन्दना एवं गर्हा करके आत्मशुद्धि कर सकता है। मोह, मलिनता एवं मूढ़ता का सूचक है। इसे दूर करके ही निर्मलता एवं प्रज्ञा का अनुभव किया जा सकता है।

ISSN 2249-2011

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

अणुप्पेहाए णं भंते! जीवे किं जणयइ?

अणुप्पेहाए णं आउयवज्जाओ सत्तकम्मप्पगडीओ घणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ। दीह कालट्ठियाओ हस्सकालट्ठियाओ पकरेइ। तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ। बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ। आउयं च णं कम्मं सिया बंधइ, सिया नो बंधइ। असायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणइ। अणाइयं च अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं खिप्पामेव वीइवयइ।

-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 29, सूत्र 22

अर्थ-अनुप्रेक्षा से भगवन्! जीव को क्या उपलब्धि होती है? अनुप्रेक्षा से आयुष्य कर्म को छोड़कर गाढ़ बन्धनों से बद्ध सात कर्म प्रकृतियों को शिथिल कर लेता है। दीर्घकाल की स्थिति वाली को ह्रस्व काल की स्थिति वाली कर लेता है। तीव्र अनुभाव (रस) वाली कर्म प्रकृतियों को मन्द अनुभाव वाली कर लेता है। बहुप्रदेश वाली को अल्पप्रदेश वाली बना लेता है। आयुष्य कर्म को कदाचित् बाँधता है, कदाचित् नहीं बाँधता। असातावेदनीय कर्म एवं अन्य अशुभ प्रकृतियों का बार-बार उपचय नहीं करता। अनादि, अनन्त, दीर्घमार्ग वाले चार गतिरूप संसार कांतार का शीघ्र ही व्यतिक्रम (पार) कर लेता है।

विवेचन-स्वाध्याय के पाँच भेदों में वाचना, पृच्छना, परिवर्तना के पश्चात् अनुप्रेक्षा का कथन हुआ है। अनुप्रेक्षा को स्वाध्याय का एक प्रमुख अंग स्वीकार किया गया है। अनुप्रेक्षा के पश्चात् ही धर्मकथा शोभित होती है एवं उसमें सारपूर्ण कथन होता है।

अनुप्रेक्षा का तात्पर्य है जो स्वाध्याय किया है, उसका अपने जीवन एवं व्यवहार के साथ जोड़कर चिन्तन करना। अनुप्रेक्षा से सत्य का साक्षात्कार होता है। संसार, शरीर एवं समस्त प्राप्त पदार्थों और सम्बन्धों की अनित्यता का बोध अनुप्रेक्षा से ही सम्भव होता है। इसी प्रकार संसार में कोई शरणभूत नहीं है, इसका भी परिज्ञान अनुप्रेक्षा से होता है। संसार में कोई साथ नहीं जाता, आत्मा अकेली ही गमन करती है। वह आत्मा ज्ञान-दर्शन युक्त है तथा शेष समस्त पदार्थ संयोग लक्षण वाले हैं। इस प्रकार अनुप्रेक्षा के माध्यम से सत्य तक पहुँचा जाता है एवं उसका अनुभव किया जाता है। अनित्य, अशरण आदि बारह भावनाओं का एवं मैत्री, प्रमोद, करुणा और माध्यस्थ, इन चार भावनाओं का स्वाध्याय कर लेने के पश्चात् भी सच्चाई का बोध तब तक नहीं होता जब तक व्यक्ति स्वयं उनकी अनुप्रेक्षा नहीं करता है। पुन: पुन: अनुप्रेक्षा करने के कारण इनका नाम भावना भी दिया गया है।

स्वाध्याय से ज्ञानावरण कर्म का तो क्षय होता ही है, किन्तु अन्य कर्मों का बन्ध भी शिथिल पड़ता है। इसकी पुष्टि अनुप्रेक्षा के सम्बन्ध में उपर्युक्त सूत्र से होती है। स्वाध्याय का प्रथम भेद वाचना है। वाचना से भी कर्मों की निर्जरा होती है। प्रतिपृच्छना से भी कांक्षा मोहनीय अर्थात् दर्शनमोहनीय कर्म का क्षय होता है। परिवर्तना नामक स्वाध्याय से व्यञ्जन लब्धि उत्पन्न होती है। इससे पठित शास्त्र हृदयंगम होते हैं।

अनुप्रेक्षा में विशिष्ट शक्ति होती है। यही कारण है कि आयु कर्म को छोड़कर ज्ञानावरण आदि सात कर्मों की सघन बन्धी हुई प्रकृतियाँ शिथिल बन्ध वाली हो जाती हैं। उनकी दीर्घकाल की स्थिति ह्रस्वकाल की हो जाती है। कर्मों की फलदान शक्ति भी तीव्र अनुभाव से मन्द अनुभाव वाली हो जाती है। सम्बद्ध कर्मों के बहुप्रदेश भी अल्प प्रदेश हो जाते हैं। इस प्रकार बन्ध के जो चार प्रकार हैं-प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध और प्रदेशबन्ध, इन सभी में अनुप्रेक्षा

नामक स्वाध्याय से कमी आती है और कर्मों का भार हल्का हो जाता है।

अनुप्रेक्षा का इतना ही लाभ नहीं है। इसके अन्य लाभों का भी कथन प्रस्तुत सूत्र में हुआ है। अनुप्रेक्षा स्वाध्याय से इतनी निर्मलता आ जाती है कि जीव कदाचित् आयु का बन्ध करता है और कदाचित् नहीं करता है। आयु का बन्ध न करे तो जीव क्षायिक समकिती होकर केवलज्ञान, केवलदर्शन प्राप्त कर मुक्ति का वरण करता है। यदि वह आयु कर्म का बन्धन करता है तो वह कुछ भवों में मुक्ति का साक्षात्कार करता है। वह असातावेदनीय कर्म का बार-बार उपचय नहीं करता है अर्थात् साता का ही सञ्चय करता है। वह अनादि एवं दीर्घकालीन संसार भ्रमण को सीमित कर शीघ्र ही आठ कर्मों से मुक्त हो जाता है। इस तरह से दु:खों से मुक्ति एवं आत्मगुणों की पूर्णता की निष्पत्ति अनुप्रेक्षा से सम्भव है। अनुप्रेक्षा के पश्चात् जो सत्य का अनुभव होता है, उसे दूसरों के लिए कथन करना धर्मकथा की श्रेणी में आता है।

इस प्रकार अनुप्रेक्षा स्वाध्याय के माध्यम से विभिन्न कर्मों की तीव्र निर्जरा करते हुए साध्य की सिद्धि हो सकती है।

निन्दा से होते अठारह पाप

श्री कस्तूरचन्द सी. बाफना

परनिन्दा एक ऐसा दुर्गुण है, जिसके माध्यम से अठारह पापों का बन्धन होता है। व्यक्ति बिना कारण परनिन्दा करता है। जिससे किसी प्रकार का लाभ नहीं होता, अपितु अनर्थदण्ड के पाप का भागी बन जाता है। निन्दा करने में व्यक्ति को बड़ा रस आता है। समय का दुरुपयोग, असम्मान का पात्र और कर्मबन्धन ये परनिन्दा के परिणाम हैं।

1. **प्राणातिपात**–निन्दा करने से सामने वाले का दिल दु:ख पाता है अत: हिंसा का पाप है।
2. **मृषावाद**–निन्दा में सच्चाई का क्या काम? अत: मृषावाद का पाप है।
3. **अदत्तादान**–सामने वाले के गुणों को अवगुण में बदलकर एवं छिपकर निन्दा की जाती है अत: अदत्तादान का पाप है।
4. **मैथुन**–निन्दा करना सदाचारी और भले आदमी का काम नहीं है।
5. **परिग्रह**–अर्थोपार्जन में निन्दा और झूठ का सहारा लिया जाता है।
6. **क्रोध**–निन्दा क्रोध के कारण भी होती है।
7. **मान**–अपने अहंकार को पालने के लिए भी तो सामने वाले की निन्दा की जाती है।
8. **माया**–कपट के बिना निन्दा नहीं होती है।
9. **लोभ**–अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लोभ में ही तो सामने वाले की निन्दा की जाती है।
10. **राग**–निन्दक व्यक्ति में सहज एवं स्वाभाविक प्रेम नहीं होता, अत: वह राग के पाप का भागी बनता है।
11. **द्वेष**–बिना द्वेष के निन्दा की ही नहीं जाती है।
12. **कलह**–एक को दो कहना यानी बात का बतंगड़ बनाने से कलह का पाप होता है।
13. **अभ्याख्यान**–निन्दा में सामने वाले पर झूठा दोषारोपण होता है।
14. **पैशुन्य**–निन्दा सामने वाले की चुगली ही तो होती है।
15. **परपरिवाद**–निन्दा का दूसरा नाम परपरिवाद है।
16. **रति-अरति**–रति के वश झूठी प्रशंसा और अरति के वश निन्दा होती है।
17. **मायामृषावाद**–निन्दा में माया सहित झूठ का ही सहारा लिया जाता है।
18. **मिथ्यादर्शनशल्य**–निन्दा एक ऐसा शल्य है जो भव-भव में दु:ख का कारण बनता है। मिथ्यात्वी मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता। वैसे ही निन्दक सन्मार्ग प्राप्त नहीं कर सकता।

10 अप्रैल 2023
जिनवाणी 12
ISSN 2249-2011

विचार-वारिधि

अमूल्य शिक्षासूत्र

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- बालक के संस्कार-निर्माण में पिता से अधिक कारण मातृजीवन का होता है।
- यदि ज्ञानी बनना है तो मोह-माया का पर्दा दूर करो। ज्ञान का प्रकाश बाहर नहीं, तुम्हारे ही भीतर है।
- बिना ज्ञान के क्रिया करते हुए प्राणी अन्धकार में घूमता है, वह सत्य प्राप्त नहीं कर पाता।
- विद्या से विनय के बदले अविनय बढ़ता हो तो समझना चाहिए कि यह सद्विद्या नहीं है।
- ज्ञानी अपनी करणी को भौतिक पदार्थों के बदले नहीं गँवाता।
- जो निमित्त पाकर पुरुषार्थ करता है, वह अवश्य ही आत्मा का उत्थान कर लेता है। सद्गुरु का निमित्त पाकर भी जो पुरुषार्थ नहीं करता वह ज्ञान-लाभ नहीं कर सकता।
- धर्म-साधना के लिए धन की आवश्यकता नहीं है। इसकी साधना इतनी सस्ती, सरल एवं सुलभ है कि अमीर-गरीब सब कोई इसका लाभ उठा सकते हैं।
- धन की भूख धन से नहीं मिटती, वह सन्तोष से मिटती है।
- देश के नागरिकों को सामूहिक बल से हिंसा का विरोध करना चाहिए।
- अहिंसा, सत्य एवं सदाचार का त्रिगुण मन्त्र धारण कर देश को संकट से बचा लेना चाहिए।
- जीवन की गाड़ी में धन का पेट्रोल ही भरते जाओगे और उसमें व्रत का जल नहीं होगा तो यात्रा खतरे से खाली नहीं होगी।
- मन बदल जाता है तो जीवन बदलते देर नहीं लगती।
- धर्म के प्रचार में भी आचार का बल चाहिए।
- पाप घटाने के लिए आवश्यकता पर नियन्त्रण आवश्यक है।
- जल जीवन है, गृहस्थ को उसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।
- परिग्रह की पूजा में लोग गुणों का सम्मान भूल जाते हैं।
- श्रावक का कर्त्तव्य है कि वह धन-सम्पदा का साधन के रूप में उपयोग करे। उसको साध्य समझकर चलेगा तो वह बाधक बनकर उसे मूल साध्य से वञ्चित कर देगी।
- स्त्री एवं शूद्र को धर्म का अधिकारी नहीं मानना भ्रान्तिपूर्ण है।
- आयु से आठ का हो या साठ का, धर्म का मापदण्ड विवेक है।
- चार बातों में लक्ष्य आवश्यक है-तप, संयम, क्षमा और ब्रह्मचर्य।
- आचार वह है जो जीवन को पवित्र बनाये।
- वर्तमान में अध्यात्म-शिक्षा की महती आवश्यकता है।
- जो आत्मा को शुद्ध-बुद्ध बनाने में सहायक हो, वह साधना चाहे विचार-सम्बन्धी हो या आचार सम्बन्धी, वह धर्म है। इसके विपरीत जो क्रिया जीवन की अशुद्धि बढ़ाये, आत्मा को स्वभाव से दूर करे, वह सब अधर्म है।
- श्रमण और श्रावक शुद्ध मन से ज्ञान-क्रिया की साधना करे तो आत्मकल्याण हो सकता है।
- माँ ने मनुष्य को मानव रूप से उत्पन्न किया। उसको देवत्व छोड़ दानव-भाव में नहीं जाना चाहिए।

-'अमृत्-वाक्' पुस्तक से गृहीत

ISSN 2249-2011

प्रवचन

आत्मविकास में बाधक हैं कनक और कामिनी

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा जयपुर में प्रदत्त प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोककुमारजी जैन 'हरसाना', जयपुर द्वारा किया गया है। सम्पादन में सह सम्पादक श्री त्रिलोकचन्दजी जैन, जयपुर का सहकार रहा है।

-सम्पादक

संसार के मोह और ममता के बन्धन को काटकर वीतरागता और सर्वज्ञता प्राप्त करने वाले अनन्त ज्ञान के सागर तीर्थंकर भगवन्त तथा ढाई हजार वर्ष से अधिक लम्बा काल बीत जाने के बाद भी आज तक धर्म-तीर्थ को कायम रखने वाले, स्वयं तिरने और दूसरों को तिरने का मार्ग बताने वाले पंच परमेष्ठी भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थंकर भगवान की आदेय अनुपम अन्तिम वाणी उत्तराध्ययनसूत्र इसके आठवें अध्याय के माध्यम से विषय और कषाय से ऊपर उठकर आत्म-जागरणा में तल्लीन होने वाले कपिल केवली का आख्यान कर रही है। कपिल केवली का प्रसंग संसार के प्राणियों को सन्देश देते हुए आत्म-कल्याण में कञ्चन और कामिनी रूप दो बाधक तत्त्वों का कथन कर रहा है। शास्त्र स्थानाङ्गसूत्र भी कह रहा है कि दो कारणों से जीव पावन पवित्र भगवान के वचनों को श्रवण भी नहीं कर सकता है, वे हैं-**आरंभे चेव परिग्गहे चेव।**

आरम्भ और परिग्रह में रक्त और संसक्त मानव केवली भगवन्तों के द्वारा कही गयी वीतराग वाणी को सुन भी नहीं सकता। परिग्रह के दो भेद किये गये हैं-1. स्त्री परिग्रह और 2. बाहरी भंड परिग्रह। ये दो परिग्रह ही कामिनी और कंचन के रूप में जग में प्रसिद्ध हैं। इनके वशीभूत मानव अपने वास्तविक स्वरूप का बोध नहीं कर पाता है। नीति में कहा है-

एक कनक अरु कामिनी, दोऊ अगणि की झाल।
देखे ही तन प्रजलै, परस्याँ ह्वै पैमाल।।

अर्थात् एक तो सोना और दूसरी कामुक स्त्री, ये दोनों ही अग्नि की ज्वालाओं के समान हैं, लपटें हैं, इनको देखते ही देह जलने लगती है और सम्पर्क में आने पर तो व्यक्ति बेभान हो जाता है अर्थात् किसी काम का नहीं रहता। संसार में जर और जोरू के कारण हुए झगड़ों से न्यायालयों में प्रतिदिन पेशियाँ होती ही हैं। इन दो तुच्छ चीजों के लिए इस अमूल्य मानव जीवन को व्यक्ति खोता जा रहा है। इस मानव जीवन की सार्थकता इन विषय-वासना के जंजालों में उलझने में नहीं है। लेकिन अनादिकाल के कुसंस्कार इस मानव को कनक और कामिनी के चक्कर में डाले रखते हैं। इस कारण व्यक्ति इस अमूल्य मानव भव को भी हार जाता है। कहा भी है-**आए थे हरि भजन को, ओटन लगे कपास** अर्थात् किसी महत्त्वपूर्ण कार्य का लक्ष्य बना कर आये थे, लेकिन कनक और कामिनी में आसक्त बनकर तुच्छ कार्यों को करने में लगे हुए हैं। आरम्भ और परिग्रह कहें अथवा कनक और कामिनी कहें, ये ऐसे बाधक तत्त्व हैं जिनके कारण जीव अपने जीवन को सफल बनाने की आराधना नहीं कर सकता। कदाचित् आराधना के मार्ग में लग भी जाये तो इन कारणों से आराधना में भी विराधना कर लेता है। इन दो बाधक कारणों के विषय में गुरुदेव फरमाते थे कि जीर्ण-शीर्ण आहार और वस्त्रों से जीवन चलाने वाला साधक भी इन कनक-कामिनी के पाश में आबद्ध होकर साधना से पतित हो जाता है।

अनेक चक्रवर्तियों, राजकुमारों को संयम-जीवन स्वीकार करने के बाद उदरपूर्ति के लिए घर-घर जाकर भिक्षा की याचना करनी होती है, जो कि सहज और सरल काम नहीं है। माँगने को मरण समान कहा है। कई

लोग माँगने की अपेक्षा मर जाना उचित समझते हैं। इसलिये भिक्षाचरी करना और उसमें भी नीरस आहार ग्रहण करना बहुत मुश्किल कार्य है। भिक्षा से गुजारा करने की अपेक्षा भी भिक्षाचर्या के द्वारा नीरस आहार लाकर गुजारा करना अधिक कठिन बताया जा रहा है। शास्त्रकारों ने तो यहाँ तक कहा कि श्वान भी जिस नीरस आहार को ग्रहण नहीं करते हैं, वैसा आहार ग्रहण करने वाले भी साधक हुए हैं। एक वस्त्र और एक पात्र रखकर चलने वाले साधक थे और आज भी हैं। ऐसे साधक देखे जा सकते हैं जो सारे पदार्थों को एक पात्र में ही ग्रहण कर चलते हैं। एक ही पात्र में रोटी और पानी भी उसी पात्र में, यहाँ तक कि छाछ और दूध जैसे विजातीय पदार्थ भी उसी पात्र में ग्रहण करते हैं। मासखमण के पारणे में एक बार ही आहार-पानी ग्रहण करके पुनः मासखमण करने वाले भी साधक हैं। दूसरी तरफ घर-गृहस्थी में रहने वाले सेठ साहब को सामायिक करने पर आसन भी गद्दीदार चाहिए, गद्दी पर सफेद कपड़ा चाहिए, पूँजनी भी घूघरा वाली और मुँहपत्ती भी गोटा वाली चाहिए। सामायिक में जहाँ सेठ की सेठाई नहीं छूट रही है, वहाँ भूमि ही जिनकी शय्या है, ऐसे साधक भी साधना कर रहे हैं। पर याद रखना कि सेठ तो कोमल शय्या पर करवटें बदल रहा है, नींद नहीं आ रही है और मन में समाधि वाला साधक निश्चिन्त होकर विश्राम कर रहा है। क्योंकि सेठ को रातदिन यही चिन्ता है कि फलाना को माल भेजना है, फलाने का भुगतान करना है, फलाना काम बाकी है। दिन में व्यापार करने में व्यस्त है तो रात को दूसरे दिन के कार्यों की चिन्ता है।

साधक की बात चल रही है, जीर्ण-शीर्ण वस्त्र वाले, नीरस आहार करने वाले, परीषहों के प्रसंग पर समता रखने वाले भी प्रतिकूल निमित्तों के आगमन पर ब्रह्मचर्य के पालन में कमजोर पड़ जाते हैं। रथनेमि जैसे तपस्वी साधक भी ब्रह्मचर्य के पालन से डिगकर अब्रह्म के कीचड़ में गिरने लग जाते हैं। उत्कृष्ट तपस्वी को भी जब ब्रह्मचर्य का पालन कठिन कहा है तब सामान्य व्यक्तियों की क्या कहें। टेलिवीजन देख रहे हैं, हँसी-मजाक कर रहे हैं, रसीले पदार्थों का सेवन कर रहे हैं, ऐसे में भला ब्रह्मचर्य कैसे पाला जा सकेगा? रूखा-सूखा नीरस आहार करने वालों के लिए भी जब ब्रह्मचर्य का पालन कठिन है तो रसयुक्त आहार करने वालों के लिए तो दुष्कर है ही। प्रभु महावीर कहते हैं कि अहिंसा आदि चार व्रतों की पालना कठोर है, लेकिन ब्रह्मचर्य व्रत की पालना तो कठोरतम है। अच्छे-अच्छे लोग बहक जाते हैं, नियम भंग कर देते हैं, ग्रहण की हुई प्रतिज्ञाओं को ताक पर रख देते हैं और जब उन्हें होश आता है तब पश्चात्ताप करते हैं। सन्तों के चरणों में आकर निवेदन करते हैं कि मुझसे अमुक दोष का सेवन हो गया है, इसका प्रायश्चित्त प्रदान करें। कहने का तात्पर्य यही है कि ब्रह्मचर्य की पालना जितनी कठिन है, उतनी ही इसकी महिमा भी है। ब्रह्मचर्य में धरती के स्वभाव को बदलने तक की ताकत है। इसके प्रभाव से सर्प भी फूल की माला बन जाता है, शूली का भी सिंहासन बन जाता है और कच्चे धागे की रस्सी बनाकर अनेक छिद्रों वाली चालनी में भी पानी भरकर निकाला जा सकता है। जब इसका मन, वचन और काया से पालन किया जाता है तो अपनी पत्नी का आगार रखकर चलने वाला व्यक्ति भी श्रमणोपासक साधक कहलाता है। नारी भी जब पर-पुरुष को सपने में भी याद नहीं करती है तब उसके शील का प्रभाव देव-देवेन्द्रों के आसन को भी चलायमान कर देता है। ऐसी नारी पतिव्रता होती है और उसकी गणना सतियों में होती है। ब्रह्मचर्य व्यक्ति को पूज्य बना देता है।

नारी यदि शील का गहना पहने हुए है तो उसे स्वर्ण-रजत के गहने पहनने की कोई जरूरत नहीं है। ब्रह्मचारी पुरुष अप्सरा जैसी नारियों के आमन्त्रण पर भी उनमें माता के स्वरूप की कल्पना करके उनके समक्ष हाथ जोड़ लेते हैं। जिन्होंने शील का प्राणप्रण से पालन किया, वे आज भी गाये जा रहे हैं और जिन्होंने शील को ताक पर रख दिया वे आज भी धिक्कारे जा रहे हैं। प्रत्येक विजयादशमी के दिन छोटे-छोटे बच्चे सीता का हरण करने वाले रावण को जलाने जाते हैं। यह आपको

पता ही है कि वे बच्चे रावण को नहीं, दुराचार को जलाने जाते हैं, क्योंकि दुराचार को नरकगमन वाला कहा है। दुराचार की उत्पत्ति सबसे पहले मन में होती है, वचन और काया में तो यह बाद में आता है। इसलिए मन को वश में रखना बहुत जरूरी है। मन पर नियन्त्रण होने पर दुराचार का संकल्प ही नहीं होगा, क्रियान्विति की तो बात बहुत दूर की होगी। मन में पराई नारी माता के समान लगे, लघुवय वाली नारियाँ बेटी या बहन के समान लगे, वस्त्रहीन होकर भी कोई आ जाये तब भी शील से विचलित होने का प्रसंग नहीं बने, ऐसी मानसिक दृढ़ता से ही शील का पालन सम्भव हो सकता है।

मालवदेश के सुदर्शनपुर नगर में राजा मणिरथ राज्य करता था। उसका छोटा भाई युगबाहु था, जिसे मणिरथ ने युवराज बना दिया था। एक राजा था और दूसरा युवराज था। दोनों भाइयों में घनिष्ठ प्रेम था। सारी प्रजा भी उनके आपस के प्रेम को देखकर आश्चर्यचकित थी। कहावत भी है-**भाई सरीखा प्रेम नहीं।** भाइयों का प्रेम देखना है तो युधिष्ठिर आदि पाण्डवों का देख सकते हैं, मर्यादा पुरुषोत्तम राम और भरत का प्रेम भी जग-प्रसिद्ध है। वर्तमान में भी ऐसे भाई हैं जो पिता के वचनानुसार सारी सम्पत्ति अपने छोटे भाई के नाम कर देते हैं और छोटे भाई के यहाँ मुनीम बनकर रह जाते हैं। भाइयों में प्रेम तब तक रहता है जब तक इनके बीच में कनक और कामिनी नहीं आती है। आप जानते हैं, आप देख भी रहे हैं कि भाइयों के आपस के मुकदमे प्राय: कनक और कामिनी के कारण ही हैं। आपसी प्रेम के बीच झगड़ा कराने वाले ये दो दुश्मन हैं। धन के कारण रिश्तों को आग लगा देने वाले आज आपको मिल सकते हैं। बचपन में जो भाई जान से प्यारा होता है, जवानी में कनक और कामिनी के चक्कर में उसकी जान का प्यासा हो जाता है। ऐसा भी प्रसंग सुना है कि छोटा भाई विपन्न परिस्थिति के मद्देनज़र भोजाईजी से दो मुट्ठी आटा माँग लाया। घर लाकर रोटियाँ बना रहा था। बड़े भाई को जब पता लगा तो पहले अपनी पत्नी को खूब डाँटा और फिर गुस्से से छोटे भाई के घर गया। वहाँ तवे तथा चकले पर रखी हुई रोटियों को उठाकर कुत्ते को डाल देता है, पर छोटे भाई को खाने नहीं देता। ऐसे निकृष्ट भाई भी हैं तो ऐसे भी भाई हैं जिन्होंने अपने भाई के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। मणिरथ भी अपने छोटे भाई युगबाहु से अथाह प्रेम करने वाला था। एक दिन मणिरथ राजा महल पर चढ़कर प्रकृति के सौन्दर्य को निहार रहा था, अचानक उसकी नज़र स्नान करती हुई अपने छोटे भाई की पत्नी मदनरेखा पर पड़ी। मदनरेखा के रूप-सौन्दर्य ने उसके मन में विकार की ज्वाला प्रज्वलित कर दी। वह रातदिन मदनरेखा को प्राप्त करने का दुश्चिन्तन करने लगा। मदनरेखा के पीछे पागल बन मणिरथ जिस युगबाहु भाई के लिए जान देने को तैयार था, वह उसी की जान का प्यासा बन गया। संसार में भाइयों के बीच होने वाले विग्रह में कारण पैसा या पत्नी, कनक या कामिनी, नकद या नारी ही है।

उन्हीं दिनों पड़ोसी राजा ने सुदर्शनपुर की सीमा पर युद्ध का नगाड़ा बजा दिया। युवराज युगबाहु मणिरथ राजा के समक्ष उपस्थित हुआ और कहने लगा कि भैया! मेरे होते हुए आपको युद्ध में जाने की आवश्यकता नहीं है। मैं दुश्मन को पराजित कर विजयश्री के साथ लौटूँगा। मणिरथ तो चाहता भी यही था कि युगबाहु युद्ध में जाये और काल को प्राप्त हो जाये, जिससे कि मैं मदनरेखा को प्राप्त कर सकूँ। उसने युगबाहु को युद्ध में भेज दिया। उसे विश्वास था कि युगबाहु युद्ध से वापस जीवित नहीं लौट पायेगा। जब युगबाहु युद्ध करने गया हुआ था तब मणिरथ ने मदनरेखा को लुभाने के लिए कई कीमती उपहार भेजे। बाद में दासी के साथ सन्देशा भिजवाया कि राजा मणिरथ मदनरेखा के रूप-सौन्दर्य के दर्शन के अभिलाषी हैं और वे उन्हें देखना चाहते हैं। मदनरेखा बुद्धिमती थी, उसने सोचा कि जरूर दाल में कुछ काला है। थोड़े दिनों बाद पुन: दासी यही सन्देशा लाई तो मदनरेखा ने उसे बुरी तरह दुत्कार कर निकाल दिया। मदनरेखा सती थी, पर-पुरुष की वाञ्छा उसके मन में किञ्चित् भी नहीं थी। सती के शील को तोड़ने की बात सोचना जलती आग में हाथ डालने के समान है, शेर की

मूँछ के बाल को उखाड़ने के समान मौत को बुलाना है। सर्प भी जिस तरह अपने जीवित रहते मणि नहीं छोड़ता है, उसी तरह शीलवती नारी भी अपने जीवित रहते शील को नहीं छोड़ती है। मणिरथ ने मदनरेखा को रिझाने के अनेक असफल प्रयास किये।

इसी बीच पुण्यवाणी के प्रबल उदय से युद्ध में विजयश्री को प्राप्त करके युगबाहु लौटा। मदनरेखा ने विचार किया कि यदि मैं अपने साथ घटी सारी घटना इन्हें कहूँगी तो ये मेरी बात पर विश्वास नहीं करेंगे, क्योंकि इन दोनों भाइयों में तो गहरा प्रेम है। इसलिए मदनरेखा ने संक्षेप में ही अपने पति को कहा कि पतिदेव! आपको अपने बड़े भाई से सावधान रहने की जरूरत है। युगबाहु यह सुनकर तिलमिला गया और कहने लगा–''तुम ऐसी अप्रत्याशित बात क्यों कह रही हो? मेरा भाई तो मेरा रक्षक है, मेरी ढाल है। मेरा भाई भला मेरे लिए शस्त्र कैसे बन सकता है? मेरा भाई भला मेरा बिगाड़ क्यों करेगा? तुम्हारे मन में कोई वहम हुआ है। तुम आश्वस्त रहो, उस भाई से मुझे और तुम्हें कोई खतरा नहीं है।'' इस प्रकार के विश्वास भरे वचनों के द्वारा उसने मदनरेखा को चुप कर दिया।

इधर मणिरथ के मन में उधेड़बुन चालू थी। वह कामासक्त बना अपने ही छोटे भाई की हत्या करने का निर्णय कर लेता है। वह इस दुष्कृत्य के विचार से रात्रि में विष लिपटी तलवार लेकर अपने भाई से मिलने जाता है। जब मणिरथ की पत्नी और पहरेदारों ने उसे रोका तो उन्हें कहा कि मेरा भाई विजय प्राप्त करके आया है, इसलिए उससे मिलने जा रहा हूँ। उसने युगबाहु को बगीचे में बुलवाया। मदनरेखा ने शंकित होकर रात्रि में जाने से युगबाहु को रोकना चाहा और कहा कि आपको भाई से खतरा है, परन्तु युगबाहु अपने भाई पर पूर्ण विश्वास करने वाला था। युगबाहु बगीचे में पहुँच गया। मणिरथ अपने भाई युगबाहु के नजदीक पहुँचा और उसे गले मिलकर उसे विजयश्री की बधाइयाँ और आशीर्वाद देने लगा। युगबाहु जब मिलने और वार्ता करने के बाद पीछे हटकर जाने लगा तब मणिरथ ने उसकी गर्दन पर तलवार का वार कर किया। युगबाहु की गर्दन कट गई और वह तड़पने लगा। युगबाहु की गर्दन काटकर मणिरथ अपने महल में लौट गया। उधर मदनरेखा बहुत देर होने के कारण बगीचे में पहुँची तो अपने पति की मरणासन्न स्थिति देखकर द्रवित हो गई। ऐसी विकट स्थिति में भी मदनरेखा ने धैर्य नहीं खोया। उसने अपने पति युगबाहु को अन्तिम समय में जो सहयोग दिया, वह श्रेष्ठ धर्मपत्नी ही दे सकती है। धर्मपत्नी कैसी होती है? धर्मपत्नी अपने सुख के लिए कभी पति को छोड़कर पीहर जाने वाली नहीं होती, अपितु अपने सुख से अधिक पति के सुख को महत्त्व देती है। आजकल की पत्नियों के बहुरूप हो सकते हैं, लेकिन धर्मपत्नी तो संकट के समय अपने दुःख को भूलकर भी अपने पति को सहयोग देने वाली होती हैं।

सती मदनरेखा ने इस विकट स्थिति में पति-वियोग के अपने दुःख को भूलकर धैर्य रखा। युगबाहु मणिरथ के प्रति क्रोधित था, वह क्रोधवश बोलता है–''सती! तुमने मुझे पूर्व में ही मेरे दुष्ट भाई से सावधान रहने को कहा था, परन्तु मैंने तुम्हारी बात नहीं मानी। लेकिन अब मेरे जाने के बाद मेरा यह नीच भाई तुम्हारा शीलहरण करने का प्रयास करेगा। इससे तुम बचकर रहना। मैंने उस पर भरोसा करके अच्छा नहीं किया। धिक्कार है ऐसे भाई को जिसने मेरे साथ विश्वासघात किया।'' सती मदनरेखा विचार करती है कि जीवन के अन्तिम समय में मुझे मित्र और मणिरथ को शत्रु समझने वाले मेरे पति की मति के कारण इनकी गति बिगड़ जाएगी। अन्तिम समय में रही मति ही भविष्य की गति की निर्णायक है। वह मदनरेखा अपने पति की गति सुधारने के लिए पतिदेव को कहती है–''पतिदेव! आपका दुश्मन आपका भाई नहीं है आपकी दुश्मन तो मैं हूँ, मेरा रूप आपका दुश्मन है। आपका भाई मेरे रूप को देखकर आपका दुश्मन बना। जब तक मेरा रूप उन्हें दिखाई नहीं दिया तब तक वे आप पर जान देते थे। जब

उन्होंने मेरा रूप देखा तब से ही तो वे आपके दुश्मन बने। इसलिए भाई दुश्मन नहीं है, मेरा रूप ही आपका दुश्मन है। आपको मारने वाला मेरा रूप है। काँच के सामने लाल मिर्च रखो तो लाल दिखाई देगी। वस्तुतः काँच लाल नहीं होता बल्कि उसके सामने जैसा रंग रख देते हैं वैसा ही रंग उसमें दिखाई देता है। मणिरथ तो आपका मित्र है, रखवाला है। आप बगीचे में जाते समय कह गए थे कि खतरा भाई से नहीं है। इसलिए मारने वाला भाई नहीं है, बल्कि मारने वाला मेरा रूप है।'' मदनरेखा ने सर्वप्रथम युगबाहु के मन से मणिरथ के प्रति रहा द्वेष और स्वयं के प्रति रहे राग को निकालने का उपदेश दिया। युगबाहु की मलिन दृष्टि को एक मोड़ प्रदान किया।

युगबाहु का मन शान्त बन चुका था, उसके मन से राग-द्वेष के कलुषित भाव निकल रहे थे। तब सती मदनरेखा ने अन्तिम सम्यक् बोध देते हुए कहा- ''पतिदेव! आप तो जिनेन्द्र भगवान की वाणी पर विश्वास करने वाले हैं। भगवान की वाणी के अनुसार न तो आपका भाई आपका दुश्मन है और न ही मेरा रूप आपका शत्रु है। आपका शत्रु तो आपके द्वारा ही किये हुए कर्म हैं। इस सम्बन्ध में आप अपने चिन्तन को बदलिए। निमित्त को दोष देना निरर्थक और कर्मबन्ध का कारण है, दोष तो स्वयं के उपादान का है। आप इस समय अरिहन्त भगवान की शरण लीजिए और नमस्कार मन्त्र का स्मरण करके विभाव से हटकर समता भाव को अपनाइए। यह समता भाव ही आपका साथी है। पत्नी का काम है कि जब पति परदेश जाये तब उसके साथ भाता बाँधना। आप भी परलोक रूपी परदेश जा रहे हैं अत: यह समता भाव का भाता बाँध रही हूँ। समाधिभाव से भगवान का चिन्तन करते-करते अपनी देह को त्यागना है।''

पति को बुखार आ जाए तो आजकल पत्नी परेशान हो जाती है। स्वयं के कोई तकलीफ हो जाये तो सारा घर आसमान पर उठा लेती है। वह स्वयं परेशान होती है और दूसरों को भी परेशान करती है। वह स्वयं रोती है और दूसरों को रुलाती है। घर में आये दिन आर्त्त-रौद्र कराने वाली कर्मपत्नी हो सकती है, धर्मपत्नी नहीं। धर्म से जोड़ने वाली पत्नियाँ ही भाग्यशाली होती हैं। वे पति के नरक के बन्धनों को काटकर स्वर्ग की ओर प्रयाण कराने वाली होती हैं। सती मदनरेखा ने पति को तारने में कोई कसर नहीं छोड़ी और भाई मणिरथ ने भाई को मारने में कोई कसर नहीं छोड़ी। मदनरेखा जानती थी कि जीव की अन्तिम समय में जैसी मति होती है वैसी ही उसकी परभव में गति होती है। जिस लेश्या में रहते हुए जीव का मरण होता है, उसी के अनुरूप उसे गति प्राप्त होती है। धर्मपत्नी मदनरेखा ने अपना दुःख भूला दिया और पतिव्रत धर्म का पालन करके पति को सच्चा पाथेय प्रदान किया। सती मदनरेखा का जीवन आज की पत्नियों को भी शिक्षा प्रदान करता है।

बात इतनी ही कहनी है कि धन के कारण भाई से हुआ झगड़ा भाई के हाथों से रोटी छीनकर कुत्ते को डलवा देता है और मदनरेखा के रूप में कामुक बना मणिरथ अपने भाई युगबाहु का हत्यारा तक बन जाता है। ये कनक और कामिनी आदर्श व्यावहारिक जीवन में बाधक हैं, साथ ही साधक की साधना में भी बाधक हैं। वे भाग्यशाली हैं जो इन बाधाओं को पार करके मानव-जीवन को सफल बनाकर मोक्ष की ओर ले जाने वाले हैं। जो इन बाधाओं को पार करेगा, वही तिरेगा।

विनम्र निवेदन

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के बैंक खाते में एवं जिनवाणी के खाते में राशि जमा कराने के पश्चात् राशि जमा की शिल्प, स्क्रीन शॉट एवं अपना पूरा नाम, पता, पेन कार्ड नम्बर तथा मोबाइल नम्बर की सूचना मण्डल के मन्त्री को या व्हाट्स एप्प नं. 9314635755 पर प्रेषित करने की कृपा करें, जिससे समय पर रसीद प्रेषित की जा सके।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री

10 अप्रेल 2023
जिनवाणी 18
ISSN 2249-2011

प्रवचन

अहंकार पुण्यफल का नाशक

भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

भावी आचार्य, महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा 02 सितम्बर, 2021 को पीपाड़सिटी में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

बन्धुओं!

प्रात:काल आचाराङ्गसूत्र का स्वाध्याय चल रहा था, आगम पाठों की एक-एक गाथा या सूत्र का मनन करना आवश्यक है। प्रत्येक गाथा और सूत्र में जीवन-निर्माण का, आत्म-उत्थान का अनमोल सन्देश रहा हुआ है। तीर्थंकर भगवन्तों का हम पर अनन्त उपकार है कि इस पंचम काल में भी जिनागम के माध्यम से हमें सम्यक् दिशा प्राप्त हो रही है।

इस आचाराङ्गसूत्र के द्वितीय अध्ययन के द्वितीय उद्देशक में एक अनमोल सूत्र भगवान महावीर ने फरमाया है-**से असइं उच्चागोए, असइं णीयागोए, णो हीणे, णो अइरित्ते, णो पीहए**। अर्थात् हे जीव! तू अनन्त बार, अनेक बार नाना जाति-कुल-योनि रूप गतियों में जन्म-मरण कर परिभ्रमण कर चुका है। इसलिये ऊँच-नीच जाति, रूप-वैभव का गर्व मत कर और इसके अभाव में अपने मन को संत्रस्त भी मत कर। अच्छा-बुरा रूप मिलना, धन-सम्पत्ति की उपलब्धि होना या नहीं होना, ये सब न तो प्रसन्नता के कारण हैं और न ही पश्चात्ताप के कारण हैं।

आज हमें जो कुछ भी प्राप्त है-वह सब हमारे पूर्वकृत पुरुषार्थ और शुभाशुभ कर्मों के परिणामस्वरूप है। फिर उसका अहंकार क्यों? कइयों को अपने ज्ञान के प्रति अहंकार होता है, किसी को अपने शरीर का अहंकार होता है, लेकिन भगवान फरमाते हैं-**इमं सरीरं अणिच्चं** अर्थात् यह शरीर, रूप-सौन्दर्य सब कुछ अनित्य है। आज जैसा है वैसा कल रहेगा या नहीं, इसका कोई भरोसा नहीं है। एक रोग लग गया तो सब सौन्दर्य समाप्त हो जायेगा, फिर हम किस अहकंार में जी रहे हैं। एक बात अवश्य ध्यान रखना, आज हमने प्राप्त सामग्री का अहंकार कर लिया तो भविष्य में वह सामग्री मिलना मुश्किल हो जायेगा। भगवान महावीर का प्रसङ्ग आपने सुना है कि भगवान ने मरीचि के भव में अपनी जाति-कुल का मद कर लिया कि मेरी दादी मरुदेवी इस काल में मोक्ष के द्वार खोलने वाली है, मेरे दादा इस चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर हैं, मेरे पिता भरत इस भरत क्षेत्र के प्रथम चक्रवर्ती हैं। इस प्रकार अपनी जाति, कुल के अहंकार से नीच गोत्र का बन्ध कर लिया और इस कारण उनको भगवान महावीर के भव में, जिस भव में वह तीर्थंकर बनने वाले हैं, उसी भव में मुक्त होने वाले हैं, उस भव में भी देवानन्दा ब्राह्मणी की कुक्षि में 82 रात्रि तक रहना पड़ा।

इसलिये अहंकार चाहे रूप-सौन्दर्य का हो, जाति-कुल का हो या धन-सम्पदा का हो; वह हमारे पुण्यफल को नष्ट करने वाला है। वह हमारे इहभव में और परभव में कदापि हितावह नहीं हो सकता।

मानलो आपका एक पुत्र मन्त्री बन जाये, फिर आप अपना परिचय भी उसके माध्यम से ही देते हो। आपके परिवार का कोई सदस्य दीक्षा अंगीकार कर ले, तो फिर दूर-दूर के रिश्तेदार भी नजदीक के बन जाते हैं। लोग इस माध्यम से भी अपना अहं पुष्ट कर लेते हैं। सब अपना-अपना परिचय रखेंगे, ये मेरे परिवार के सन्त हैं, इनसे मेरा ये सांसारिक रिश्ता है, ये मेरी बुआ का बेटा है, ये मेरी मौसी-मामा का बेटा है। न जाने दीक्षित सन्त का कितने-कितने नाम से परिचय करायेंगे। लेकिन यह भी

अहंकार करने का कारण नहीं है। उस जीव ने स्वयं पुरुषार्थ कर संयम-मार्ग पर अपने चरण बढ़ाये, तो वह पुरुषार्थ उसके काम आयेगा और अपना पुरुषार्थ अपने काम आयेगा। रिश्तेदारी बताने से कर्म नहीं कटेंगे, कर्म तो पुरुषार्थ करने से, संयम में चरण बढ़ाने से समाप्त होंगे।

आपने और हमने अनन्त भव कर लिये हैं, पर उन भवों की गिनती नहीं है। आप और हम क्या तीर्थंकर भगवान का जीव भी पूर्व में अनन्त भव कर चुका होता है। फिर भवों की गिनती कैसे करना? भवों की गिनती होती है, सम्यक्त्व आने के बाद से सम्यक्त्व प्राप्ति के बाद सभी तीर्थंकरों की भी पृथक्-पृथक् भवों की गणना है। यह गणना समकित प्राप्ति पर आधारित है। इसका एक दोहा प्रचलित है-

भव सत्ताईस वीर के, ऋषभ तेरह, शंत बार।
नौ नेम, दश पार्श्व के, शेष तीन भव पार।।

प्रभु महावीर के 27 भव, ऋषभदेव प्रभु के तेरह भव, शान्तिनाथ भगवान के बारह, अरिष्टनेमि भगवान के 9, पार्श्वप्रभु के दस और शेष रहे 19 तीर्थंकरों के तीन-तीन भव हुए हैं। इन भवों की गणना सम्यक्त्व प्राप्ति से ही मानी गयी है।

हमें आज चिन्तन करना होगा, हमने कषायों के कारण से अनन्त काल अनन्त भव संसार परिभ्रमण करते हुए व्यतीत कर दिया, लेकिन अब हमें सम्यक्त्व को स्थिर करके, आत्म-उत्थान का मार्ग प्रशस्त करना है। इस भव की उम्र के भी हमने अनेक वर्ष प्रमाद और अज्ञान में व्यतीत कर दिये हैं, फिर भी कई लोग कहते हैं-मेरी उम्र इतने साल की हो गई है, मेरा अमुकवाँ जन्मदिवस है। अरे भाई! कभी यह विचार नहीं आया कि मेरी आयु का एक साल कम हो गया। मुझे अब सम्यक् पुरुषार्थ करने का एक साल और कम मिलेगा। अब जागने की आवश्यकता है-'बहु बीती थोड़ी रही, अब तो सूरत सम्भाल' थोड़े से काल का यह नश्वर जीवन है। जो समय जा चुका है, वह तो वापस आने वाला नहीं है। इस संसार में किसके पास ताकत है, जो गये हुए समय को वापस ला सके? कोई मेहमान रूठ जाये तो मनुहार करने पर, जी हजूरी करने पर वापस लौट सकते हैं, लेकिन यह जीवन का समय निकलने के बाद वापस आना कदापि सम्भव नहीं है।

एक वृद्ध श्राविका थी, उसकी वृद्धावस्था चरम पर थी, लेकिन उसे अपनी निश्चित आयु का ध्यान नहीं था। पुराने लोग आयु का ध्यान भी नहीं रखते थे और पूछने पर निश्चित आयु बताते भी नहीं थे। हाँ, तो वह श्राविका एक बार दर्शनार्थ उपस्थित हुई और कहने लगी-''म.सा. मैंने रत्नसंघ के तीन-तीन आचार्यों के दर्शन किये हुए हैं, मैंने बचपन में आचार्य श्री शोभाचन्दजी म.सा. के दर्शन किये तथा आचार्य श्री हस्तीमल्लजी म.सा. की खूब सेवा-भक्ति की है और वर्तमान में संघनायक आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सेवा-सान्निध्य का लाभ मुझे प्राप्त हो रहा है। ऐसे दुर्लभ ही पुण्यवान जीव होते हैं जो अपने जीवनकाल में अनेक आचार्यों की पट्ट परम्परा को देख पाते हैं। उस बाईजी से पूछा-''आप कितने साल की है? आपकी उम्र कितने वर्ष की है?'' बहन बोली-''उम्र को क्या बताना? बतायेंगे तो तब, जब मृत्यु का पता चल जायेगा। नीतिकारों ने एक श्लोक फरमाया-

आयुर्वित्तं गृहछिद्रं, मंत्रमैथुनभैषजम्।
तपो दानापमानं च नव, गोप्यानि यत्नतः।।

इस श्लोक के माध्यम से नीतिकारों ने नौ बातों को गोपनीय रखने का कहा है। जिसमें सर्वप्रथम आयु को रखा है, तत्पश्चात् वित्त (धन), गृहछिद्र, मन्त्र, मैथुन, भैषज, तप, दान और अपमान के लिए कहा है। इनको किसी के सामने प्रकट नहीं करना चाहिए।

हाँ, नीतिकारों ने इस श्लोक में उम्र नहीं बताने का कथन किया है, लेकिन आज तो प्रायः हर व्यक्ति बर्थ-डे मनाता है। न जाने इस विदेशी संस्कृति को अपनाकर क्या-क्या अनर्थ कर रहा है। सैकड़ों मोमबत्तियाँ जलाता है, फिर उन्हें बुझाकर असंख्यात जीवों को मारता है, न जाने अपने मौज, शौक और खुशी के लिए कितने ही

जीवों को दु:खी करता है। पहले तो छोटे बच्चे का ही जन्मदिवस मनाया जाता था, लेकिन आज तो बूढ़े-बूढ़े लोग भी जन्मदिवस ही नहीं, मैरिज एनिवर्सरी भी मनाते हैं। इतना ही नहीं, उस कार्यक्रम में दूल्हे की तरह सजते हैं, बैण्डबाजे बजवाते हैं। अनेक लोगों को भोजन के लिए आमन्त्रित करते हैं। अरे भाई! समाज किस दिशा में जा रहा है। कहीं तो आपको सोचना होगा। कहीं तो आपको चेतना जगानी होगी। यह जीवन मात्र मौज, शौक, भोग-विलास के लिए नहीं मिला है, यह मानव-भव तो आत्म-उन्नति के लिए प्राप्त हुआ है। उम्र बढ़ने के साथ-साथ त्यागवृत्ति बढ़नी चाहिए और धार्मिक उन्नति होनी चाहिए।

एक प्रसङ्ग मुझे स्मृति में आ रहा है-पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. चेन्नई में विराज रहे थे। क्षेत्र था पुन्नमल्ली। वहाँ एक सुश्रावक गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हुआ। गुरुदेव को निवेदन करने लगा- ''भगवन्! आज से 25 वर्ष पूर्व मेरी शादी हुई थी, उस समय मैंने आचार्यश्री हस्तीमल्लजी म.सा. से मंगल पाठ सुना था। आज 25 वर्ष शादी के पूरे हो गये, इसलिये गुरुदेव आज आपश्री मुझे आजीवन ब्रह्मचर्य (शीलव्रत) के प्रत्याख्यान करवा दीजिए।'' वह भाई था श्रीपालजी सुराणा, चेन्नई। गुरु से मांगलिक लेकर गृहस्थावस्था में प्रवेश किया और 25 वर्ष बाद आज उनके पट्टधर गुरुवर से शीलव्रत लेकर अपनी श्रद्धा गुरुचरणों में अर्पित की। इन प्रसङ्गों से आपको यही प्रेरणा प्राप्त करनी है कि उम्र के साथ-साथ आपकी त्याग रुचि बढ़े, संसार से विरक्ति के भाव निरन्तर अभिवृद्धि को प्राप्त करें।

मुझे यही कहना है, उम्र का कोई भरोसा नहीं हैं, जाने वालों के लिए कोई निश्चित उम्र नहीं है, फिर हम क्यों अहंकार में जी रहे हैं। गुरुदेव (आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.) कई बार फरमाते हैं-''सामान वर्षों का और पता पल का नहीं।'' भाई क्यों इस धन, वैभव, शरीर और जाति-कुल का मद करता है। जब मौत का वारण्ट आयेगा तब ये सब कुछ काम नहीं आयेगा, काम आयेगी-मात्र आपकी धर्मकरणी। इसलिये एक कवि ने कहा-

मान करे ला, गुमान करे ला,
तो सीधे नरक में जाय पड़े ला।
कांई रे गुमान करे जीवड़ा।।

इस संसार में मान करने वाले बड़े-बड़े महाबली कहलाने वाले, चक्रवर्ती-वासुदेव कहलाने वाले, जिनके सैन्यबल-बाह्य सम्पदा का वर्णन सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं, वे महाबली भी मृत्यु के आगे भूमिसात् हो गये। फिर हम जैसे सामान्य मानव का क्या होगा? यह मानव भव अहंकार करने के लिए प्राप्त नहीं हुआ है। यह जीवन तो विनय भावों के साथ, श्रद्धाभक्तिपूर्वक गुरुचरणों में आत्म उत्थान करने के लिए मिला है। जो जितना करेगा, उतना इस भव में, परभव में सुखी होगा। कषायभाव तो त्रिकाल में जीव को संसार में डुबाने वाले ही हैं। हम भाग्यशाली हैं कि हमें आचार्य भगवन्त! पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. जैसे सरल हृदय वाले गुरु मिले हैं, जिनका बाह्य और आभ्यन्तर जीवन सरलता से ओतप्रोत है। ऐसे महापुरुषों के पावन सान्निध्य का लाभ लेकर हम सभी अपने को अल्प कषायी बनाकर, अकषायी बनने के मार्ग को प्रशस्त करें, इसी शुभभावना के साथ.......। ■

निवेदन-प्रतिमाह गजेन्द्र निधि, गजेन्द्र फाउण्डेशन और संघ-सेवा-सोपान के अन्तर्गत संघ के कई सदस्यों से निरन्तर फण्ड प्राप्त हो रहा है। संघ-सेवा में योगदान देने वाले प्रत्येक सदस्य को संघ साधुवाद ज्ञापित करता है। जो भी सदस्य अपना फण्ड सीधे बैंक में जमा कर सहयोग दे रहे हैं, वे अपनी जमापूँजी का पूर्ण विवरण (मय पता, पेन कार्ड, मोबाइल नं.) मोबाइल 9867325842 के व्हाट्स एप्प अथवा absjrhssangh@gmail.com पर भिजवाएँ, जिससे समय पर आपश्री की सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके।

-महेन्द्र कुम्भट, कोषाध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

ISSN 2249-2011

प्रवचन

परिवर्तनशील परिस्थिति का सदुपयोग ही साधक का धर्म

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराणा कटला, जोधपुर में 12 नवम्बर, 2017 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है। -सम्पादक

बन्धुओं!

परिस्थिति न निन्दनीय होती है और न ही प्रशंसनीय। निन्दनीय वह होता है जिससे किसी का अहित हो और प्रशंसनीय वह होता है जिससे किसी का हित होता हो। सारी परिस्थितियाँ इस जीव को उसके हित साधन में सहयोगी बन सकती हैं। सारी परिस्थितियाँ जो अहित करने वाली लगती हैं उनको हितकर बनाया जा सकता है।

एक दृश्य है। एक ही व्यक्ति है। जैसे एक लड़की शृङ्गार से सुसज्जित है। श्रेष्ठ कुल की है। हीरे-जवाहरात से जड़े हुए आभूषण पहने हुए है। परिधान भी बहुत सुन्दर है। नाम-कर्म का उदय भी अच्छा है। आकृति और प्रकृति दोनों अच्छी है। **नाम-कर्म के उदय से आकृति अच्छी मिलती है तो मोहनीय-कर्म के क्षयोपशम से प्रकृति।** बहिन शृङ्गारों से सज्जित है। उसे बाहर की विपुल सामग्री मिली, नाम-कर्म का उदय भी सुहाना है, पर आयुष्य-कर्म कम था। सोलह-सत्रह साल की उम्र में आयुष्य पूरा हो गया। वह बहिन बिना तकलीफ और कष्ट उठाये आराम से विदा हो गई। बहिन मर चुकी है। वहाँ एक जानवर आया, एक साधु भी वहाँ पहुँचा। एक रूप का दीवाना भी वहाँ आ गया और एक लोभी जिसे धन की लालसा थी, वह भी वहाँ आ पहुँचा। चारों वहाँ उपस्थित हैं। जानवर सोचता है कि यह मेरी भूख मिटायेगी। रूप का दीवाना सोचता है कि यह खड़ी हो जाय तो इसके साथ भोग भोगूँ। धन का लोभी सोचता है कि इसके आभूषण मुझे मिल जायें। साधु सोचता है कि यह जीवन कितना चञ्चल है, कभी भी पूर्ण हो सकता है।

भरतपुर से आगरा के बीच अछनेरा गाँव है। अछनेरा के ब्राह्मण कुल के माधवमुनिजी का एक-एक भजन भाव विभोर करता है। 'सेवा सिद्ध सदा जयकार' भजन में अज अविनाशी अगम अगोचर, अमल अचल अविकार। हर शब्द 'अ' से शुरू होता है। माधवमुनिजी की नश्वर जीवन के बोध की भजन की कड़ियाँ हैं-

चञ्चल अमल कमल दल ऊपर, ज्यों कण पानी का।
जान तरल त्यों तन क्षण भंगुर, जग में प्राणी का।।
भज मन भक्ति युक्त भगवान, भरोसा क्या जिन्दगानी का।।
शरद जलद बुद-बुद सम जाहिर, जोर जवानी का।
मत कर गर्व गुमान, मान कहना गुरु ज्ञानी का।।
भज मन भक्ति युक्त भगवान, भरोसा क्या ज़िन्दगानी का।।

सर्दी के बादल आए और बिखर गए। सर्दी के बादल की तरह यह जवानी का जोर है, जो जल्दी ही क्षीण हो जाता है। एक पहलवान अपनी शारीरिक ताकत पर बड़ा गर्व करता है। वह अच्छे-अच्छे के छक्के छुड़ा देता है। उस ताकतवर पहलवान को एक छोटा-सा मच्छर काट जाय तो उसको बिस्तर पर सुला सकता है। आँख में तिनके का तुस गिर जाय तो क्या हालत होती है? जब सरसों कटती है तब चिपया जो मच्छर की तरह छोटा-सा जानवर है, आँख में गिर जाता है तो क्या हाल होता है?

साधु उस मृत बहिन को देख रहा है। वह शरीर की अनित्यता पर विचार करता है। जानवर माँस की दृष्टि से देखता है तो धन के लुटेरे की आभूषण पर नज़र है। रूप का दीवाना उसके सौन्दर्य को देखता है। दृश्य एक है, लेकिन देखने वालों का नज़रिया भिन्न-भिन्न है।

अभी मुनिराज (दर्शनमुनिजी) समता की बात कर रहे थे। सामायिक कहाँ से आयेगी? हर व्यक्ति परिस्थिति के अनुसार अपनी-अपनी दृष्टि से देख रहा है। परिस्थिति से न तो अहित होता है और न हित।

वह लड़की मरी हुई है, शृङ्गार से सुशोभित है। नाम-कर्म से आकृति और मोहनीय-कर्म से प्रकृति अच्छी है। गति-जाति-अवगाहना सब ठीक है, परन्तु आयुष्य का अनुभाग आकृति-प्रकृति से कम है। युगलिक मनुष्य की आयुष्य लम्बी है, भोग भूमि में है और मिथ्यादृष्टि है, उनके रूप का वर्णन शास्त्र में विस्तृत रूप से है। आज के विश्वसुन्दर-विश्वसुन्दरी उसके सामने कुछ नहीं। युगलिक के न नेल पॉलिश है, न बूट पॉलिश। उसका सहज रूप-सौन्दर्य है। लेकिन जीवन की सार्थकता नहीं है। बस एक भव और जन्म-मरण से जुड़ जाता है। आयुष्य बन्ध के समय आकृति का निर्माण हो जाता है। अगले भव में हुलिया कैसा होगा, यह आयुष्य बन्ध के समय निश्चित हो जाता है। आकृति तो अच्छी मिल जायेगी, पर मोहनीय-कर्म के कारण से प्रकृति के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता।

अजमेर रेलवे से रिटायर्ड गोविन्दजी सेवाभावी हैं। सन् 1996 में चातुर्मास के बाद वे बोले-"समझ में नहीं आता लड़की देखने के लिए बस भरकर क्यों जाते हैं? वे क्या देखते हैं? वे रूप-सौन्दर्य देखते हैं। वही लड़की शादी को महीना भर नहीं होता कि घर वाले कह देते हैं कि लड़की अच्छी नहीं है।" जाने वालों ने आकृति ही देखी, प्रकृति नहीं। प्रकृति की खोज होती है मोहनीय-कर्म के क्षयोपशम को देखकर। जिसकी प्रकृति अच्छी है वह शायद घर के सदस्यों में आत्मीयता देकर घर के वातावरण को शान्त बना सकती है। लोग कहते भी हैं-"अमुक के घर बहू क्या आई, उसने तो घर का वातावरण ही बदल दिया। वह सबसे पहले सुबह जल्दी उठती है। सामायिक करती है और घर के एक-एक सदस्य को धर्म से जोड़ती है। फिर घर का सब काम करती है। घर में कभी किसी के विचारों में एकरूपता नहीं हो तो उसका भला, मेरा भला, सबका भला इस भावना का वह प्रयोग करती है। वह दूसरों को दोषी बताने के बजाय अपने कर्मों को लेकर सोचती है कि मेरे कर्म ही ऐसे हैं।"

वह बहिन मर गई। उसका आयुष्य-कर्म कम था। साधु सोचता है कि इस शरीर का क्या विश्वास है?

क्या विश्वास श्वास का पुनि, इस दुनिया फानी का,
ले ले सम्बल संग, नहीं घर आगे नानी का।।
भज मन भक्ति युक्त भगवान, भरोसा क्या ज़िन्दगानी का।।

दृश्य एक है, देखने वाले चार हैं, पर सबकी दृष्टि अलग-अलग। साधु के भीतर विकथा नहीं, संज्ञा नहीं, धर्म-कथा चल रही है। इस बहिन की छोटी उम्र में जब यह हाल हो गया है तो मेरी उम्र का क्या भरोसा? इसको देखकर मुझमें तो जागृति आनी ही चाहिए। मैं कहीं प्रमाद में बैठा न रह जाऊँ? आप रोज अस्पताल में मरते हुए लोगों को देखते हैं। आपको कितना विचार आता है?

उपाध्यायप्रवर जब व्याख्यान देते थे तो प्राय: फरमाया करते-**सम्भलो, डोकरो गुड़ी गय्या छै।** एक जगह दादा-पिता-पोता तीनों थे। अचानक बच्चे के पिता चल बसे। दादा बोला-सम्भलो, तुम्हारे पिताजी गुड़ी गय्या छै। सम्भलो, मात्र इस शब्द को सुनकर पुत्र सम्भल गया और उसने दीक्षा ले ली।

परिस्थिति का सदुपयोग कैसे हो सकता है? उत्तराध्ययनसूत्र के उन्नीसवें अध्ययन में कहा है कि **ममता टूटेगी, कामना छूटेगी तब समता आयेगी। यह मेरा-यह पराया करने वालों में समता आ ही नहीं सकती।** भगवान ने 19वें अध्ययन में 29वीं और 30वीं गाथा में कहा है कि ममता का बन्धन महान् बन्धन है। आचार्य भगवन्त के शब्दों में कहे-

ममता से सन्ताप उठाया, आज हुआ विश्वास।
भेद ज्ञान की पैनी धार से, काट दिया वह पाश।।
मेरे अन्तर भया प्रकाश, नहीं अब मुझे किसी की आश।।

हमारा आदर्श तो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का रहा है। कल लाभचन्दजी टाटिया बैठे थे। टाटियाजी को सेवा के काम में लगाने का श्रेय श्री मधुकरजी महाराज

को है। उस महापुरुष ने कहा-''जो तुम्हें सेवा का लाभ देने आते हैं, वे सेवा लेने वाले आपके महान् उपकारी हैं।'' दान के सम्बन्ध में यही बात है। दान जो लेने वाला है वह दाता के बैंक बैलेंस को बढ़ाता है।

मद्रास के उमरावमलजी सुराणा तो कहते थे- ''कोई धन देकर मरता है तो कोई मरकर धन देता है। जो देकर मरता है, वह पुण्य-सञ्चय करता है और जो मरकर देता है वह पाप संग ले जाता है।'' आचार्य श्री प्राय: बोलते हैं-

धरती अखण्ड कँवारियाँ, वर किये कई लाख।
मुसलमान सब गढ़ गये, हिन्दू हो गये राख।।

यह धरती किसी की आज तक नहीं हुई है। यहाँ तो जो भी आता है, स्थायी नहीं रहता वह तो जाता ही है।

परिस्थिति को लेकर चर्चा है। दिल्ली में प्रदूषण के प्रभाव से मुश्किलें आ रही हैं। कहीं चुनावों की चर्चा है तो कहीं अस्पतालों में डॉक्टर-हड़ताल से मरने वालों के आंकड़े दे रहे हैं। कोई भी परिस्थिति हो सकती है। ज्ञानी तो कहते हैं-**अन्तरगत न्यारा रहकर चलना है।**

प्रत्येक परिस्थिति अभावयुक्त है। एक भी परिस्थिति नित्य नहीं हो सकती। परिस्थिति हर समय बदलती है। प्रतिक्षण उसमें परिवर्तन हो रहा है। जिसके परिवर्तन की अनिवार्यता है वह हमारी आवश्यकता नहीं हो सकती। हम तो मात्र तीन बटा चार (3/4) को पिचहत्तर बटा सौ (75/100) कर रहे हैं। पहले तीन चीजें थीं और एक का अभाव था। अब पिचहत्तर है तो पच्चीस का अभाव है। दोनों की वेल्यू एक है फिर हाय-तौबा क्यों?

शायद आने वाली पीढ़ी नहीं जानेगी कि आमरस हाथ से निकाला जाता था। ठण्डाई हाथ से पीसी जाती थी, चटनी हाथ से पीसी जाती थी, कपड़े हाथों से धोए जाते थे। अब, सबके साधन आ गये हैं। सुख-सुविधा बढ़ी है। सन् 1984 के पहले टी.वी. नहीं था, मोबाइल का तो सवाल ही नहीं। मोबाइल तो सन् 2000 के बाद आया। जोधपुर से मद्रास जाते तो पहले सात दिन में पहुँचते थे। आज गाड़ी कहाँ तक पहुँची? कौनसा स्टेशन आया है? हर बात मोबाइल से हो जाती है तुरन्त खबर पहुँचती है। पहले अमेरिका फोन करना हो तो सैकड़ों रुपये लगते थे, आज कुछ रुपयों में बात हो जाती है। इतने साधन-इतनी सुविधा हो जाने पर क्या शान्ति बढ़ी? **मर्ज बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की।** संसार के काम किसी के पूरे हुए नहीं और होंगे नहीं। तृष्णा का खड्डा कभी भरने वाला नहीं है।

कोई भी परिवर्तन न निन्दनीय है और न प्रशंसनीय। मुनिराज जिस सामायिक की चर्चा कर रहे थे वह सामायिक मुँहपत्ती बाँधने मात्र से नहीं आ पाती। जब तक समता भावना जीवन-बुद्धि में नहीं आती, शुद्ध सामायिक हो ही नहीं सकती।

यह मेरा क्षेत्र, ये मेरे सन्त-सती, ये मेरे भक्त जहाँ **भी मैं और मेरा है, वहाँ समता रह ही नहीं सकती।** तुलसीदासजी ने तो कह दिया-पराधीन सपने सुख **नाहिं।**

जब तक परिस्थिति में जीवन-बुद्धि है, हाय-हाय रहेगी। भगवान की वाणी चेता रही है कि जो परिस्थिति में जीवन-बुद्धि छोड़ता है वह साधना में आगे बढ़ जाता है। **परिस्थिति की कामना कर्म-बन्ध का कारण है। प्रत्येक परिस्थिति हमारे द्वारा की हुई भूल को सुधारने के लिए आती है।**

मेरा शरीर कमजोर है। यह कमजोर क्यों बना? मैंने सामर्थ्य का दुरुपयोग किया, इसीलिए मेरा शरीर कमजोर बना है। मेरा रूप अच्छा नहीं तो मैंने कभी-न-कभी रूप का दुरुपयोग किया है। पराधीनता, अभाव और जड़ता में जीवन-बुद्धि दुरुपयोग ही तो है?

जो सुख दूसरों को दु:ख देकर आया है कालान्तर में वह सुख भी दु:ख में बदलता ही है।

एक सुख साता वेदनीय के उदय से है और दूसरा वेदनीय-कर्म के क्षय से मिलता है। वेदनीय-कर्म के खत्म होने से होने वाला सुख अव्याबाध सुख है। आप

सिद्ध भगवान के तीसरे गुण में इसे बोलते हैं।

सामायिक की साधना मुक्ति का सोपान है, शान्ति का सागर है, ऊर्जा देने वाली है, पर कब? जब परिस्थिति में जीवन-बुद्धि न हो।

आज आदमी केवल बाहर की भाग-दौड़ कर रहा है। महासती श्री यशकँवरजी महाराज ने 9 मार्च, 2000 को नेवरिया ग्राम में सुनाया-**जो बाहर की भीड़ में मशगूल बन जायेगा, वह भीतर के आनन्द से महरूम रह जायेगा।**

आचार्यश्री हस्ती ने कहा-

दोय घड़ी निज-रूप रमण कर, जग बिसरावेला।
धर्म-ध्यान में लीन होय, चेतन सुख पावेला।।
कर लो सामायिक रो साधन, जीवन उज्ज्वल होवेला।।

पूज्य गुरुदेव कहा करते थे-कुएँ में पानी है, पानी निकालने के लिए बाल्टी है, डोर भी है। पानी निकालने के लिए बाल्टी जो डोर से बँधी है, कुएँ में डाली। दो-चार बार हिलाने पर बाल्टी में पानी आया। पानी कुएँ में है, बाल्टी कुएँ में और डोर का नब्बे प्रतिशत से ज्यादा भाग भी कुएँ में है, लेकिन डोर का छोर हाथ में है तो पानी भी आ जायेगा, बाल्टी और डोर भी आ जायेगी।

सामायिक के लिए भी यही बात है। दो घड़ी की सामायिक है तो जीवन में शान्ति आ सकती है, जीवन में ताजगी और ऊर्जा का सञ्चार हो सकता है। इसलिए जीवन जीने के लिए दो घड़ी सामायिक-साधना करना हर व्यक्ति की आवश्यकता है। आप हर परिस्थिति में सामायिक कर सकते हैं, समता अपना सकते हैं।

जिनवाणी पर अभिमत

श्री अभय कुमार जैन श्री श्रीमाल

मार्च, 2023 की जिनवाणी प्राप्त हुई, जिसमें आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. ने गुणवान बनने के एक से बढ़कर एक सूत्र प्रदान किये हैं जो चिन्तन, मनन एवं आचरण में लाने योग्य हैं। सम्पादकीय 'प्रभु वीर की स्तुति' में डॉ. धर्मचन्दजी द्वारा तीर्थंकर प्रभु महावीर के 26 नामों की जो व्याख्या की गई है, निःसन्देह बहुत ही सुन्दर एवं पठनीय है। प्रवचन स्तम्भ में 'धर्मोत्तम पुरुष आचार्यश्री धर्मदासजी महाराज' भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा जो विवेचन किया गया, पढ़ते ही मन्त्र मुग्ध हो गया, आनन्द का अनुभव हुआ। आपके समझाने की कला भी अद्भुत है। भावी आचार्य श्री द्वारा 12 फरवरी के दीक्षा प्रसंग पर फरमाया अनमोल सन्देश था-संयम अभिव्यक्ति का विषय नहीं, अनुभूति का विषय है। इसके अतिरिक्त ज्ञानगच्छाधिपति श्रुतधरजी के सन्तों के पधारने पर जो भाव व्यक्त किये, उससे परस्पर जो आदरभाव लगा वह भी सभी लोगों के अन्तर्मन को छू गया। महापुरुषों के भावों की महिमा एवं गरिमा ही निराली है। महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा. द्वारा सहज, सरल शब्दों में जैन होने के जो 10 लक्षण बताये हैं, वे आचरण करने योग्य हैं। उन्होंने कहा कि जैन होना जीवन की सबसे बड़ी पदवी है। श्रीमती रतनजी चोरड़िया का 'रोग के क्षणों में समाधि कैसे रखें' लेख पढ़ने पर हमें शरीर और आत्मा में अन्तर समझ में आता है तथा आदमी रोग ग्रस्त होने पर भी हाय-विलाप एवं परेशान होना छोड़ समभाव में आ सकता है। शालिभद्रजी, गजसुकुमालमुनि, खन्दकमुनि, मेतार्यमुनि, चण्डकौशिक, परदेशी राजा इत्यादि के प्रसंगों से वास्तव में बहुत प्रेरणा मिलती है। जब महापुरुषों के दुःखों का वर्णन पढ़ते हैं, सुनते हैं तो हमारे दुःख और परेशानियाँ बहुत छोटी लगने लगती है। अन्त में 9 बिन्दु सम्यक् चिन्तन कर दुःखों का हल्का करने के बताये हैं। उनका चिन्तन कर हम दुःखों को भूल सकते हैं। जिनवाणी के प्रत्येक अंक में प्रत्येक लेख प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक होता है। अच्छे संकलन के लिए बहुत-बहुत साधुवाद।

-44, तृप्ति बंदा रोड़, भवानी मण्डी (राज.)

ISSN 2249-2011

प्रवचन

उपकरणों से कषाय-विजय की प्रेरणा

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा 8 जुलाई, 2022 को प्रतापनगर, जयपुर में फरमाये गये प्रवचन का आशुलेखन स्थानीय संघाध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोत, जयपुर के द्वारा करवाया गया। **-सम्पादक**

धर्मानुरागी बन्धुओं!

जो साधन सामायिक में उपकार करे, उन्हें सामायिक के उपकरण कहते हैं।

सामायिक में अनेक उपरकरण होते हैं। सामायिक के श्वेत वस्त्र आत्म-कर्त्तव्य की पहचान कराते हैं। आत्मा के कार्य की पहचान कराते हैं। विद्यालय के वस्त्र विद्यार्थी की पहचान कराते हैं, वकील के वस्त्र न्याय की पहचान कराते हैं, डॉक्टर के वस्त्र उपचार की पहचान कराते हैं, सैनिक के वस्त्र देश-सुरक्षा की पहचान कराते हैं, हॉस्पिटल के वस्त्र मरीज की पहचान कराते हैं, ठीक इसी तरह सामायिक के वस्त्र साधक की पहचान कराते हैं। शान्तिदूत की पहचान दिलाते हैं। आत्म-कर्त्तव्य को जगाने की प्रेरणा देते हैं।

सफेद कोट वाला-डॉक्टर, काले कोट वाला-वकील, खाकी वस्त्र वाला-पुलिसकर्मी है तो सामायिक का साधक मुँहपत्ती सहित सफेद वस्त्रधारक होता है।

सामायिक के सभी वस्त्र सफेद रंग के होते हैं। सफेद रंग शान्ति का सूचक होता है, विराम का सूचक होता है, विरति का सूचक होता है। सफेद ध्वजा फहराने पर युद्ध विराम हो जाता है। भोजन में सफेद चावल आने पर भोजन विराम हो जाता है। सिर पर सफेद बाल आने पर जीवन विराम की ओर है, यह समझा जाता है तो सफेद वस्त्र अविरति से विराम के सूचक होते हैं।

सामायिक में सबसे पहले दो चीजों का त्याग होता है-1. बाह्य रूप में-गृहस्थ वेश का त्याग, 2. भीतर में-आवेश का त्याग।

जब आप सामायिक करने के लिए उद्यत हुए हैं तब सबसे पहले श्रावक को गृहस्थ के रूप में पहने हुए पेंट, पायजामा, जींस, केप्री, बनियान, स्वेटर अथवा रंगीन सिला हुआ कोई भी वस्त्र हो उसका त्याग करना चाहिए। वर्तमान में वस्त्र परिवर्तन में कई जगह श्रावकों में आलस्य देखा जाता है जो सामायिक की द्रव्य-शुद्धि को गौण करता है। इसमें प्रमाद हटाने की आवश्यकता है, पुरुषार्थ बढ़ाने की जरूरत है। संसार में जहाँ कर्म-बन्धन का कारण होता है, आसक्ति बढ़ाने का निमित्त बनता है, वहाँ व्यक्ति एक दिन में तीन-चार बार भी वस्त्र परिवर्तन कर लेता है। जब अलग-अलग जगह कार्यक्रमों में उपस्थित होना हो तब वहाँ व्यक्ति कपड़े बदलने में चार बार भी आलस नहीं करता और जहाँ कर्म काटने का अवसर है, कर्म-निर्जरा का निमित्त है वहाँ व्यक्ति सामायिक की ड्रेस पहनने में भी आलस कर जाता है। कई बार ऐसा देखा जाता है कि सामायिक के वस्त्र पहनते हैं तो भी आधे-अधूरे। दुपट्टा है तो चोलपट्टा नहीं, चोलपट्टा-दुपट्टा है तो पूँजनी नहीं, यह सामायिक का सम्यक् रूप नहीं है।

उपासकदशांगसूत्र के छठे अध्ययन में कुण्डकौलिकजी के वर्णन में आता है कि जब कुण्डकौलिक श्रावक धर्मप्रज्ञप्ति रूप सामायिक स्वीकार करते हैं तब वे अपनी अंगुली में धारण की हुई नाम मुद्रिका और उत्तरीय को अलग रखकर धर्मप्रज्ञप्ति स्वीकार करते हैं। इससे यह फलितार्थ निकलता है कि सामायिक में गृहस्थ वेश का त्याग होना चाहिए। साथ ही सामायिक में भीतर में आवेश का त्याग होना

आवश्यक है। आवेश रखकर एवं मन में द्वेष रखकर सामायिक करना सामायिक के मन के 10 दोष में से आठवाँ रोष दोष है। सामायिक करते समय रोष-आवेश का प्रसंग भी बन जाय तो भी साधक को उस समय समता का परिचय देना चाहिए। समताभाव रखकर हर परिस्थिति में सन्तुलन बनाना चाहिए। इस तरह सामायिक में गृहस्थ वेश का त्याग और भीतर में आवेश का त्याग कर साधना की शुरुआत करनी चाहिए।

स्त्री जाति के लिए सफेद वस्त्र धारण करने की आवश्यकता नहीं हैं। वे पहने हुए रंगीन वस्त्रों से भी सामायिक करें तो कोई दोष नहीं है। फिर भी स्त्रियों के वस्त्र तड़क-भड़क वाले, चमकीले नहीं हों, बल्कि सादा-स्वच्छ हों। जिनशासन का प्राण ही अनेकान्त है। प्रत्येक विधि-विधान द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, व्यक्ति आदि को लक्ष्य में रखकर किया गया है। सामायिक में तीन परिवर्तन होते हैं-(1) वेश परिवर्तन, (2) केश परिवर्तन और (3) परिवेश परिवर्तन।

आजीवन सामायिक ग्रहण करने वाले संयमी के जीवन में ये तीनों प्रकार के परिवर्तन होते हैं और मुहूर्त्तभर की सामायिक ग्रहण करने वाले श्रावक के सामायिक में दो प्रकार का परिवर्तन होता है। वेश परिवर्तन और परिवेश परिवर्तन।

सामायिक में कुल पाँच उपकरण हैं-मुँहपत्ती, दुपट्टा, चोलपट्टा, आसन और पूँजनी। आज हम सामायिक के इन सभी उपकरणों के प्रमाण की क्या-क्या व्यवस्था निर्धारित है, उसे यहाँ समझेंगे-

पहला उपकरण मुँहपत्ती है

मुँहपत्ती का प्रमाण इक्कीस अंगुल लम्बा और सोलह अंगुल चौड़ा है और इसमें आठ पट्ट होते हैं।

दूसरा उपकरण दुपट्टा है

इसे चादर भी कहते हैं। इसका प्रमाण साधुवर्ग के लिए 3 हाथ चौड़ा और 6 हाथ लम्बा बताया है। श्रावकवर्ग के लिए 2.5 हाथ चौड़ा और 5 हाथ लम्बा होना चाहिए। श्रावक वर्ग को एक बात का विशेष उपयोग रखना चाहिए, जहाँ बहिनें या महासती वर्ग उपस्थित हों, दृष्टिगोचर होते हों, ऐसे स्थान पर वस्त्र परिवर्तन करना, दुपट्टा धारण करना अविवेक है। वस्त्र मर्यादापूर्वक मर्यादा के लिए धारण किये जाते हैं। श्रावक वर्ग का दुपट्टा सफेद ही होना चाहिए। दुपट्टे पर स्लोगन छपा हुआ, धार्मिक नारा, चिह्न, विचार कुछ भी लिखा हुआ नहीं होना चाहिए। दुपट्टा सफेद होने पर सर्वप्रथम प्रभु महावीर के शासन व्यवस्था की झलक मिलती है, प्रतिलेखना में सहूलियत रहती है। साथ ही अक्षररहित होने पर ज्ञान की आशातना से भी बचाव होता है। इसलिए दुपट्टा पूर्ण श्वेत होना चाहिए। दुपट्टे के चारों ओर बोर्डर भी रक्त पट्टिका युक्त नहीं होना चाहिए।

तीसरा उपकरण चोलपट्टा है

चोलपट्टे का प्रमाण लगभग डेढ़ हाथ चौड़ा और 5 हाथ लम्बा हो। यह चोलपट्टा पगथली से 12 अंगुल ऊपर और घुटने से प्रायः 12 अंगुल नीचे होना चाहिए। प्रमाणोपेत चोलपट्टा लज्जा निवारक होने के साथ-साथ चलने-फिरने में सुविधाजनक भी होता है।

चौथा उपकरण आसन है

आसन का प्रमाण अपने-अपने हाथ से 1.5 हाथ चौरस प्रमाण होना चाहिए। प्रमाणोपेत आसन का ही प्रयोग करना चाहिए।

पाँचवाँ उपकरण पूँजनी है

पूँजनी यतना में सहायकभूत है। पूँजनी में 50 फलियाँ हों, साथ ही वस्त्र आदि के आवरण से रहित हो।

सामायिक के इन सभी उपकरणों से हमें उपयोग धर्म में जीने की और कषाय-विजय करने की प्रबल प्रेरणा मिलती है। सामायिक के किसी भी वस्त्र में बाँहें नहीं होती, जो क्रोध विजय करने का संकेत प्रदान करती हैं। हम देखते हैं कि क्रोध आने पर व्यक्ति तिलमिला कर लड़ने को उतारू हो जाता है और अपनी बाँहें ऊपर चढ़ा लेता है। सामायिक के किसी भी उपकरण में कॉलर नहीं है, जो गर्व-गुमान-अभिमान रहित होने की प्रेरणा

देता है। संसार में हम देखते भी हैं कि जब व्यक्ति गर्वयुक्त होता है तब अपनी शर्ट की कॉलर ऊँची करके अभिमानयुक्त वचन बोलता है। सामायिक के वस्त्रों में कॉलर का नहीं होना, अभिमानरहित सामायिक करने की प्रेरणा प्रदान करता है।

सामायिक के किसी भी उपकरण में सफेद रंग के अलावा अन्य रंग-बिरंगा रूप नहीं होता है जो माया रहित होने की पुष्टि करता है। मायावी गिरगिट की तरह रंग बदलता है। उसके रंग-बिरंगे अनेक चेहरे होते हैं। प्रत्येक स्थल पर उसका व्यवहार अलग-अलग होता है। सफेद रंग के उपकरण हमें मायावी नहीं बनाकर एक रंग वाला बनने की अर्थात् कथनी-करनी में एकरूपता की प्रेरणा देता है। सामायिक के किसी भी उपकरण में जेब नहीं होती जो लोभ कषाय को विजय करने में सहायक बनती है। लोभ कषाय ममता, आसक्ति और कामना की पूर्ति में ही संसार वर्धन कराता है। लोभी व्यक्ति पेट से अधिक पेटी भरने में लगा रहता है। सामायिक के उपकरणों में चाहे वस्त्र हो या अन्य उपकरण किसी में भी जेब नहीं है, यह लोभ कषाय का सेवन नहीं करने की प्रेरणा देता है।

उपकरण दिवस पर उपयोगी उपकरणों की चर्चा को आप सभी ने सहृदय और सश्रद्धा श्रवण किया। आप सभी सुज्ञ हैं, विज्ञ हैं, जैसी सामायिक के उपकरणों की व्यवस्था बताई है उसी प्रमाणोपेत व्यवस्था (वस्त्र) के साथ शुद्ध सामायिक करने का लक्ष्य रखेंगे।

उपकरण अधिकरण (हिंसा का साधन) नहीं बने, अपितु उपकरण हमारे अंत:करण को परिवर्तित करने में प्रबल सहयोगी बने, इन्हीं शुभ भावों के साथ........

ज़िन्दगी बड़ी होनी चाहिए

श्री जयदीप ढड्ढा

भारतीय संविधान के निर्माता भारतरत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने एक बार कहा था-'जीवन लम्बा नहीं, महान् होना चाहिए।' सामाजिक समानता और आपसी भाईचारे को प्रोत्साहन देने के लिए ही उन्होंने यह बात कही थी। अम्बेडकर ने दलित वर्ग का संघर्ष और दर्द करीब से देखा ही नहीं था, झेला भी था। वे स्वयं दलित वर्ग से थे। इसलिए वे लोगों के जीवन को उस ऊँचाई पर ले जाना चाहते थे, जहाँ आपसी प्रेम और सद्भाव हो। लम्बा जीवन न भी मिले तो कोई बात नहीं, जीवन नेकियों से भरपूर होना चाहिए। बड़प्पन का भाव होना चाहिए।

आज का व्यक्ति आत्मकेन्द्रित होता जा रहा है। खुद के फायदे के बारे में अधिक सोचने लगा है। दूसरों का नुकसान पहुँचाते हुए एक बार भी नहीं सोचता। जाति और धर्म के नाम पर झगड़ा-फसाद करने में देरी नहीं लगाता। ऊपर से लम्बी ज़िन्दगी की ख्वाहिश रखता है। उसे खुद का जीवन दुर्लभ और औरों का सस्ता लगता है। हिंसा उसकी जीवन शैली का हिस्सा बनती जा रही है। वह दूसरों की मदद करे और प्रेम से रहे, इसके विपरीत 24 फरवरी, 2022 को यूक्रेन पर हमला करने के बाद से रूस ने अब तक युद्ध पर विराम नहीं लगाया है। रूस इस तरह युद्ध कर रहा है, मानो वही जीवित रहेगा। लम्बा जीवन जीयेगा। जीवन के सारे सुख, सत्ता को वही भोगेगा।

पर जो लोग बड़ी ज़िन्दगी जीने में यकीन नहीं करते, वे किसी भी तरह से महानता का परिचय नहीं दे सकते, प्रेम-भाव नहीं रख सकते, वे लम्बा जीवन भी क्या खाक जीयेंगे। जिनके मन में प्यार नहीं है, मानवता नहीं है और दया, क्षमा, करुणा, सम्मान नहीं है, वे अपने लिए लम्बे जीवन की कामना किस हक से कर सकते हैं। जो दूसरों को खुशी नहीं दे सकते, वे लम्बा जीवन जीकर करेंगे भी क्या? क्या उनका खुद का जीवन खुशियों से भरा होगा? ऐसे में बेहतर तो यही है कि हम जितना भी जीएँ, मानवता से भरपूर जीवन जीएँ। समाज को बेहतर बनाएँ। जिंदगी बड़ी होनी चाहिए, लम्बी नहीं। तभी सार्थक जीवन जी सकेंगे।

-ढड्ढा मार्केट, जौहरी बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

10 अप्रेल 2023
जिनवाणी 28
ISSN 2249-2011

प्रवचनांश

जो होता है, वह अच्छे के लिए होता है

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. द्वारा महामन्दिर, जोधपुर के चातुर्मास के पूर्णाहुति दिवस लोकाशाह जयन्ती पर 8 नवम्बर, 2022 को फरमाए गए इस प्रवचन के अंश का आशुलेखन सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है। -सम्पादक

आनन्द आदमी का स्वभाव है, परन्तु फिर भी प्रत्येक जीव को आनन्द प्राप्त नहीं है। हर व्यक्ति आनन्द चाहता है, पर मिल नहीं पा रहा है। जिसका आत्म-स्वरूप में मन लगता है, वह भोगों से दूर रहता है और उसे ही आनन्द प्राप्त होता है।

चित्त की प्रसन्नता ही साधना का सार है। जिसका दर्शन मोहनीय का क्षयोपशम हो जाता है, उसकी लेश्या आनन्द की ओर अग्रसर होती है। ज्ञानियों ने ठीक ही कहा है-जैसा बोओगे वैसा पाओगे।

सकारात्मक सोच वाले ने कुछ पाया है।
नकारात्मक सोच वाले ने बहुत कुछ गँवाया है।
और कुछ नहीं सोचने वाले ने सब कुछ पाया है।।

सकारात्मक सोच से सब अच्छा होता है। यह व्यक्ति के भीतर ऊर्जा प्रकट करती है और सुख-दु:ख में समता की शिक्षा देती है। एक दृष्टान्त से आप इसे भली-भाँति समझ सकेंगे। एक राजा था। उसके पास एक चतुर महामन्त्री था। राजा को अहंकार तो था ही, क्रोध भी आता था। राजा का क्रोध तो मानो सातवें आसमान पर रहता था।

एक दिन राजा और महामन्त्री शिकार के लिए जंगल में गये। शिकार करते-करते राजा के पैर का अँगूठा कट गया। महामन्त्री ने देखा और कहा-''जो होता है, वह अच्छे के लिए होता है।'' राजा तो पहले से ही क्रोध में लाल हो रहा था, फिर महामन्त्री के ये सकारात्मक बोल उसे अच्छे नहीं लग रहे थे, इसलिये राजा ने तत्काल प्रभाव से महामन्त्री पद से उसकी छुट्टी कर दी।

राजा ने महामन्त्री से पूछा-''अब तुम्हारा क्या कहना है?'' महामन्त्री का तो वही उत्तर था-''जो होता है अच्छे के लिए होता है।'' राजा ने तुरन्त उसको अपने सामने से हटने को कहा। महामन्त्री वहाँ से चला गया।

उधर से कुछ वनवासी मनुष्यों का एक दल आया। मनुष्य देखते ही एक वनवासी बोला-''हमें नर मिल गया है। हम इसकी बलि देवी को चढ़ायेंगे तो देवी खुश हो जायेगी और हमें वरदान देगी।'' उन्हीं में से एक बुजुर्ग वनवासी ने कहा-''पहले अच्छी तरह आदमी को ध्यान से देखकर यह पता कर लो कि इसका कोई अंग-भंग तो नहीं है।''

सभी वनवासी राजा को देखने लगे। देखते हुए ज्ञात हुआ कि राजा का अँगूठा तो कटा हुआ है और उसमें अब भी खून आ रहा है। वनवासियों ने अंगभंग नर देखकर राजा को छोड़ दिया। राजा वहाँ से सीधा राजमहल पहुँचा और उसने महामन्त्री को बुलाया। महामन्त्री हाजिर हुआ। राजा ने कहा-''तुम तो कहते थे कि जो होता है, वह अच्छे के लिए होता है, यह बात मेरे लिए तो ठीक हुई, परन्तु तुम्हें तो महामन्त्री पद से हटना पड़ा, तो फिर तुम्हारे लिए अच्छा कैसे हुआ? इसे तुम कैसे देखते हो?''

महामन्त्री ने जवाब में कहा-''राजन्! यदि आप मुझे घर पर नहीं भेजते तो वनवासी आपकी जगह मुझे पकड़ कर देवी के समक्ष मेरी बलि चढ़ा देते, इसलिये मैंने कहा कि जो होता है, अच्छे के लिए होता है।'' राजा महामन्त्री के उत्तर से सन्तुष्ट हो गया। आप सब इस दृष्टान्त से समझ गये होंगे कि जो होता है, वह अच्छे के लिए होता है। आप सकारात्मक सोच रखें तो व्यक्ति के जीवन में आनन्द ही आनन्द है।

ISSN 2249-2011

प्रवचन

चारित्र-प्राप्ति में पाँच समवाय की भूमिका

श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. द्वारा 'पंच-कारण-समवाय' विषय पर मदनगंज-किशनगढ़ में आयोजित संगोष्ठी में 25 सितम्बर, 2022 को फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन श्री त्रिलोकचन्द जैन, सह सम्पादक, जिनवाणी द्वारा किया गया है। -सम्पादक

धर्मप्रेमी बन्धुओं!

'लक्ष्य पर लक्ष्य रहेगा तो उपलक्ष्य में लक्ष्य मिलेगा।' अनुभवी की बात हमें लक्ष्य की स्पष्टता का संकेत करती है। हमारा लक्ष्य क्या है? अवेदी बनना, अकषायी बनना अथवा अनाहारक बनना। वीरवाणी कहती है कि अनाहारक, अकषायी और अवेदी बनना वास्तविक लक्ष्य नहीं है। प्रज्ञापनासूत्र के 18वें पद में कहा है कि हमारी आत्मा अनन्त बार अनाहारक बन चुकी है, अकषायी और अवेदी अवस्था का अनुभव भी कर चुकी है, परन्तु अभी तक जन्म-मरण का परिभ्रमण समाप्त नहीं हुआ। जब भोग-बुद्धि, विषय-लिप्सा, कषाय की मित्रता यथावत् दृष्टिगोचर होती है, तब समझ आता है कि हमारा लक्ष्य पूर्ण सधा नहीं है। ''साधक का लक्ष्य अनाहारक, अवेदी और अकषायी बनना नहीं, अपितु अनास्रवी बनना है।'' हमारी आत्मा अनन्त भवों में अनादि काल से एक समय भी आस्रव के बिना नहीं रही है। वह अनास्रवपना कैसे प्राप्त होगा?

उत्तराध्ययनसूत्र के 29वें अध्ययन में पृच्छा की- **संजमेणं भंते! जीवे किं जणयइ?** प्रभु ने फरमाया- **संजमेणं अण्णहयत्तं जणयइ।** अर्थात् संयम से अनास्रवता आती है। उसी संयम की महिमा बताते हुए कहा कि जिस जीवन में आनन्द है, पर क्लेश नहीं, मस्ती है पर परवशता नहीं, प्रसन्नता है पर पाप नहीं, सुख है पर लाचारी नहीं, ताजगी है पर दासता नहीं, इसे ही संयम कहते हैं।

संयम की परिभाषा करते हुए कहा है कि-1. आते हुए कर्म आस्रव को रोकना चारित्र कहलाता है। 2. पूर्वकृत कर्मों को आत्मा से रिक्त करना चारित्र कहलाता है। 3. सर्व सावद्य प्रवृत्ति का प्रत्याख्यान चारित्र कहलाता है। 4. आत्मस्वरूप में रमण करना चारित्र है।

दूसरे शब्दों में कहें तो-1. बाहर देह से और अन्दर मोह से संग्राम करना संयम है। 2. जहाँ दुःख का आभास दिखता है पर सुख का आस्वादन होता है वह संयम है। 3. जहाँ सर्व को स्वयं सम एवं स्वयं को सिद्ध सम माने वह संयम है।

चारित्र का महत्त्व

1. अच्छा रहने से अच्छा करना श्रेष्ठ है और उससे श्रेष्ठ अच्छा बनना है। सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए नमिराजर्षि ने कहा-''यदि कोई व्यक्ति गायों का दान करता है। किन्तु 10-10 लाख गायों का दान करने से भी अनन्त गुणा विशुद्धिवर्द्धक एक उच्छ्वास का संयम है। इस प्रकार चारित्र की महिमा अनन्त ज्ञानियों ने गायी है।''

2. कोई व्यक्ति अथाह धन सम्पत्ति का स्वामी है, जिसने सभी अंगुलियों में बेशकीमती हीरे से जड़ित मुद्रिकाएँ, गले में नवरत्न की माला सज्जित कर रखी है और वह व्यक्ति मार्ग पर चल रहा हो, दूसरी तरफ एक साधु जिसके तन पर साधारण सफेद चद्दर, मुखवस्त्रिका, हाथ में लकड़ी के पात्र हैं, न घर का ठिकाना है और न कल के भोजन का पूर्व नियोजित प्रबन्ध है, ऐसे साधु यदि अविराम गति से चल रहे हैं तो वे धनिक किसके चरणों में झुकेंगे-साधु के। यह महिमा चारित्र की है।

3. एक असंयमी व्यक्ति मासखमण के पारणे के

अनन्तर मासखमण करता है। पारणे में सुई के अग्र भाग में आए उतने अन्न का आहार कर अवशेष दिन में कुछ नहीं लेता, पुन: अगले दिन से मासखमण करता है। ऐसी तपस्या करोड़ पूर्व तक करता है, दूसरी तरफ दीक्षित साधु निर्दोष आहार लाकर 32 कवल प्रमाण पेट भरकर आहार करे तो भी मासखमण के असंयमी तपस्वी से भी संयमी श्रेष्ठ है, कारण कि वह महाव्रत अङ्गीकार किये हुए है।

समवाय का अर्थ

सम् + अव उपसर्गपूर्वक 'ई' धातु में अच् प्रत्यय करके समवाय शब्द की निष्पत्ति होती है। जिसका अर्थ है सम्मिश्रण, संयोग या संग्रह। प्रत्येक कार्य में कारण की आवश्यकता रहती है। उन कारणों के समूह को ही समवाय कहते हैं। काल, स्वभाव, नियति, कर्म और पुरुषार्थ ये पाँचों मिलकर समवाय हैं। यद्यपि 32 आगमों में इनका सीधा उल्लेख नहीं है, पर पृथक्-पृथक् रूप में उल्लेख है। सर्वप्रथम पाँच समवाय का उल्लेख सिद्धसेन दिवाकर ने विक्रम की छठी शताब्दी में किया। तत्पश्चात् दार्शनिक युग के विभिन्न चिन्तकों ने इस पर अन्वेषण किया, जिससे यह तत्त्व वर्तमान में परिवर्द्धित एवं परिष्कृत स्वरूप धारण कर संघ समाज में उपयोगी बना।

नियति–काल-स्वभाव-कर्म-पुरुषार्थ ये सभी पलट सकते हैं, पर नियति अटल ही रहती है। सर्वज्ञ सर्वदर्शी भगवान अरिहंत अरिष्टनेमि अखूट पुण्य से समृद्ध श्री कृष्ण वासुदेव से कहते हैं कि वासुदेव संयम ग्रहण के अयोग्य होते हैं, क्योंकि वे निदानकृत होते हैं। यह नियति समवाय है। निदानकृत जीव मनुष्य योनि में जन्म धारण करते हुए भी संयम ग्रहण के योग्य नहीं है।

यह निदान तीव्र रस से अनुरञ्जित परिणाम (निदान शल्य) की अपेक्षा समझना चाहिए। निदान एवं निदान शल्य में अन्तर है। आर्त्तध्यान के 4 भेदों में एक भेद निदान है, त्रिशल्य में एक शल्य निदान शल्य है। वैसे देखा जाए तो सामान्यतौर पर दोनों समान दिखते हैं, पर तत्त्वज्ञान के अध्ययन से स्पष्ट परिलक्षित होता है कि दोनों भिन्न-भिन्न हैं। निदान शल्य गाढ़ मिथ्यात्व एवं अनन्तानुबन्धी कषाय के सहकार से बँधता है, इसलिए उत्तराध्ययनसूत्र के 29वें अध्ययन की 5वीं पृच्छा में इसको मोक्ष-मार्ग का विघातक और अनन्त संसार वर्द्धन का कारण माना है, जबकि आर्त्तध्यान का एक भेद निदान छठे गुणस्थान तक सम्भव हो सकता है।

जिस कार्य का परिणाम पुरुषार्थ के विपरीत हो या अकल्पित रूप से अकस्मात् हो जाए उस परिणाम में नियति कारण होता है। पुरुषार्थ के विरुद्ध फल देने वाले कृत्य अधिक नहीं होते हैं। कर्म के खज़ाने में शिथिल बन्ध वाले कर्म अधिक और निकाचित वाले थोड़े होते हैं। नियति का क्षेत्र थोड़ा है, पर सामर्थ्य अधिक। कई बार इसकी शक्ति समझने में हम भूल कर बैठते हैं। पुरुषार्थ करते हुए अन्तराय उत्पन्न हो जाए तो हम नियति मानकर पुरुषार्थ करना छोड़ देते हैं या रुक जाते हैं, परन्तु ऐसे सोचना भ्रमपूर्ण एवं अनुचित है। कई बार ऐसी बाधाएँ पुरुषार्थ से हटाई जा सकने योग्य होती हैं। फलाकांक्षी मानव को चाहिए कि एक बार उत्पन्न बाधा से ही न रुके, बल्कि दूसरी-तीसरी बार या बार-बार प्रयास करते रहना चाहिए। इतना करते हुए भी जब अन्त में असफलता ही हाथ लगे, विपरीत परिणाम निकले तब उसे नियति मानना चाहिए। नियति की मान्यता मनुष्य को निराशदशा में आश्वासन देकर शान्ति प्रदान करती है। यद्यपि इसका अन्तर्भाव कर्म में हो जाता है, पर पूर्व कर्म का अधिकांश भाग पुरुषार्थ के अधीन होने के कारण निकाचित कर्म को नियति के अन्तर्गत रखा गया है; कारण यह है कि यह पुरुषार्थ की सत्ता से बाहर है।

स्वभाव–चारित्र-प्राप्ति में स्वभाव के रूप में सहायक मुख्य रूप से भव्य होना और मनुष्य होना है। **(अ) मनुष्य**–यद्यपि मनुष्य गति औदयिक भाव के रूप में गिनी गई, परन्तु मोक्षगमन, संयम-अनुपालन का स्वभाव मात्र मनुष्य में है। **(ब) भव्य**–भव्य का अर्थ है जो मोक्षगमन के योग्य है वह भव्य है ऐसा भगवतीवृत्ति में कहा है। प्रवचनसारोद्धार में कहा-केवली का सुख

सर्वोत्कृष्ट है, यह सुनकर उसमें जो श्रद्धा होती है वह भवी को ही होती है। केवली के सुख के समक्ष संसार के समस्त सुख नगण्य एवं तुच्छ हैं। संसार का सुख तीन कलंक से युक्त है-(अ) अप्राप्त भोग की लालसा, (ब) प्राप्त भोग की ममता और (स) भुक्त भोग की स्मृति। अस्तु ये सुख क्षणिक हैं। यह सोच भवी की होती है। नियमसार तात्पर्यवृत्ति में भवी के लक्षण बताए गये हैं कि अनन्तचतुष्टय विकास की योग्यता हो तो वह भवी है। ज्ञान-दर्शन-सुख-शक्ति विकास वृद्धि के लिए पुरुषार्थ करना, अज्ञान-अनास्था एवं जड़ता को समाप्त करने की भावना रखना भवी के लक्षण हैं। श्रमणोपासिका प्रसिद्ध शय्यातरी जयन्ती ने पृच्छना स्वाध्याय द्वारा प्रभु से पूछा कि यह भवीपना स्वभाव से या परिणाम से। प्रभु ने उत्तर दिया कि स्वभाव से। अस्तु दूसरी योग्यता स्वभाव से भवीपना है।

काल-जो क्रिया जितने काल में सिद्ध हो उतने प्रमाण में उस क्रिया में काल को कारण कहा है। काल की अपनी विशिष्टता है। काल की महत्ता संयम के परिप्रेक्ष्य में इस प्रकार है-**(अ) शुक्लपक्षी जीव हो**-जिसका संसार अर्धपुद्गल परावर्तन या उससे कम अवशेष रहे वह शुक्ल पक्षी कहलाता है। अंगारमर्दनाचार्य जैसे अभवी भी आचार्य द्वारा संयम ग्रहण करते हैं, लेकिन हमेशा कृष्णपाक्षिक रहते हैं। ऐसे और भी दृष्टान्त कथा साहित्य में विद्यमान हैं। शुक्लपक्षी संयम ग्रहण के योग्य है, यह बात भाव संयमी पर लागू होती है। **(ब)** लगभग 8 वर्ष की वय होनी चाहिए। यह काल से जुड़ी बात है। 8 वर्ष की वय से पूर्व संयम धारण कराना राजमार्ग नहीं है। आगम व्यवहारी तो अतिमुक्तककुमार को 6 वर्ष की वय में तथा वज्रस्वामी को तीन वर्ष की उम्र में महापथ पर (प्रभावक चारित्र गाथा 92 में) प्रणत कर सकते हैं। शेष श्रुत, आज्ञा, धारणा एवं जीत व्यवहारी के लिए 8 वर्ष से अधिक उम्र वाला ही संयम ग्रहण के योग्य है, क्योंकि इससे पूर्व संयम के योग्य अविकसित एवं अपरिपक्व मनोदशा मानी है। **(स)** अवसर्पिणी काल के 3-4-5 आरे तथा उत्सर्पिणी काल के 3-4 आरे में संयम ग्रहण किया जाता है। तीसरा आरा पूर्ण होने के पूर्व तक संयम ग्रहण के अयोग्य काल है, क्योंकि उस समय प्रकृति का वातावरण अत्यन्त स्निग्ध होने से युगलिक मनुष्य कल्पवृक्ष से अपनी आवश्यकताओं की सम्पूर्ति करते हैं। छठे आरे में अत्यन्त रुक्ष प्रकृति होने से वहाँ भी अग्नि का अस्तित्व नहीं है। काल को कारण मानने का हेतु यह है कि मनुष्य धैर्य रखना सीखे अन्यथा क्रिया करने के साथ फल पाने की इच्छा रखकर काम किया जाए तो हताश होना पड़ता है, क्योंकि तत्काल फल नहीं मिलता। मेरा परिश्रम निष्फल रहा, यह सोचकर वह कार्य करना ही छोड़ देता है। यदि काल को कारण माने तो अधीरता नहीं रहेगी और काल को कारण समझ कर वह सन्तोष रख सकता है।

कर्म-पूर्वकृत कर्म का विषय अधिकांश सजीव वस्तु से सम्बन्धित है। श्री कृष्ण वासुदेव अप्रत्याख्यानी कषाय के उदय के कारण अपनी विवशता प्रकट करते हैं कि धन्य है जालि, मयालि, उवयालि कुमार, जिन्होंने संयम अङ्गीकार किया, मैं अधन्य और अकृतपुण्य हूँ जो मनुष्य सम्बन्धित काम भोगों में गृद्ध हूँ और व्रत-प्रत्याख्यान नहीं ले पा रहा हूँ। दूसरी तरफ सुदर्शन श्रमणोपासक अप्रत्याख्यान कषाय के क्षयोपशम के प्रभाव से श्रावक व्रतों की श्रेष्ठ आराधना करने वाला, जीवादि तत्त्वों के ज्ञान का धारक, प्रियधर्मी-दृढ़धर्मी, धर्म के प्रति अटूट आस्था वाला, मरण भय त्यागकर प्रभु वीर दर्शन का उत्कृष्ट अभिलाषी परम करुणावान है। जो स्वयं पैदल ही प्रभु को वन्दन करने हेतु अपने घर से निकले ऐसे श्रमणोपासक भी प्रत्याख्यान कषाय का उदय कमजोर न कर पाए, जबकि 1141 की हत्या करने वाले अर्जुनमाली ने कर्म उदय कमजोर करके दीक्षा ले ली। कर्मसिद्धान्त की भाषा में कहें-7 कर्मों की स्थिति 1 कोटाकोटि सागरोपम में पल का असंख्यात भाग कम होने पर समकित, पृथक्त्व पल्योपम कम होने पर

देशविरति, संख्यात सागरोपम कम होने पर सर्व विरति, और अधिक संख्यात सागरोपम कम होने पर उपशम श्रेणी, और अधिक संख्यात सागरोपम कम होने पर क्षपक श्रेणी होती है। भगवतीसूत्र शतक 9 उद्देशक 31 में कहा है कि धर्मान्तराय कर्म के क्षयोपशम होने से चारित्र अवस्था धारण होती है। धर्मान्तराय से तात्पर्य चारित्र में अन्तराय देने वाले कर्म से है। अन्य शब्दों में कहें तो वीर्यान्तराय कर्म के मन्द क्षयोपशम एवं चारित्र मोहनीयकर्म के प्रत्याख्यानावरण कषाय के उदय से है।

कुछ लोग यह सोच कर कि कर्म में लिखा है वही होगा, इससे न्यूनाधिक नहीं हो सकता। इस प्रकार कर्म को स्वतन्त्र कारण मानने की भूल करते हैं। कर्म को स्वतन्त्र कारण मानने से पुरुषार्थ छोड़कर आलसी-अकर्मण्य बन सकते हैं और धर्म-कर्म से भ्रष्ट हो सकते हैं। दूसरी बात-यदि पूर्वकृत कर्म को मानते हैं तो विपत्ति के समय कृत पाप का फल मानकर सन्तोष कर लेते हैं एवं सुख-दुःख में समभाव रख सकते हैं। यदि पूर्वकृत कर्म न मानें तो सन्तोष धारण नहीं कर सकते। धैर्य धारण करने का कोई निमित्त नहीं रहता; फलत: आर्त्त ध्यान, रौद्र ध्यान करते रहते हैं। अत: पूर्वकृत कर्म का कारण चारित्र-पालन में बहुत उपयोगी है।

पुरुषार्थ-पुरुषार्थ की प्रामाणिकता हेतु श्रमण भगवान महावीर प्रभु के वचन ही पर्याप्त हैं। उपासकदशांगसूत्र में कुण्डकौलिक एवं देव के संवाद में कुण्डकौलिक ने देवता के नियति सिद्धान्त का खण्डन करते हुए उत्थान-कर्म-बलवीर्य-पुरुषार्थ पराक्रम के सिद्धान्त का मण्डन कर उसे निरुत्तर किया। शकडाल ने जब प्रभु वीर से कहा कि ये मिट्टी के बर्तन नियति के अधीन हैं तब प्रभु ने कहा-"यदि कोई इनको तोड़ेगा तो उसे दण्ड दोगे?" शकडाल-हाँ। तब प्रभु ने शकडाल पुत्र को कहा-"तुम अपने सिद्धान्त अनुसार उस पुरुष को दण्ड नहीं दे सकते हो। कारण तुम्हारे मत से बरतनों का फूटना आदि नियति के अधीन है। फिर उस पुरुष पर क्रोध क्यों करना? मारना क्यों? ऐसा करके तुम अपने सिद्धान्त के विरुद्ध आचरण करके पुरुषार्थ को ही मान्य कर लोगे।" उत्थान, कर्म, बल, वीर्य आदि अपने करने से होते हैं ऐसा कहकर भगवान ने पुरुषार्थ की महत्ता सिद्ध की।

संयम-प्राप्ति में पुरुषार्थ की भूमिका

सयंम की प्राप्ति में पुरुषार्थ के अनेक उदाहरण हैं। 1. **उत्तराध्ययन 10वाँ अध्ययन**-श्रद्धा-रुचि-प्रतीति की कमी से संयम-प्राप्ति नहीं होती एवं धर्म भावना भाने से उत्तरोत्तर वृद्धि होती है। 2. निर्दोष आहार-पानी बहराने से। 3. रात्रि में धर्म जागरण करने से। 4. अनुप्रेक्षा करने से। (उत्तराध्ययनसूत्र 29/25) 5. नश्वरता का बोध होने से अथवा अनित्य भावना भाने से। 6. बाह्य-आभ्यन्तर संयोगों का त्याग करने से। 7. मनोरथ का चिन्तन करने से। (ठाणं 3/2) 8. वाचना करने से (29/19) महानिर्जरा-महापर्यवसन होता है।

अन्त में हमारा संकल्प हो....
जन्म भले मेरा निर्वस्त्र हो,
पर मरण मेरा सफेद वस्त्र (संयम वेश) में हो।
जन्म भले मेरा रोते-रोते हुआ,
पर मरण मेरा हँसते-हँसते (संयम भाव) में हो।
जन्म भले मेरा माँ की गोद में हो,
पर मरण मेरा गुरु की गोद में हो।
जन्म भले मेरा मेटर्निटि हॉल में हुआ,
पर मरण स्थानक/उपासरे में हो।
जन्म भले मेरा अव्रती बनकर हुआ,
परन्तु मैं पण्डित-मरण को वरण करूँ...।।

- आवश्यकता जीवन को चलाने के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन को बिगाड़ने वाली है। इच्छाओं पर नियन्त्रण आवश्यक है।
- चार स्थान ऐसे हैं जो कितने भी भरे जाएँ, किन्तु सदा अपूर्ण ही रहते हैं-1. सागर, 2. श्मशान, 3. पेट और 4. तृष्णा। *-आचार्यश्री हीरा*

ISSN 2249-2011

पाण्डुलिपि

अपभ्रंश का अभिनव चरित ग्रन्थ : संतिणाहचरिउ

प्रोफेसर प्रेम सुमन जैन

अपभ्रंश के विशाल और विलुप्त साहित्य को प्रकाश में लाने का प्रथम श्रेय जर्मनी के सुप्रसिद्ध भाषाशास्त्री रिचर्ड पिशेल और डॉ. हर्मन याकोबी को प्राप्त है। इन दोनों विद्वानों के अथक श्रम से हिन्दी, गुजराती, मराठी और बंगला में अपभ्रंश भाषा और साहित्य सम्बन्धी अध्ययन, अनुसंधान, सम्पादन और प्रकाशन का पथ प्रशस्त हुआ और अपभ्रंश की शताधिक रचनाएँ विनष्ट और विलुप्त होने से बचा ली गयीं। इनके अतिरिक्त जार्ज ग्रियर्सन, भाण्डारकर, मुनि जिनविजय, प्रो. हरिवल्लभ चुन्नीलाल भायाणी, प्रो. हरि दामोदर वेलणकर, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. पी. एल. वैद्य, डॉ. ए. एन. उपाध्ये, डॉ. हीरा लाल जैन, पण्डित परमानन्द शास्त्री, डॉ. हरिवंश कोछड़, डॉ. शिवप्रसाद सिंह, डॉ. नामवर सिंह, डॉ. वीरेन्द्र श्रीवास्तव, डॉ. रामसिंह तोमर, डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, डॉ. राजा राम जैन, डॉ. कमलचन्द सोगाणी और डॉ. देवेन्द्र कुमार शास्त्री[1] आदि विद्वानों के अपभ्रंश सम्बन्धी अध्ययन और अनुसन्धान ने पाठकों और अनुसंधित्सुओं के मन में अपभ्रंश के प्रति विशेष आकर्षण उत्पन्न किया है।

अपभ्रंश प्राचीन भारतीय आर्यभाषाओं तथा नव्य भारतीय आर्य भाषाओं के बीच की कड़ी है, जो नव्य भारतीय आर्य भाषाओं की पुरोगामिनी कही जाती है। यह प्राकृतों की उस अन्तिम अवस्था का विकास है, जिस में जन-जन की भावनाओं का समवेत स्वर अपने वास्तविक रूप में मुखरित हुआ है। अतएव एक ओर जहाँ अपभ्रंश-भाषा और साहित्य उपलब्ध रूप में प्राकृत की परम्परा में विकसित हुआ है, वहीं दूसरी ओर लोक बोली तथा जीवन के सामञ्जस्य का प्रतिनिधित्व करता है।

अपभ्रंश साहित्य के मुख्य तीन भाग हैं- प्रबन्ध-काव्य, खण्ड-काव्य और मुक्तक-काव्य। प्रबन्धकाव्य, पुराणकाव्य और चरितकाव्य के रूप में उपलब्ध है। पुराणकाव्य, एक प्रकार से चरितकाव्यों का संग्रह है। चरितकाव्य के दो भेद सम्भव हैं- धार्मिक चरितकाव्य और रोमांटिककाव्य। एक में धर्म का अनुशासन अपेक्षाकृत अधिक रहता है जबकि दूसरे में ऐहिकता और स्वच्छन्दता का। संस्कृत जैन पुराण काव्यों एवं अपभ्रंश चरितकाव्यों की मूल प्रवृत्तियाँ समान हैं, परन्तु शैली-शिल्प और नियोजन में अन्तर है। चरितकाव्य का उद्देश्य उन जैन महापुरुषों का चरित चित्रण करना है जो जीवन में चार पुरुषार्थों को सिद्ध करते हैं। इनमें आध्यात्मिकता और काव्यचेतना का समन्वय है।[2]

चरिउ काव्य की परम्परा

डॉ. महेन्द्रसागर प्रचंडिया के अनुसार अपभ्रंश में 'चरिउ' (चरित) एक सशक्त काव्य रूप है। चरिउ का मूल उद्‌गम अपभ्रंश के आरम्भकाल में हुआ है। किसी पौराणिक पुरुष तथा धार्मिक महापुरुष का जीवनवृत्त और वृत्ति वैशिष्ट्य का कथात्मक शैली में रचा गया चरित वस्तुतः चरितकाव्य है।[3] चरित अथवा चरित्र का अपभ्रंशरूप 'चरिउ' कहलाता है। चरित्र शब्द का सामान्य अर्थ और अभिप्राय है-रहन-सहन, आचरण, किसी जीवन की विशेष घटनाओं और कार्यों आदि का वर्णन करना। चरिउ-काव्य में प्रबन्ध और पुराण

काव्य-रूपों का मिश्रित रूप सम्मिलित है। चरित काव्य-रूप के निर्धारण में अपभ्रंश साहित्य के धार्मिक चरित्र काव्यों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

अपभ्रंश के कतिपय चरितकाव्य निम्नलिखित हैं-पउमचरिउ, णायकुमारचरिउ, जसहरचरिउ, सुदंसणचरिउ, जंबूसामिचरिउ, सुकुमालचरिउ, बड्ढमाणचरिउ, पासणाहचरिउ (श्रीधर), णेमिणाह चरिउ, पउमसिरिचरिउ, करकण्डचरिउ, नेमीनाथचरित (अमरकीर्ति), संभवणाहचरिउ, चंदप्पहचरिउ, संतिणाहचरिउ, बाहुबलिदेवचरिउ, पज्जुण्णचरिउ, सम्मइजिणचरिउ, प्रद्युम्नचरित (सिंह), मल्लिनाथचरित (जिनप्रभसूरि), जीवंधरचरिउ, सुकोसलचरिउ, मेहेसरचरिउ, यशोधरचरित (रइधू) आदि।[4]

संतिणाहचरिउ ग्रन्थ की पाण्डुलिपियाँ

अपभ्रंश एवं प्राकृत के 'संतिणाहचरिउ' (संतिणाहचरियं) ग्रन्थ की निम्न पाण्डुलिपियों की जानकारी मिलती है[5]-

1. संतिणाहचरिउ : कवि ठाकुरसी; रचनाकाल विक्रम सम्वत् 1652, पूर्ण, जयपुर में उपलब्ध है।
2. संतिणाहचरिउ : कवि देवदत्त; रचनाकाल विक्रम सम्वत् 1050 (यह प्रति अभी तक अनुपलब्ध है, मात्र उल्लेख है।)
3. संतिणाहचरियं : कवि देवचन्द्र सूरि; रचनाकाल 1160, प्राकृत कृति है जो प्रकाशित हो गई।
4. संतिणाहचरिउ : कवि रइधू; 15वीं-16वीं शती, अपूर्ण, किन्तु सचित्र है।
5. संतिणाहचरिउ : कवि शुभकीर्ति देव; सरस्वती भवन, नागौर में उपलब्ध है।
6. संतिणाहचरिउ : श्रीधर (यह प्रति अभी तक अनुपलब्ध है, मात्र उल्लेख है।)
7. संतिणाहचरिउ : कवि महिन्दु; रचनाकाल 1534 ईस्वी, दो प्रतियों के आधार पर सम्पादन-अनुवाद किया जा रहा है।

इनमें से तीन पाण्डुलिपियों का संक्षेप में परिचय देकर महिन्दु द्वारा रचित पाण्डुलिपि की चर्चा की जाएगी।

संतिणाहचरिउ-महाकवि रइधू

रइधू कृत संतिणाहचरिउ के उपलब्ध अंश में भगवान् शान्तिनाथ के ज्ञान-कल्याणक तक का वर्णन मिलता है। जिससे विदित होता है कि इस ग्रन्थ का परिमाण 10-11 सन्धियों तक का होना चाहिए। क्योंकि ज्ञान-कल्याणक के बाद समवसरण में तत्त्वचर्चा, मोक्षगमन एवं प्रशस्ति प्रभृति प्रकरणों का विस्तार 2-3 सन्धियों तक होना सम्भव है। प्राप्त अंश का विषय-वर्गीकरण इस प्रकार है-पहली सन्धि-राजा श्रेणिक का समवसरण में जाना एवं गणधर से शान्तिनाथ-चरित सम्बन्धी प्रश्न करना। दूसरी सन्धि-राजा श्रीविजय का अभ्युदय वर्णन। तीसरी सन्धि-श्रीविजय एवं अमिततेज के भवान्तर-वर्णन। चौथी सन्धि-बलभद्र एवं अनन्तवीर्य के अभ्युदयों का वर्णन। पाँचवीं सन्धि-राजा मेघरथ-वर्णन। छठी सन्धि-शान्तिनाथ के गर्भ एवं जन्म-कल्याणकों के वर्णन। सातवीं सन्धि-शान्तिनाथ का राजभोग-वर्णन। आठवीं सन्धि-शान्तिनाथ के तप एवं ज्ञानकल्याणक-वर्णन।[6]

इस 'संतिणाहचरिउ' की भाषा अपभ्रंश है। इसमें कवि ने परिनिष्ठित अपभ्रंश का प्रयोग किया है, किन्तु काल एवं परिस्थिति विशेष से इसमें कई ऐसे शब्द भी प्रयुक्त हैं, जिनका व्यवहार आज भी आधुनिक भारतीय भाषाओं विशेषतया रइधू के पार्श्ववर्त्ती प्रदेशों-ब्रज, बुन्देली एवं बघेली में होता है। ऐसे शब्दों में कुछ निम्न प्रकार हैं-रित्तउ-रीता-खाली (2/9/8), जेठी-बड़ी (3/16/3), पठावहु-पठाना-भेजना (4/3/9), चक्की (7/5/10), चमक्क (7/4/12), फल-फूल (7/9/8), चप्पइ-चांपना (8/1/9), धुन (6/1/10), ठेल-ठेलना (2/9/7), थाल (2/9/10), पखालि-पखारकर-

धोकर (2/9/10) आदि।[7]

संतिणाहचरिउ-शुभकीर्त्ति

शुभकीर्त्ति इस अपभ्रंश शान्तिनाथचरित के रचयिता हैं। इस चरितकाव्य में ग्रन्थकर्त्ता का किसी भी प्रकार का परिचय प्राप्त नहीं है। ग्रन्थ की पुष्पिका में निम्नलिखित वाक्य उपलब्ध होता है- 'उहयभासाचक्कवट्टि सुहकित्तिदेवविरइये' अर्थात् ग्रन्थ रचयिता संस्कृत और अपभ्रंश दोनों भाषाओं के निष्णात विद्वान् थे। कवि ने ग्रन्थ के अन्त में देवीकीर्ति का उल्लेख किया है। उपलब्ध शान्तिनाथ-चरित की प्रति विक्रम सम्वत् 1551 में लिखी गयी है। अतः इसका रचनाकाल इसके पूर्ववर्त्ती होना चाहिये। देवकीर्ति का समय विक्रम सम्वत् 1494 है, अतः बहुत सम्भव है कि शुभकीर्ति इनके समकालीन रहे हों। इस प्रकार उनका समय विक्रम सम्वत् की 15वीं शताब्दी हो सकता है।

शुभकीर्ति द्वारा विरचित इस शान्तिनाथचरित ग्रन्थ की पाण्डुलिपि नागौर के शास्त्र भण्डार में सुरक्षित है। यह ग्रन्थ 19 सन्धियों में पूर्ण हुआ है। इसमें 16वें तीर्थंकर शान्तिनाथ का जीवनचरित्र वर्णित है। शान्तिनाथ पंचम चक्रवर्ती भी थे। इन्होंने षट्खण्डों को जीतकर चक्रवर्ती पद प्राप्त किया था। पश्चात् दीक्षा लेकर तपश्चरणरूप समाधिचक्र से महादुर्जय मोहकर्म का विनाश कर केवलज्ञान प्राप्त किया और अन्त में अघातिया-कर्मों का नाश करके अचल-अविनाशी सिद्धपद को प्राप्त किया। ग्रन्थ के आरम्भ में आचार्य ने गौतम गणधर, जिनसेन, पुष्पदन्त का स्मरण किया है और बताया है कि जिस चरित को जिनराज ने गौतम गणधर से कहा, उस चरित को जिनसेन और पुष्पदन्त ने अपने ग्रन्थों में निबद्ध किया। उसी चरित को शुभकीर्ति रूपचन्द और पुष्पदन्त ने अपने ग्रन्थों में निबद्ध किया। उसी चरित को शुभकीर्ति रूपचन्द के अनुरोध से निबद्ध करते हैं।

शुभकीर्ति का समय निश्चितरूप से विक्रम सम्वत् की 15वीं शताब्दी है और उनका शान्तिनाथचरित महाकाव्य है। इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही महाकाव्योचित उपकरणों का निर्देश करते हुए शब्दालंकार और अर्थालंकारों के साथ गुण, रीति और रसभावों को महत्त्व दिया गया है। सिद्धान्त विषयों के परिचय प्रसंग में गुणस्थान, मार्गणा, ध्यान एवं तपों का विवेचन किया गया है। इससे स्पष्ट है कि काव्य, सिद्धान्त और आचार इन तीनों की त्रिवेणी इस ग्रन्थ में पायी जाती है।[8]

संतिणाहचरिउ-शाह ठाकुर

रचना में इनका नाम शाह ठाकुर मिलता है। अभी तक इनकी दो रचनाएँ ही उपलब्ध हो सकी हैं। एक अपभ्रंश में निबद्ध है और दूसरी हिन्दी भाषा में। 'शान्तिनाथचरित' एक अपभ्रंश काव्य है। यह पाँच सन्धियों में निबद्ध है। कवि की दूसरी रचना 'महापुराणकलिका' है, जो 27 सन्धियों में विरचित एक हिन्दी प्रबन्धकाव्य है। 'शान्तिनाथचरित' में सोलहवें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ का संक्षेप में जीवनचरित वर्णित है। कवि ने यह प्रबन्धकाव्य विक्रम सम्वत् 1652 में भाद्रपद शुक्ल पंचमी के दिन चकत्तावंश के जलालुद्दीन अकबर बादशाह के शासनकाल में ढूंढ़ाड देश के कच्छपवंशी राजा मानसिंह के राज्य में लिखा था। तब राजा मानसिंह की राजधानी अम्बावती/आमेर में थी।

कवि ठाकुर 16वीं शताब्दी के अपभ्रंश तथा हिन्दी भाषा के कवि थे। इनका जन्म स्थान चाकसू (राजस्थान), जाति खण्डेलवाल तथा गोत्र अजमेरा था। इनके पिता का नाम घेल्ह था, जो स्वयं एक अच्छे कवि थे। कवि का रचनाकाल विक्रम सम्वत् 1578-1585 कहा गया है। पण्डित परमानन्दजी शास्त्री के अनुसार कवि ने विक्रम सम्वत् 1578 में 'पारससवण सत्ताइसी' नामक एक ग्रन्थ की रचना

की थी, जो ऐतिहासिक घटना को प्रस्तुत करती है और कवि ने स्वयं का आँखों देखा वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त 'जिनचउवीसी', कृपणचरित्र (विक्रम सम्वत् 1580) 'पंचेद्रियबेलि' (विक्रम सम्वत् 1585) और नेमीश्वर की बेली आदि की रचना भी की थी।[9]

संतिणाहचरिउ-महिन्दु या महाचन्द्र

'संतिणाहचरिउ' ग्रन्थ के कर्त्ता कवि महिन्दु या महाचन्द्र हैं। इस ग्रन्थ में 13 परिच्छेद हैं जिनकी आनुमानिक श्लोक संख्या पाँच हजार के लगभग है, जिनमें जैन परम्परा के 16वें तीर्थंकर शान्तिनाथ चक्रवर्ती का चरित्र दिया हुआ है। शान्तिनाथ चक्रवर्ती, कामदेव और धर्मचक्री थे, जिन्होंने चक्रवर्ती के अनेक उत्तमोत्तम भोग-भोगे। उन्होंने अन्त में इन्द्रिय-विषयों को दुःखद जानकर देह-भोगों से विरक्त होकर दीक्षा धारण करके तपश्चरण किया और समाधिरूप चक्र से कर्म-शत्रुओं को विनष्ट करके वे धर्मचक्री बने। विविध देशों में विहार करके उन्होंने जगत को कल्याण का मार्ग बतलाया। तदनन्तर वे अवशिष्ट अघातिकर्म का विनाश कर आत्मानन्द में निमग्न हो गए।

कवि महिन्दु ने इस 'संतिणाहचरिउ' ग्रन्थ को विक्रम सम्वत् 1587 की कार्तिक कृष्णा पंचमी के दिन मुगल बादशाह बाबर के राज्यकाल में बनाकर समाप्त किया था। कवि ने अपने से पूर्ववर्ती निम्न विद्वान् कवियों का स्मरण किया है-अकलंक, पूज्यपाद (देवनन्दी), नेमिचन्द्र सैद्धान्तिक, चतुर्मुख, स्वयंभू, पुष्पदंत, यशःकीर्ति, रइधू, गुणभद्रसूरि और सहनपाल। इनमें से कवि सहनपाल का कोई ग्रन्थ अभी तक देखने में नहीं आया। कवि महिन्दु ने इस ग्रन्थ में चौपाई, पद्धड़िया और सोरठा आदि अनेक छन्दों का प्रयोग किया है।

कवि महिन्दु या महाचन्द्र इल्लराज के पुत्र हैं। इससे अधिक इनके परिचय के सम्बन्ध में कुछ भी प्राप्त नहीं होता है। कवि ने 'संतिणाहचरिउ' की रचना के अन्त में अपने पिता का नामोल्लेख किया है-

भो सुणु बुद्धीसर वरमहि दुहुहर,
इल्लराजसुअ णारिवज्जइ।
सण्णाणसुअ साहारण दोसी,
णिवारण वरणेरहि धारिज्जइ।।

पुष्पिका वाक्य से भी इल्लराज का पुत्र प्रकट होता है। ग्रन्थ प्रशस्ति में कवि ने योगिनीपुर (दिल्ली) का सामान्य परिचय कराते हुए काष्ठासंघ के माथुरगच्छ और पुष्करगण के तीन भट्टारकों का नामोल्लेख किया है-यशःकीर्ति, मलयकीर्ति और गुणभद्रसूरी। इसके पश्चात् ग्रन्थ की रचना कराने वाले साधारण नामक अग्रवाल श्रावक के वंशादि का वर्णन किया है। कवि ने 'संतिणाहचरिउ' का रचनाकाल स्वयं ही बतलाया है-

विक्कमरायहु ववगय-कालइ,
रिसि-वसु-सर-भूवि अकालइ।
कत्तिय-पढम-पक्खि पंचमि-दिणी,
हुउ परिपुण्ण वि उग्गंतइ इणि।।

अर्थात् इस ग्रन्थ की रचना विक्रम सम्वत् 1587 कार्तिक कृष्ण पंचमी मुगल बादशाह बाबर के राज्य काल में हुई। अपभ्रंश के चरितकाव्यों की परम्परा में 'संतिणाहचरिउ' ग्रन्थ एक अभिनव कृति है। इसके कर्त्ता कवि महिन्दु या महाचन्द्र हैं। इसकी अभी तक दो पाण्डुलिपियों का पता चला है, जो पूर्ण हैं। एक प्रति श्री दिगम्बर जैन ऐलक पन्नालाल सरस्वती भवन, ब्यावर में 104 पन्ने की है तथा दूसरी प्रति 153 पन्ने की श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सरस्वती भण्डार धर्मपुरा, दिल्ली में है। हमने कई वर्ष पूर्व ग्रन्थ-भण्डारों का सर्वेक्षण करते समय इन दोनों पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपि प्रतियाँ वहाँ के जैन समाज के सहयोग से प्राप्त की थी। उनका सम्पादन-कार्य हमने अब सम्पन्न किया है। हिन्दी अनुवाद का कार्य चालू है। लगभग 500 पृष्ठों की यह पुस्तक लगभग 5-6 माह में तैयार हो जायेगी।

सन्दर्भ

1. (क) शास्त्री देवेन्द्र कुमार, अपभ्रंश भाषा एवं साहित्य की शोध प्रवृत्तियाँ, पृष्ठ 87-88
   (ख) सिंह, नामवर, हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग, पृष्ठ 50 आदि
2. जैन, प्रेम सुमन, अपभ्रंश साहित्य का इतिहास, लाड़नूँ, 2019, पृष्ठ 224
3. प्रचंडिया, महेन्द्रसागर, जैन हिन्दी कवियों के काव्य का काव्यशास्त्रीय अध्ययन, प्रथम अध्याय
4. सोगाणी, कमलचन्द, अपभ्रंश : एक परिचय (2000), पृष्ठ 16
5. जैन, प्रेमसुमन, सम्पादक, सुकुमालसामिचरिउ (विबुध श्रीधर), जयपुर, (2005), पृष्ठ 30-36 आदि
6. वड्ढमाणचरिउ (विबुध श्रीधर), सम्पा. जैन, राजाराम, नई दिल्ली, (1975), प्रस्तावना
7. जैन, प्रेमसुमन, अपभ्रंश साहित्य का इतिहास, लाड़नूँ, 2019, पृष्ठ 318
8. शास्त्री, नेमिचन्द्र, तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा, भाग 4, पृष्ठ 95
9. अपभ्रंश काव्य णेमिणाहचरिउ (लखमदेव), सम्पादक जैन, सरोज, दिल्ली, (2011), पृष्ठ 106

-29, विद्या विहार कॉलोनी, उत्तरी सुन्दरवास, उदयपुर-313003 (राजस्थान)

सोचना है तो बड़ा सोचो

श्री निपुण डागा

सोचना है तो बड़ा सोचो
छोटा सोचने से क्या होगा?
करना है तो बड़ा करो
छोटा करने से क्या होगा?

नहीं किया अब तक जो, अब करो
बैठे रहने से क्या होगा?
हस्ती ज़िन्दा रखनी है तो कुछ मस्ती करो
जबरदस्ती ज़िन्दा रहने से क्या होगा?

कामयाबी पानी है तो मन को जीतो
उसका दास बनने से क्या होगा?
श्रद्धा करनी है तो सौ प्रतिशत करो
हर जगह माथा टेकने से क्या होगा?

गुरु मिल गए तो समर्पण करो
खुद को कुछ समझने से क्या होगा?
गलती करी है तो स्वीकार करो
ज़हर की गाँठ भी बाँधने से क्या होगा?

मारना है तो इच्छाओं को मारो
इच्छा सहित मृत्यु से क्या होगा?
जानना है तो स्वयं को जानो
दूसरों को जानकर आखिर क्या होगा?

आक्रोश लाना है तो खुद की गलतियों पर लाओ
जाति-मज़हब पर खून उबालने से क्या होगा?
चुनौतियाँ देकर कुछ अलग हटकर करो
जो अब तक किया है उसे ही करने से क्या होगा?

सहना है तो हँसकर सहो
व्यर्थ रोते रहने से क्या होगा?
जो हो रहा है उसे स्वीकार करें
तनाव दबाव से क्या होगा?

गुरु से सीखा है तो कुछ आचरण में भी लाओ
केवल उनके शिष्य कहलाने से क्या होगा?
ग्रह कुंडली में अच्छे हैं तो महान् कार्य करके दिखाओ
केवल पण्डितों के चक्कर लगाने से क्या होगा?

कृपा मिली है गुरु की तो कुछ करके दिखाओ
निपुण नाम रखने से आखिर क्या होगा?

-बी 13, सेठी कॉलोनी, शिवालय मार्ग, आदर्श नगर, आगरा रोड, जयपुर-302004 (राजस्थान)

ISSN 2249-2011

English-section

A Bird's Eye-View on Jainism

Dr. Priyadarshana Jain, Namrata Jain

Antiquity of Jainism

Jainism is one of the oldest living religions of the world, whose antiquity is traced to pre-historic times. When one hears about Jainism, the first words that ring in one's mind are *Ahimsa* i.e., non-violence, peace, vegetarianism and compassion. In this jet age of nuclear and biological weapons, threatened by terrorism and silent wars, gripped by fear and insecurity, where violence is the order of the day, crime rate is on the rise, and the potential for frustration looms larger than the promise of faith. It is indeed soothing that a reflection on Jaina Heritage comes as a breeze of fresh air. Jainism is a way of life practiced, preached and propagated by the Tirthankaras. Bhagwan Mahavira was the last of the 24 Tirthankaras, whose immediate predecessor was Bhagwan Parshvanatha who lived 200 years before Bhagwan Mahavira and is established as a historical figure. References of Bhagwan Rishabhadeva, who is regarded as Adi Tirthankar, Adi rishi, Adi muni is the first Tirthankara, the first enlightened one and the first saint, are found in the Harappa-Mohanjadaro excavations. Mahavira is not the founder of Jainism as is generally understood. He was last of the legendary Tirthankaras.

Jainism older than Buddhism

It is true that Mahavira and Gautama Buddha were contemporaries but Jainism was firmly established at the time of Gautama Buddha and he himself took shelter under a Jain monk to find the truth. Dr. K.P. Jaiswal, who has made a deep study in this matter observed: "Jainism had already entered Orissa as early as the time of King Nanda before the time of Kharvela. There were temples of Arahants and Siddhas on the Udaigiri hills. This place is mentioned as the institution in the inscriptions, which had been in existence before Kharvela's time. It seems that Jainism had been the national religion of Orissa (Kalinga) for some centuries". After the victory over Kalinga, Ashoka established Buddhism there. This proves that Jainism is much older than Buddhism.

Hinduism and Jainism

Jainism was in existence long before the period of Mahabharata, Ramayana and even during the Vedic period. Jainism is a pre-vedic religion and belongs to the Sramanic current of thought. Shri Ram was born after the 20th Tirthankara Muni Suvratanatha, Vasudeva Srikrishna was the cousin of 22nd Tirthankara Neminatha. Not this but almost all the Hindu sacred books frequently mention the names of Jinendra (Tirthankara) with great honor and respect and references of these can be traced in the Vedas and Puranas.(For more references on this read Compendium of Jainism by Justice T.k.Tukol and other sources)

Jainism during the Indus Valley civilization

The discovery of Indus valley civilization proves the antiquity of Jainism. Some nude images and figures on the seals have been found at Mohenjo-Daro and Harappa. Images of Jinas in a meditation posture is a special quality of Jain practitioners of the Digambar sect. Some statues are found in meditation pose, half closed eyes being fixed on tip of the nose in both sitting and standing poses.

II. HISTORY

Kaal-chakra (time-cycle)

According to Jain belief, time moves in a linear direction but measured in cyclic form. It is divided into infinite time cycles (Kaal-chakra). Every time cycle is further sub-divided into two equal halves. The first half is the regressive cycle or the descending order is called *Avsarpini Kaal*. The other half is the progressive cycle or the ascending order is called *Utsarpini Kaal*. Every *Utsarpini* and *Avsarpini* is further divided into six unequal periods called *aras*. They are :

- *Sukham-Sukham* (happy-happy)
- *Sukhan* (happy)
- *Sukham-Dukham* (happy-unhappy)
- *Dukham-Sukham* (unhappy-happy)
- *Dukham* (unhappy)
- *Dukham-Dukham*(very unhappy)

The current time we are living is the 5th*ara, Dukham Kal* of *Avasarpini Kaal* where happiness, development, etc decrease as time passes. When the *Avsarpini Kaal* ends the *Utsarpini Kaal* will begin and the situation will start from the worst to the best, meaning there will be progress in happiness, strength, values, and more.

Kulakaras

The life of a human being used to be totally different in the first 3 *Aras*. They were completely dependent on 10 types of *Kalpa-vriksha* (wish fulfilling trees) which used to provide them with necessary food, clothes, etc. When the 3rd*ara* was about to end, these *Kalpa-vrikshas* started vanishing and there came the *Kulakaras* (also known as manu) who taught people how to perform the laborious activities for survival. The number of these *Kulakaras* is said to be fourteen, the last of whom was Nabhiraj, the father of Rishabhdeva.

Tirthankara

The aim of every living being ought to be liberation from the cycle of life and death. Tirthankaras are great philosophers who teach the art of compassionate and enlightened living. They are the spiritual teachers who succeeded on the path of liberation by destroying all karmas and that is why they are called *Jina* or *Jinendra,* meaning a conqueror who has won over delusion, perversion, ignorance, passions, attachment, aversion, and the five senses. They then showed the path of liberation to the suffering mankind. In each time cycle, there are 24 Tirthankaras. In the current time cycle, Rishabhdev was the 1st Tirthankara and Mahavira was the last Tirthankara.

(a) Rishabha-The first Tirthankara of this era was Rishabha, also known as Adinath. His mother was Queen Maurdevi and his father was King Nabhiraj. The mother of a Tirthankara sees the 14/16 dreams the night before he is conceived. Rishabha was the King and founder of "Ikshvaku" dynasty. Rishabha is considered as the father of civilization and he taught the people *asi* (usage of weapons), *masi* (usage of writing material), *krishi* (agriculture), *vanijya* (trade), *vidya* (education)and *shilpa* (arts and crafts). After becoming an omniscient, Rishabha preached across the world. His divine preaching was recorded in fourteen scriptures called "*agamas*". He then became liberated.

He had two wives and hundred sons and two daughters. The name of the eldest son was Bharat who was a Chakravarli (Emperor). He later attained Moksha. India is called "Bharat" after this great ruler. Bahubali was the other son of Rishabhdeva who meditated profoundly before attaining liberation.

(b) Mahavira -Mahavira was the 24th Tirthankara of this era. His childhood name

was Vardhaman. He was born in the early part of the 6th century BCE in a royal Jain family in Bihar. The date assigned by historians is 599 to 527 BCE. His mother was Trishala and father was king Siddhartha. The Queen was devotee of 23rd Tirthankara Parshvanath. Mother Tirshla also saw 14/16 dreams the night before Vardhaman descended in her womb. Prince Vardhaman belonged to Ikshvaku dynasty. He renounced material life at the age of 30 to seek perfection and enlightenment. At the age of 42 he became enlightened and attained nirvana at the age of 72. His three great principles of Ahimsa (non-violence), Anekanta (non-absolutism) and Aparigraha (non-possession/non-attachment) are applicable for all times.

Sects

During the period of Chandra Gupta Maurya, famine struck northern parts of India for 12 years. Due to this, some monks migrated to south and some stayed in the north. From here, Jainism was divided into two, one called Digambar and another known as Shwetambar. Prior to this there was no sectarian divide in Jainism.

III. PHILOSOPHY

Metaphysics

Jain Metaphysics gives the concept of reality or *sat*. It deals with nine fundamental truths called "*Tattvas*". Without the proper knowledge of these Tattvas, a person cannot embark on the path of spirituality. The proper knowledge of Tattvas helps in understanding the nature of reality and the process of bondage and liberation. Right knowledge of both leads one on the path of Moksha.

(a) 9 Tattvas-The study of the nine reals (Tattvas) constitutes Jaina Metaphysics. All the reals are grouped as living (soul) and non-living (matter). The coming together of living and non-living causes infinite miseries of birth, death, old age, disease, etc. The root cause of this is ignorance and a perverted attitude. The 9 Tattvas are :

(I) ***Jiva (soul or living being)***-The nature of jiva/soul is pure and characterized by infinite knowledge, vision, etc. But this pure soul is conditioned and obscured by karmic particles due to its ignorance and delusion since time immemorial.

(ii) ***Ajiva (non-living)***-In this universe, anything other than the soul is ajiva, ie. non- living.

(iii) ***Asrava (influx of karma)***-Asrava is the cause that leads to the influx of good and evil karma which lead to the bondage of the soul.

(iv) ***Bandha (bondage of karma)***-Bandha is bondage of karmic matter to the soul. Karmic matter attaches to the soul due to its delusion, attachment, aversion and activities of mind, body, speech and that is why soul has to go through the cycle of birth and death.

(v) ***Punya (virtue/meritorious karma)***- Punya is the fruit of good activities of mind, body and speech. Auspicious karmic matter is termed as punya.

(vi) ***Paap (sin/demeritorious karma)***- The influx of karmic matter due to evil activities of the mind, body and speech with the potential of producing unpleasant stay in the mundane world is called paap/***sin/demeritorious karma.***

(vii) ***Samvara (stoppage of Karma)***- Stopping influx of karma from attaching to the soul is called samvara. This is opposite to Asrava. It can be accomplished by constant practice of right belief, observing of vows, passion-lessness etc which happens through deep contemplation and meditation.

(viii) ***Nirjara (shredding of karma)***-Shedding of previously bound karma is Nirjara. It can be done by rigorous austerities like

penance, scriptural study, service, meditation, etc.

(ix) ***Moksha (liberation)***-Complete elimination of karma is the liberation of the soul called Moksha. After attaining moksha soul never returns to the cycle of birth and death.

(b) **Theory of Karma-**We find everywhere inequality in all matter whether it is the matter of money, beauty, intelligence or anything. No two persons are same, why?

The theory of karma explains this question. It deals with process of bondage how karmas play role in one's life and how to get rid of them.

(c) **Process of bondage-**Non-living karmic particles are scattered in the entire cosmos. They are very fine particles that cannot be seen even through a microscope. When a soul acts with passions like attachment, anger, greed or ego; these karmic particles get attracted to the soul and are bound to the soul. These are called karmas and they are classified into eight types. Karmas are mainly of two types-

- **Dravya Karma-**The karmic particles bound with the soul are called Dravya Karma.
- **Bhava Karma-**The internal mental state of aversion, attachment etc., is called Bhava. Both karmas are mutually related as the seed and the sprout.

Epistemology

Jain epistemology talks of the five types of knowledge called pramana. Pramana is valid knowledge of reality. Reality is complex and you need different tools to understand that complex reality. Some of them are as follows:

(a) Anekantavada-Anekantavada is one of the most important principles of Jain philosophy. The meaning of Anekantavada is "Non-absolutism". According to Anekantavada reality is many-sided. It can be perceived differently from a different point of view and no single point of view is a complete truth. Jain philosophy holds that any object has infinite modes of existence and qualities and they cannot be completely grasped in all aspect by any person other than *omniscients*.

(b) Nayavada and Syadvada- Nayavada means the doctrine of view points and Syadvada means doctrine of addressing reality relatively. Nayavada states that every statement can have some truth and that should be examined through different stand points. For example a woman is a mother for her child but at the same time she is relatively a daughter, a sister or a wife. Syadvada helps in leading us to the ultimate certainty, where there is no scope for any doubt.

Jain Ethics

(a) Ratna Traya (Three Jewels)-The prerequisites to attain liberation which is the prime objective of Jainism is three-fold path of liberation. These three jewels are:

- *Samyak Darshan* (Right Faith)-Having firm faith in reality through knowledge of seven tattvas is *Samyak Darshan.* In simple terms it refers to self-realization.
- *Samyak Jnana* (Right Knowledge)-Having comprehension of the real nature of the self that is different from the body, mind and speech is *Samyak Jnana.*This requires true knowledge of the pure soul through six dravyas and tattvas.
- *Samyak Charitra* (Right conduct)-This is not possible without Right Faith and Right Knowledge. Right conduct is absorption in the pure self through observance of vows. On the foundations of ethics the grand palace of spirituality stands where in the great divinity of godhood manifests.

The ultimate goal of a Jain is to attain liberation which means being free from the cycle of life and death by destroying the accumulated karmas through self-realization and self-purification. So, Jain ethics aims to get rid of all the karmas and bind no more.

(b) Ethics-Jain ethics is considered a most glorious part of Jainism and handed down to their disciples and is for all living beings. The Tirthankara were great renunciates who observed the ethics and rigorous austerities for enlightenment. The basic duty of an individual is development of one's own self as well as assistance in upliftment of others. Jainism considers that there is life in earth, water, fire, air and plants besides animals and other creatures big and small. The entire Universe is filled with micro and macro creatures. The whole universe is inter-connected. Just as there are rules to be followed on the road and at a work place, there are prescribed rules for progressing on the pathway of liberation. The rules of conduct prescribed by Jainism have been divided into two categories:

1. Shravak Dharma (Householder ethics)
2. Muni Dharma (Ethics of ascetics)

Householder Ethics (Shravak_Dharma)

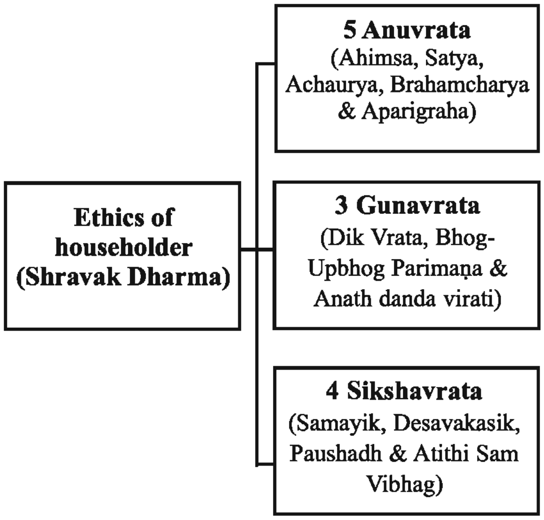

- *Ahimsa Anuvrata* (partial non-violence)
  This principle applies to all living beings. Violence is necessary for a householder to do the bare minimum mundane activities. The practices like cooking and farming are permissible acts of violence with conscious limitations. Intentional harm to any creature is completely forbidden.
- *Satya Anuvrat* (partial truthfulness)
  One should always tell the truth, in mind and audibly to others unless that truth would have no harm to another living being.
- *Achaurya Anuvrata* (partial non-stealing)
  Jains cannot take things that do not belong to them unless freely given. Taking others' things without their consent is classified as stealing.
- *Brahmacharya Anuvrata* (partial chasity)
  Householder should have relations only with their own spouse and even then, sexual experiences within the marriage should be limited. The sole reason for sexual activity is procreation and not pleasure.
- *Aparigraha Anuvrata:(*partial possessions*)*
  To sustain life and support the family existence some possessions are necessary. However, a householder should not earn more than needed to survive and should limit their possessions and attachments.
- *Dig-vrata* (limited movement of activity)
  This vow limits the ability for sinful life in the ten directions. It permits deviation from the *Anuvratas* to the boundaries of the physical world.
- *Bhoga-Upabhoga-ParimanaVrata* (limited use of consumable and non-consumable items)
  The enjoyment of consumable items such as food drink as well as non- consumable

item like house, furnishing is permitted in a limited scope, so that one cannot get attached to these items as attachment leads to the continuation of cycle of birth and death.

- *Anartha-danda Viramana Vrata* (avoidance of purpose less sin)
  Committing unnecessary sin like walking on grass, reading books that cause violence in one's mind, bodily activities like killing of animals and birds for food and pleasure, etc amount to great sin and so are to be given up.
- *Samayika Vrata* (equanimity/ meditation)
  This vow encourages householders to meditate for at least 48 minutes a day so that they can experience those 48 minutes as a pure soul without causing violence.
- *Desavakashika Vrata* (further limitations)
  As *Bhoga-Upabhoga Vrata* permits the enjoyment of objects within a limited capacity, this vow puts additional limits on days and times when these things can be enjoyed.
- *Paushada Vrata* (enhanced practice of equanimity/meditation)
  According to this vow, householders live periodically as ascetics. This provides training for ascetic life in future.
- *Atithisamvibhaga Vrata* (offering alms to the pious ascetics)
  This is the vow of charity. The householder should not prepare separate food for the ascetics but rather give some food that is prepared for oneself. This is his devotion for the ascetics, spiritual life and for renunciation.

Ethics of an ascetic (Muni Dharma)

There are mainly five great vows for ascetics known as *Mahavratas*, which are observed lifelong by them. The same vows are for a lay man known as *Anuvratas* and are followed with leniency by a layman. The five great vows are :

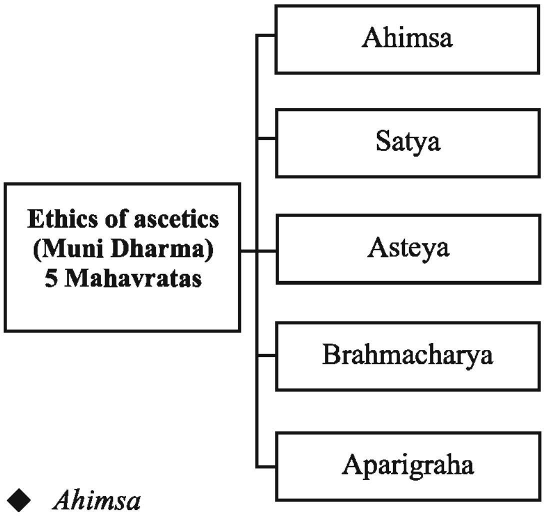

- *Ahimsa*
  Observing non-violence, i.e., not hurting any living being physically and mentally.
- *Satya*
  Speaking the truth in life and also never supporting a person who lies.
- *Asteya*
  Not to take anything without permission or in simple words not to steal anything.
- *Brahmacharya*
  Abstinence from sexual and sensual activities.
- *Aparigraha*
  Detachment from all worldly luxuries.

The above vows are followed by the ascetics in order to live a life without attachment and aversion and to be absorbed in the pure soul which in turn liberates them from the cycle of birth and death.

Jain Beliefs

- **Creator God :**
  According to Jainism, there is no creator god. This universe exists from infinite time and will exist forever. The universe is eternal. Nothing can be destroyed or

created in this universe but the modes keep changing.

- **Concept of God :**
  Though Jainism does not believe in creator god. It believes in godhood where one has destroyed all karmas and become liberated, the pure souls are gods/ *paramatma* (supreme soul) who enjoy infinite knowledge, infinite vision and infinite bliss, etc. Anybody who realizes their pure soul, eventually sheds the karmas and rises to the status of godhood.
- **Reincarnation :**
  A soul keeps taking birth due to his accumulated karmas. It can take birth in any form of life like human, animal, plant or in hell-heaven according to his karma earned in previous birth/time. When this soul destroys all karmas he becomes Siddha the accomplished personality of godhood.
- **Six dravyas :**
  According to Jain metaphysics this universe is made up of six substances called *dravyas* and they are soul *(jiva)*, matter (*pudgala*), passive cause of motion (*dharma*), passive cause of rest (*adharma*) space (*akash*) and time (*kaal*). These six *dravyas* are the building blocks of everything that exist in the whole universe. They will exist for ever but their modes keep changing.

Jain Practices

- **Ahimsa :**
  The whole doctrine of Jainism is based on Ahimsa. All religions emphasize on Ahimsa, But Jainism sees it in a very subtle aspect. Jainism says that harming anyone by the activity of mind, body, speech is also violence.
- **Food & eating habits :**
  Jains generally do not eat root vegetables like carrots, potatoes, onion because these vegetable contain micro organisms which cannot be seen by our naked eyes. They do not consume food after sun set as in the absence of sunlight infinite micro-organisms multiply. Jain food is food with least violence.
- **Fasting :**
  The soul does not need food, only the body needs. So the Jains take to long intermittent penances and fasting in order to detach from the body, mind and senses and realize the transcendental pure soul. The purpose of observing fast is to bring purity of mind and body so that practitioners can focus on Jain principles. It also helps in controlling the desires. There are many kinds of fasting like not having food the whole day (*upvasa*), eating one time a day (*ekasana*), eating having salt-less diet once a day (*ayambil*) etc. Fasting for the body is feasting for the soul and this practice is very popular among the Jains worldwide.
- **Samayika :**
  Samayika is the great practice of meditation for 48 minutes and the main goal is to acquire equanimity. This must be practiced by monks as well as householders.
- **Sallekhana :**
  Sallekhana is the practice of equanimity at the time of death and this is taken up to crush the karmic body which causes rebirth. When death is near due to disease or age or by any reason the practitioner starts reducing food and liquids gradually and also meditates on the nature of the self until the soul departs from the body. This should be taken up under expert guidance.
  If *Sallekhana* is done with full peace of mind, without any fear of death it arrests the influx of karmas and helps in the

shredding of old karmas. If the *jiva* is highly evolved he can eventually attain *nirvana.*

Festivals

Jain festivals are totally different from other religious festivals. These festivals are meant to give up attachment as much as possible. On the day of festivals Jain generally observe fasting according to one's capacity. The main festival of Jains is Paryushan/Dasa lakshana Parva which falls in the month of Bhadrapad according to Indian calendar which generally falls in August/September. During these 8/10 days people fast, pray, meditate, contemplate and study the scriptures. On the last day they seek forgiveness for all their wrong doings by saying "*Michhami Dukkadam*". Besides these festivals, Mahavira JanmaKalyanak, Raksha-bandhan, Akshay-tritiya, Shruta Panchami, Deepavali are also Jain festivals which are celebrated to enhance the spirit of non-violence and detachment and so fasting, charity, etc taken up rigorously on these days. The reason behind celebrating these festivals is different from other festivals.

Jain community

The Jaina community is a peace loving community and is proud that no war has taken place in the name of this great faith, although many Jain householders have fought for many just causes. It is a prosperous community, mostly into trade, business, agriculture etc., numbering around 40 million all over the globe. They run many charitable institutions and when compared to their small number the charity they carry out is proportionately large. They believe in selfless giving, charity in the form of food, shelter, books, and clothes, to the needy and spend crores in building temples, libraries, prayer halls. The women are given equal status and the caste-system is irrelevant in Jainism.

Jain health tips

Health is wealth. The mental health of a person is directly or indirectly influenced by the physical health. Jainism says that behind all good health is spiritual health. If the spiritual health of a person is good then the mind and physique can function smoothly. Good health is an attitude of the mind and so the Jains always think positive and are optimistic in life.Suicide and crime rate in the Jaina community is very minimal. The very ardent Jains do not eat after sunset and before sunrise because in the absence of the sun's rays the microbes are very active and cause indigestion and many health hazards.

The Jains boil the water to drink and avoid very spicy food. They undertake rigorous fasts throughout the year especially during the four months of the rainy season when vegetation is very active and violence become inevitable. They follow a life of simple living and high thinking. They lead a life of contentment and self-restraint thereby finding ample time, opportunity and facility to carry out their philanthropic and spiritual activities.

Jain flag

The five colors of theJain flag represent the *Pañca-Parameṣṭhi* and the five vows, small as well as great :

- White – represents the *arihants*, souls who

have conquered all passions (anger, attachment, aversion) and have attained omniscience and eternal bliss through self-realization.It also denotes peace that can be achieved through *ahiṃsā* (non-violence).

- Red – represents the *Siddha*, souls that have attained liberation. It also denotes *satya* (truthfulness)
- Yellow – represents the *acharya* the Masters of Adepts. The colour also stands for *achaurya* (non-stealing).
- Green – represents *upadhyaya* (adepts), those who teach scriptures. It also signifies *brahmacharya* (chastity).
- Black – represents the Jain ascetics who remain equanimous and are unaffected by all mundane pleasures. It also signifies *aparigraha* (non-possession).

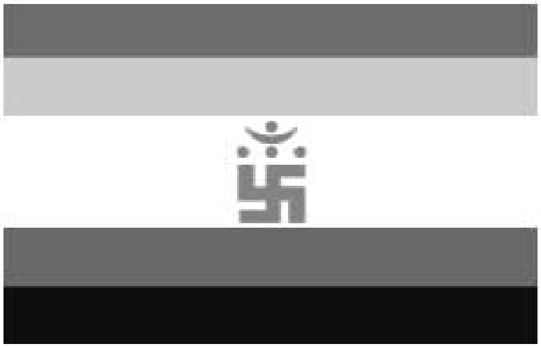

Jain Food for Thought

O Bhagwan! I am friendly towards all, delighted to see the virtuous, compassionate towards the downtrodden and indifferent towards those who are against the right path.

I forgive one and all and beg forgiveness from one and all. I am friendly towards all creatures and cherish enmity towards none.

May all be happy and disease free and seek spiritual welfare. These are the sentiments that drive Jains to be non-violent and prodigious philanthropists.

Jain symbols

- **Jain Swastika**

  The four arms of the swastika symbolize the four states of existence as per Jainism

  1. Heavenly beings
  2. Human beings
  3. Hellish beings
  4. Subhuman animals and plants

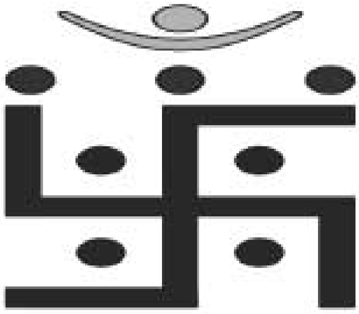

It represents the perpetual nature of the universe in the material world, where a creature is destined to be born in one of these states based on one's karma. In contrast to this circle of rebirth and delusion is the concept of a straight path, constituted by right faith, understanding and conduct, and visually symbolized by the three dots above the *swastika*, which leads the individual out of the transient imperfect world to a permanent perfect state of enlightenment and perfection. This perfect state of liberation is symbolized by the crescent and dot at the top of the *swastika*.

It also represents the four columns of the Jain Sangha: sadhus, sadhvis, shravaka and shravikas - monks, nuns and female and male laymen.

It also represents the four characteristics of the soul : infinite knowledge, infinite perception, infinite bliss, and infinite energy.

- **Symbol of Ahimsa**

The hand with a wheel on the palm symbolizes Ahimsa in Jainism. The word in the middle is "*ahiṃsā*" (non-violence). The wheel represents the dharma-chakra, which stands for the resolve to halt the samsara through relentless pursuit of *ahimsa* and spiritual absorption.

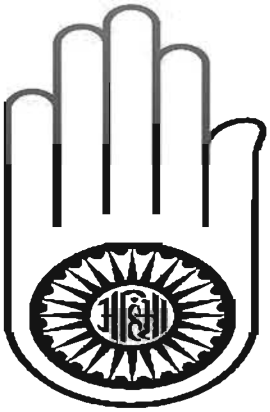

- **Jain emblem**

The Jain emblem reveals the fundamental concepts and philosophy of the enlightened Tirthankaras. The outline of the image represents the universe as described in Jain Agamas. It consists of three *Loka* (realms). The upper portion indicates heaven, the middle portion indicates the transverse world and the lower portion indicates hell.

The semi-circular topmost portion symbolizes siddhashila, which is a zone beyond the three realms. All the siddhas or liberated pure souls reside here forever, liberated from the cycle of life and death. The three dots on the top under the semi-circle symbolize Ratnatraya – right faith, right knowledge, and right conduct. Every creature in this world can become free from the cycle of life and death. This emphasizes that it is necessary to have Ratnatraya in order to attain moksha.

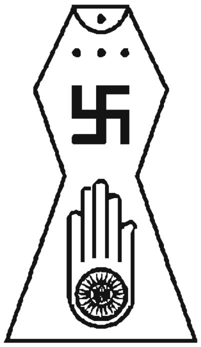

In the top portion, the *swastika* symbol is present.

The symbol of hand in the lower portion shows fearlessness and symbolizes the spirit of ahimsa towards all creatures in this world. The circle in the middle of the hand symbolizes samsara and the 24 spokes represent the preachings from the 24 Tirthankaras, which are to be followed in order to liberate oneself from the cycle of transmigration.

The meaning of the mantra at the bottom, *Parasparopagraho Jivanam*, means, "all life is bound together by mutual support and interdependence."

CONCLUSION

By understanding Jainism, one will realize that Jainism is not a mere religion but it is an enlightened, spiritual and compassionate way of living. One truly lives correctly only when one sees one's true self and others around to be divine. And who can become liberated? One who understands that he/she is a pure soul who is engaging in this endless cycle of birth and death due to attachment and aversion springing from ignorance and perversion.

-Associate Prof and Head, Dept of Jainology, University of Madras, Chennai 600005 (Tamilnadu)

10 अप्रेल 2023
जिनवाणी 48
ISSN 2249-2011

संगोष्ठी-आलेख

सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में पञ्च-कारण-समवाय की भूमिका[1]

श्री जितेन्द्र डागा

प्रभु महावीर की आदेय अनुपम वाणी पर आधारित 'बृहद् आलोयणा' में वर्णन आता है।

सिद्धा जैसो जीव है, जीव सो ही सिद्ध होय।
कर्म मैल को आंतरो, बुझे विरला कोय।।

संसारी जीव और सिद्ध भगवन्त में एक कर्म का ही अन्तर है, इसका बोध विरले जीवों को ही होता है। वे विरले जीव कौन हैं? वे विरले जीव हैं सम्यग्दर्शन युक्त प्राणी।

इस सम्यग्दर्शन की महत्ता को बताते हुए 67 बोलों में कहा गया है कि सम्यक्त्व रूपी नींव पर ही मोक्ष का प्रासाद खड़ा होता है। प्रभु महावीर ने भी सूत्रकृताङ्गसूत्र की पहली गाथा में बोध को प्राप्त करने की प्रेरणा देते हुए कहा है कि-

बुज्झिज्ज तिउटेज्जा, बंधणं परिजाणिया।
किमाह बंधणं वीरो? किं वा जाणं तिउट्टइ।।

भगवन्त कहते हैं कि बोध को प्राप्त करो, तुम अगर बन्धनों को ही नहीं जानोगे तो उनसे कैसे मुक्त होओगे। आज हम सभी का सौभाग्य है कि मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के सान्निध्य में हम 'सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में पंच कारण समवाय की भूमिका' पर चर्चा करने हेतु यहाँ एकत्रित हुए हैं।

सम्यग्दर्शन क्या है?

दर्शन के अनेक अर्थ होते हैं-(1) सामान्य रूप से दर्शन का अर्थ होता है देखना। (2) दर्शन का एक अर्थ होता है-मान्यता अथवा सिद्धान्त। (3) जैनदर्शन में दर्शन एक पारिभाषिक शब्द है। उसका एक अर्थ है सामान्य बोध। दर्शनावरणीय कर्म के क्षयोपशम से जीव का दर्शन गुण प्रकट होता है। वह सामान्य बोध का परिचायक है। यह दर्शन ज्ञान के पूर्व होता है। (4) देव अरिहंत, गुरु निर्ग्रन्थ और दयामय धर्म पर आस्था ही सम्यग्दर्शन है। **अरिहंतो महदेवो जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो, जिणपण्णत्तं तत्तं इअ सम्मत्तं मए गहियं।** तत्त्वार्थसूत्र कहता है-**तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्।**

अर्थात् तत्त्वों पर सही श्रद्धा होना सम्यग्दर्शन है। तत्त्व जो जीव-अजीव, पुण्य-पाप, आस्रव-संवर हैं इन तत्त्वों पर सम्यक् श्रद्धान सम्यग्दर्शन है। उत्तराध्ययनसूत्र में कहा है-

तहियाणं तु भावाणं, सब्भावे उवएसणं।
भावेण सद्दहंतस्स सम्मतं तं वियाहियं।।

जिसका जैसा भाव है उसको वैसा समझना ही सम्यग्दर्शन है। जीव को जीव समझे और अजीव को अजीव।

सामान्य व्यक्ति यह लोहा है, यह पीतल है, यह सोना है, इनके अन्तर को जानता है। पर जो सम्यग्दर्शी है, सम्यग्ज्ञानी है वह इनकी समानता को जानता है कि यह पुद्गल है, नश्वर है, स्थायी नहीं है। ऐसा भाव आते ही आसक्ति टूटने लगती है और यह आसक्ति टूटने का क्षण ही जागृति का क्षण होता है।

सामान्य व्यक्ति यह जानता है कि चूहा है, बिल्ली है, शेर है, हिरण है, मनुष्य है और वह इनकी विशेषताओं के बारे में विस्तार से बता देता है। जैसे टी.वी. पर Geographical Chennels हमें कितनी जानकारियाँ देते हैं, पर जो सम्यग्दर्शी या सम्यग्ज्ञानी होता है वह इनकी विभिन्नता से आगे इनमें समानता है यह भी जानता है। वह जानता है कि इन सब में मेरे समान जीव है। इन्हें वैसे ही पीड़ा का अनुभव होता है जैसे मुझे। उसकी अनुकम्पा का विस्तार होता चला जाता है। शम,

1. यह आलेख मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. की सन्निधि में 25 सितम्बर, 2022 को मदनगंज-किशनगढ में 'पंच-कारण-समवाय' पर आयोजित संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया।

संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्था के गुण प्रकट हो जाते हैं। सत्य से उसका साक्षात्कार होता है। आत्मस्वरूप की यह प्रतीति, आत्मस्वरूप पर यह विश्वास, आत्मस्वरूप पर यह आस्था चमत्कार का इन्तजार नहीं करती, अपितु चमत्कार को साकार करती है और उसका रोम-रोम बोलता है-

मेरा पथ है प्रेम स्नेह का, मैं क्या जानूँ कौन वैर है,
मैं सबका हूँ सब हैं मेरे, मैं क्या जानूँ कौन गैर है।
सारी धरती मेरी धरती, सारे सागर मेरे सागर,
सभी राष्ट्र हैं मेरे अपने, मैं हूँ सकल विश्व का नागर।
सबके आँसू मेरे आँसू, सबका हास्य, हास्य है मेरा,
सबका सुख-दुःख, मेरा सुख-दुःख
एक हुआ सब मेरा-तेरा।

जैसे किसी कमरे में अन्धकार है वस्तुएँ उस कमरे के अन्दर रखी हैं, पर दिखाई नहीं देती हैं। हम जैसे ही दीपक के साथ उस कमरे में जाते हैं वस्तुएँ दिखाई देने लगती हैं। वैसे ही जानकारियाँ इस जीव ने बहुत इकट्ठी कर रखी हैं, पर जानकारियाँ अभी अज्ञान रूप में ही हैं। जैसे ही सम्यग्दर्शन रूपी दीपक प्रज्वलित होता है जानकारियाँ सम्यक् हो जाती हैं, सत्य की ओर उन्मुख कर देती हैं। अज्ञान ज्ञान में परिवर्तित हो जाता है। जैसे ही यह चमत्कार घटित होता है प्रभु कहते हैं-

दंसणसंपण्णयाए णं भवमिच्छत्तछेयणं करेइ।

दर्शन की सम्पन्नता से जीव संसार में भ्रमण की जड़ मिथ्यात्व का समूल छेदन कर देता है और क्षायिक ज्ञान को प्राप्त करता हुआ मोक्ष के अविनाशी पद को प्राप्त कर लेता है। जैसा हमने प्रारम्भ में कहा सिद्ध भगवन्त और संसारी जीव में कर्म मैल का ही अन्तर है। दूध से ही मक्खन बनता है, पर कोई दूध में अंगुली डाल कर मक्खन निकालना चाहे तो यह प्रयास निरर्थक हो जाएगा। मक्खन को प्राप्त करने के लिए दूध से दही बनाना होगा, फिर दही को बिलौना होगा तब कहीं मक्खन मिलता है। यानी किसी भी कार्य में प्रक्रिया है, विधि है।

ऐसे ही किसी भी कार्य की निष्पत्ति में कई कारणों को आचार्य सिद्धसेन दिवाकर ने एक सूत्र में रखा और सम्यक्त्व के स्वरूप की व्याख्या की-

कालो सहाव नियई पुव्वकयं पुरिसे कारणेगंता
मिच्छत्तं ते चेव समासओ होंति सम्मत्तं

काल, स्वभाव, नियति, पूर्वकृत (कर्म) एवं पुरुषार्थ-जीव इन पाँचों कारणों में से एक को ही यानी एकान्त को लेकर चलता है तो वह सत्य से दूर से जाता है। इनको समूह रूप में कार्य में सहयोगी मानना सम्यक्त्व के नजदीक पहुँचना है।

ये पाँच कारण एक-दूसरे के प्रतिबन्धक नहीं हैं। इनके परस्पर समन्वय से कार्य की सिद्धि होती है। कार्य की सिद्धि इन पाँच कारणों में कदाचित् किसी के न्यून होने से भी हो सकती है, इसलिये यह कहा जा सकता है कि पञ्च समवाय सिद्धान्त की मान्यता के पीछे अनेकान्तवाद की दृष्टि ही प्रमुख रही है। क्योंकि एकान्तवाद पर चलने वाले सत्य तक पहुँच ही नहीं पाए।

इन पाँचों में से जब एक को ही प्रमुखता देने लगते हैं, तो वह एकान्त धारणा वाद रूप में उभरती है तो फिर विवाद उत्पन्न हो जाता है और सत्य के रास्ते से भटक जाते हैं।

आओ हम देखते हैं कि वाद कैसे अमंगलकारी हो जाता है। जैसे कालवाद के सिद्धान्त के अनुसार एक काल ही समस्त कार्यों का कारण स्वीकार किया गया है। वे कहते हैं कि चम्पक, अशोक आदि वनस्पति पर फूलों का लगना, फलों का पकना, शीत पड़ना, नक्षत्रों का घूमना, गर्भ का प्रसव होना, वर्षा का होना यह सब काल के बिना नहीं होते। काल के अनुसार ही सूर्य विश्व को प्रकाश देता है। छह आरों का प्रभाव मनुष्यों पर पड़ता है, इसी के अनुसार उनकी स्थिति और अवगाहना होती है। काललब्धि पकती है तो जीव सम्यक्त्व को प्राप्त होता है।

प्रतिपक्षी कहते हैं कि मात्र कारण काल को ही नहीं माना जा सकता, क्योंकि समान काल होते हुए भी

सारे कार्य समान नहीं होते। कोई सफल हो रहा है तो कोई विफल। वर्षा काल होगा तो भी निरन्तर वर्षा नहीं होगी। आज के वैज्ञानिक युग में Poly farming, hydrophonix से हर ऋतु में हर प्रकार की फसल पैदा की जा सकती है।

स्वभाववादी कहते हैं कि जिसका जैसा स्वभाव होगा वैसा कार्य होगा। मूँग बोएँगें तो मूँग होगा और आम बोएँगें तो आम होगा। स्वभाववादी अपनी बात को आगे बढ़ाता हुआ कहता है कि दूध से दही बनना, दही से घृत बनना और मक्खन बनना ये अवस्थाएँ उसके स्वभाव के कारण ही प्राप्त होती हैं। अग्नि में ज्वाला, जल में शीतलता तथा अन्न जल से तृप्ति ये सभी स्वभाव के कारण ही हैं। तो कर्मवादी कहते हैं कि एक ही स्वभाव का व्यक्ति कर्म के कारण, पुरुषार्थ के कारण सफल-विफल होता है। जैसे एक ही खान से पत्थर निकला, पर किसी ने परिष्कार, कटाई, पोलिस अच्छा किया तो वह बढ़िया बनकर ऊँचे दामों में बिका और एक ने बिना समझदारी से काम किया तो नुकसान खा जाता है। काँटों की तीक्ष्णता मात्र स्वभाव से ही नहीं देश, काल आदि भी उसमें कारण होते हैं।

नियतिवादी कहता है कि किसी को नफा होना, किसी को नुकसान होना सब कुछ नियत है। सूर्य का पूर्व में उदय होना, पश्चिम में अस्त होना नियत है। दिन-रात होना नियत है, छह आरे होना नियत है। पुरुषार्थ का कोई महत्त्व नहीं है, जैसा होना है वैसा ही होगा। यह नियतिवादियों का कथन है। पर नियति तो जीव स्वयं अपने कार्यों से अपने पूर्व के बाँधे कर्मों से नियत करता है। जगत में विचित्रता का कारण ही कर्म है। कर्म बलवान है। कार्य में मेहनत, पुरुषार्थ करने पर भी जब कार्य में सिद्धि नहीं होती तब कर्म ही कारण होता है। कर्मों से आविष्ट पुरुष उसी प्रकार पराधीन है, परवश है जैसे वैताल से आविष्ट शव। पूर्वकृत कर्म का फल खजाने में स्थित धन की भाँति होता है जो समय आने पर उपस्थित होता है।

पुरुषार्थवादी कहते हैं कि कर्म का कर्त्ता तो आत्मा है। कर्म को सर्वत्र कारण माना जाए तो मोक्ष होगा ही नहीं। नियतिवादी कहते हैं कि सूर्य का पूर्व में उदय होना नियत है तो पुरुषार्थवादी कहते हैं कि सूर्य जिस तरफ से उदय हो जाए वही दिशा पूर्व हो जाती है।

आत्मा कर्म का आलम्बन है, इस आलम्बन के बिना कर्म कार्य ही नहीं कर सकता। जैसे कुल्हाड़ी चलाने वाले के बिना कुल्हाड़ी का कोई महत्त्व नहीं है। वह आत्मा ही कर्म का कर्त्ता-भोक्ता है, अन्यथा वह कर्म तो मात्र कार्मण पुद्गल है। पुरुषार्थवादी पूर्णतः पुरुषार्थ को ही महत्त्व देते हैं।

एक-एक वाद जब सिर्फ अपनी ही बात करता है, तो मिथ्यात्व हो जाता है, असत्य हो जाता है। पर जब पाँचों में समन्वय करके इनको कार्य का कारण माना जाता है तब अनेकान्त होता है। तब ही सम्यक्त्व को जीव स्पर्श करता है। आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ने बहुत सुन्दर शब्दों में इसको प्रस्तुत किया है।

'ही' एकान्तवाद का समर्थक है।
'भी' अनेकान्त-स्याद्वाद का प्रतीक।
हम ही सब कुछ हैं यूँ कहता है 'ही' सदा।
तुम तो तुच्छ कुछ भी नहीं हो।
और 'भी' का कहना है कि हम भी हैं, तुम भी हो।
सब कुछ 'ही' देखता है हीन दृष्टि से
पर को 'भी' देखता है समीचीन दृष्टि से।

'ही' वस्तु की शक्ल को पकड़ता है, 'भी' वस्तु के भीतरी भाग को छूता है।

समवाय की धारणा आचाराङ्ग में वर्णित सूत्र पर भी आधारित है, सूत्र है-

जे आयावाई से लोयावाई, जे लोयावाई से कम्मावाई, जे कम्मावाई से किरियावाई।

जो आत्मवादी होता है, वह लोकवादी होता है, जो लोकवादी होता है, वह कर्मवादी है और जो कर्मवादी होता है वह क्रियावादी है। आयावाई का अर्थ पूज्य घासीलालजी महाराज ने किया कि जो आत्मा के

विषय को, जो आत्मा के स्वरूप को, स्वभाव को जानता है वह आत्मवादी है। आत्मा सभी जीवों में समान है, वह अज, अविनाशी, अगम, अगोचर है। वह जानता है कि आत्मा नित्य परिणामी है, उपयोगवान् है, प्रभु है, कर्त्ता है, शरीर के बराबर अवगाहना में है। ऊर्ध्वगमन स्वभाव वाला है। वह द्रव्यार्थिक नय से नित्य है और पर्यायार्थिक नय से अनित्य है। इन सब तत्त्वों का ज्ञाता आत्मवादी, लोकवादी भी होता है। लोक का जानकार अर्थात् कथन करने वाला भी होता है। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल, पुद्‌गल और जीव इन छह द्रव्यों से लोक कहलाता है। वह काल का भी अपने कथन में, जानकारी में, समावेश करता है। वह कर्म का भी जानकार होता है, कर्मों के बन्ध, उदय, उदीरणा, सत्ता आदि का जानकार होता है, कथन करता है। आगम का बहुत विराट् अर्थ लिए हुए होता है, इसलिए भगवान ने पुरुषार्थवादी शब्द न कहकर क्रियावादी शब्द कहा।

जो आत्मवादी होता है वह क्रियावादी होता है। 25 क्रियाओं को भी क्रिया कहा, तो मोक्ष के पुरुषार्थ को भी। जीव के द्वारा जो किया जाए वह क्रिया है। क्रिया से ही अर्थात् प्रशस्त योगों से ही एक दिन जीव अक्रिय हो जाता है। पुरुष यानी आत्मा के अर्थ में जो क्रिया की जा रही है वह पुरुषार्थ, क्रिया का एक रूप है। इसी कारण आगमों में कई जगह क्रियावाद है एवं भगवतीसूत्र के 30वें शतक में इसे सम्यग्दृष्टि का एकार्थक ले लिया गया है।

प्रभु महावीर ने जहाँ काल के महत्त्व को विभिन्न आरों, शुक्ल पक्षी के अर्द्ध पुद्‌गल परावर्त्तन काल इत्यादि के रूप में प्रतिपादित किया है, वहीं जयन्ती श्राविका के प्रसङ्ग में प्रतिपादित किया कि जीव भवी या अभवी स्वभाव से है। सूत्रकृताङ्गसूत्र में सुधर्मा स्वामी इस बात का उद्घोष करते हैं कि '**से णिच्चणिच्चेही समिक्ख पन्ने**' अर्थात् नित्य क्या है, अनित्य क्या है? इसकी समीक्षा करने में भगवान महावीर प्रज्ञ थे। जहाँ उन्होंने इस नियति को प्रतिपादित किया कि जो जन्मा है उसकी मृत्यु नियत है, वहीं उन्होंने गोशालक के नियतिवाद का उपासकदसाङ्गसूत्र में खण्डन किया एवं उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य, वीर्य एवं पुरुषार्थ की उपयोगिता पर महत्त्व दिया। कर्मों का गहन विश्लेषण करने वाले प्रभु महावीर ने आत्मा को कर्त्ता एवं भोक्ता माना। पुरुषार्थ से यानी आत्महित प्रयत्नों से जीव चमत्कारों को साकार कर सकता है। पूर्व कर्मों से नियत जैसे दिखाई दे, ऐसे निकाचित कर्मों को चूर-चूर कर सकता है। यह आश्चर्य की बात नहीं है, उत्तराध्ययनसूत्र के सम्यक्त्व पराक्रम अध्ययन में अनुप्रेक्षा के प्रतिफल की टीका करते हुए लिखा है कि वह निकाचित कर्मों को चूर-चूर कर देता है। विशेषावश्यक भाष्य में लिखा है कि निकाचित कर्म प्रायः उसी क्रम में भोगे जाते हैं। शब्द प्रायः ही कहता है कि उनके भी अनुभाग और स्थितियाँ तोड़ी जा सकती हैं। निष्कर्ष है कि भगवन्त ने पुरुषार्थ को बहुत महत्त्व दिया है। आगम में विभिन्न जगह पर पुरुषार्थ की प्रेरणा है। कहीं कहा गया- '**अहासुहं देवाणुप्पिया**, '**मा पडिबंधं करेह**' '**समयं गोयम मा पमायए**' अर्थात् धर्म के कार्य में प्रमाद मत करो। जैनदर्शन श्रमण संस्कृति का धर्म है, इसमें श्रम और पुरुषार्थ को महत्त्व प्राप्त है। किन्तु कई बार प्रभु की वाणी से आगे जाकर कुछ कहा जाता है तो भी सत्य से जीव भटक जाता है।

इसी प्रकार आज के समय में क्रमबद्ध पर्याय की प्ररूपणा की जा रही है उसमें नियति को मुख्य कारण माना जा रहा है। पंच समवाय में नियति को मुख्य मानकर, पुरुषार्थ को मात्र तत्त्व निर्णय, तत्त्व चर्चा तक ही सीमित करने की बात कही जाती है। परिणाम यह है कि ये पंचम आरे में छठा एवं सातवाँ गुणस्थान यानी साधु भगवन्तों को ही नहीं मानते हैं। इनका कहना है कि सर्वज्ञता को स्वीकार करने पर नियतिवाद का निषेध नहीं किया जा सकता है। जबकि प्रभु ने तो नियतिवाद का पुरजोर खण्डन किया है। वे कहते हैं कि केवलज्ञान का

विषय तो समस्त द्रव्य एवं तीन काल सम्बन्धी समस्त पर्याय हैं। भविष्य में क्या होना है, नहीं होना है यह सभी केवलज्ञानी के ज्ञान में निश्चित है। वे द्वारिका का उदाहरण देते हैं कि प्रभु ने वासुदेव को कहा कि 12 वर्ष बाद द्वारिका का सुरा, अग्नि और द्वैपायनऋषि के कोप के कारण विनाश होगा। बहुत प्रयत्न किये गये, सारी सुरा बाहर फेंक दी गयी, आयम्बिल व्रत हुए, दिगम्बर ग्रन्थ कहते हैं कि द्वैपायनऋषि वहाँ से विहार कर गुफाओं में चले गए, पर सारे प्रयत्न उस नियति पर ले गए जो केवली भगवन्त ने बताई। इसी भाँति श्री कृष्ण-जराकुमार की बात को कहकर यह प्रतिपादित करते हैं कि जो होना है सो होगा ही। हमें तो मात्र विकल्परहित होना है कुछ नहीं करने की अनुभूति ही पुरुषार्थ है। तप, संयम, नियम इत्यादि को वे तरजीह नहीं देते; परिणामस्वरूप छठे सातवें गुणस्थान को भी वर्तमान में मान्यता नहीं देते।

आश्चर्य की बात यह है कि उद्‌भट विद्वान भी उनके तर्कों के आगे मध्यम मार्ग ढूँढ़ने लगते हैं।

आओ अब हम आगम के तथ्यों से सत्य को ढूँढ़ने का प्रयास करते हैं।

यह निर्विवाद सत्य है कि सर्वज्ञ भगवन्त के ज्ञान का विषय समस्त द्रव्य एवं त्रैकालिक समस्त पर्याय हैं। जो द्रव्य एवं पर्याय हैं उन सभी द्रव्य पर्यायों को वे जानते हैं और जो नहीं हैं वह उनके ज्ञान में भी नहीं है, इस रूप में अंकित है।

आदरणीय श्री मोहनलालजी मूथा बड़े प्रेम से समझाते हुए कहते थे कि बाबू यह कहना कि सर्वज्ञ ने 'आदि' नहीं देखी या सर्वज्ञों ने 'अन्त' नहीं देखा, यह सर्वज्ञों की आशातना है। जो जैसा है उसे उस रूप में केवली भगवान देखते हैं यानी जो अनादि है उसे अनादि रूप से देखते हैं और जो अनन्त है उसे अनन्त रूप में देखते हैं।

आचार्य श्री ज्ञानचन्दजी महाराज ने फरमाया- जैसे दो काँच आमने-सामने हैं, एक तरफ भूत और एक तरफ भविष्य समझें, दोनों काँचों की परछाई एक-दूसरे पर पड़ रही है। हम दूरबीन लगायें अथवा कोई भी यन्त्र ले लें, यह कहना होगा कि परछाई का क्रम एक तरफ अनादि है और दूसरी तरफ अनन्त है। पंचसंग्रह में वर्गणाएँ एवं स्पर्धक का वर्णन आता है। एक-एक पुद्‌गल की बढ़त होती है तो वर्गणा एक-एक बढ़ती है। कोई ग्रहण योग्य कोई अग्रहण योग्य। पर रस स्थान, योगस्थान के स्पर्धक में तो वर्गणा एक एक कर बढ़ती है, पर दो स्पर्धकों के बीच में अनेक वर्गणाएँ होती ही नहीं हैं। यानी जो 'नहीं' है उसे भी 'नहीं' रूप में केवलज्ञानी जानते हैं। वे मात्र समस्त द्रव्य को एवं उसके सब पर्यायों को ही नहीं जानते हैं, अपितु जो द्रव्य है ही नहीं उसे 'ण जाणई' रूप में भी जानते हैं।

सभी पर्यायों को जानने वाले सर्वज्ञ, नित्य-अनित्य की समीक्षा में वही बात रखते हैं जिससे हमारा तप-संयम इत्यादि में पुरुषार्थ बढ़े, प्रमाद घटे, छह काय जीव पर आत्मीयता बढ़े।

पर्युषण में हम सब एवन्ता अनगार का वर्णन सुनते हैं कि-माँ मैं जो जानता हूँ वह नहीं जानता, जो मैं नहीं जानता वह जानता हूँ। पर अगर हम अनुप्रेक्षा करके देखें तो इस प्रसङ्ग में सम्यक् नियति या क्रमबद्ध पर्याय के प्रश्नों का सटीक समाधान दिया गया है। एवन्ता कुमार को भगवन्त ने प्रतिबोध दिया। एवन्ता कुमार चरम शरीरी थे और सम्भवतः भगवान के निर्वाण के बहुत वर्षों बाद तक केवली रूप में विचरण किया, क्योंकि भगवतीसूत्र कह रहा है कि उन्होंने दीर्घकाल तक संयम का पालन किया। क्या नियत है और क्या अनियत है; सर्वज्ञता क्या है और अल्पज्ञता क्या है; इसका बोध प्रभु ने उन्हें दिया और माता को पुत्र एवन्ता ने वही बात कही कि माँ मैं यह जानता हूँ जो जन्मा है वह अवश्य मरेगा, इस नियति को मैं जानता हूँ पर व्यक्ति कब-कैसे-कहाँ, किस रूप में मरेगा यह मैं नहीं जानता हूँ। (क्योंकि मैं छद्‌मस्थ हूँ) मैं यह जानता हूँ कि जीव अपने कर्मों से नरक, देवगति आदि में जाता है, पर किन कर्मों से तथा कैसे परिणामों

से जाता है वह मैं नहीं जानता-अपनी अल्पज्ञता को उन्होंने प्रतिपादित किया।

एवन्ता के प्रसङ्ग में देखें या द्वारिका के प्रसङ्ग में देखें सर्वज्ञ, सर्वदर्शी उतनी ही बात करते हैं जिससे कि जीव का आत्मोत्थान हो सके, उनका पुरुषार्थ बढ़े। उन्होंने प्रतिबोध देते वक्त निर्वाण की तिथि, केवलज्ञान प्राप्ति के समय की बात एवन्ता से नहीं की।

द्वारिका के विषय में भी भगवन्त ने जो भविष्य का कथन किया वह भी इसलिये कि अनेक भवी आत्माएँ, पद्मावती इत्यादि राजरानियाँ, अनेक राजकुमार, द्वारिका नगरी की प्रजा इत्यादि धर्म-ध्यान की ओर उन्मुख हों, आत्म-कल्याण करें और देखो ऐसा कल्याण हुआ कि वासुदेव श्री कृष्ण ने तीर्थङ्कर गोत्र बाँधा और अनेक आत्माओं को संयम की ओर अग्रसर किया। सर्वज्ञ व्यवहार एवं निश्चय दोनों को रखते हैं।

श्री कृष्ण वासुदेव ने जब उन्हें गजसुकुमाल के हत्यारे के विषय में पूछा तो उन्होंने इस भाँति उत्तर दिया कि किसी तरह से हिंसा का दावानल न भभक जाए। यही वीतरागता की विशेष बात है। शायद अन्य कोई तथाकथित धर्मगुरु होते और विभङ्ग ज्ञान से जान जाते तो इस रूप में कहते कि वासुदेव कृष्ण का क्रोध भभक जाता और शायद सारी पृथ्वी ब्राह्मणों से विहीन हो जाती। पर वीतराग प्रभु बोले 'साहिज्जे दिण्णे' हे कृष्ण उसने सहायता की। द्वारिका के प्रसङ्ग में जहाँ निश्चय की बात कही गई, उसमें पुरुषार्थ की प्रबल प्रेरणा भी निहित रही।

तपस्वी श्री चम्पालालजी म.सा. सम्यक्त्व प्राप्ति की प्रक्रिया को एक उदाहरण से समझाते थे कि जैसे अन्धा पुरुष नगर में जाना चाहता है। उसे किसी सत्पुरुष ने बताया कि आप किले की दीवार के सहारे जाते जाओ और आप दरवाजे के समीप पहुँच जाओगे। वह जाता है, पर जैसे ही दरवाजा नजदीक आता है उसके खुजाल हो जाती है और वह आगे बढ़ जाता है। ऐसे चक्कर काटता रहा है एक वक्त वह सम्भलता है उस सत्पुरुष पर आस्था करके इस वक्त दरवाजे के पास आने पर खुजाल पर संयम रखता है। उसका हाथ दरवाजे पर आ जाता है यह है अपूर्वकरण। अब वह आगे बढ़ता है अनिवृत्तिकरण की ओर अर्थात् दरवाजे में प्रवेश कर जाता है।

ऐसे अनादिकाल से जीव भटकता जा रहा है। 69 से अधिक कोटाकोटि सागर के कर्मों को कम करके अन्त: कोटाकोटि में ले आता है। एक समय जब काल का परिपाक होता है तब जिसका स्वभाव भवी रहा है वह आगे बढ़ता है। संयोग से कर्मों को पुरुषार्थ से शिथिल कर-अपूर्वकरण में प्रवेश करता है जहाँ से फिर लौटना नहीं होता। अनिवृत्तिकरण को करता है और मिथ्यात्व को कम करके ग्रन्थिभेद करता है। पुरुषार्थ से सम्यक्त्व को प्राप्त कर लेता है।

आचार्य जिनसेन कहते हैं कि सम्यकत्व प्राप्ति में काललब्धि, देशना दोनों ही बहिरंग कारण हैं। अन्तरंग कारण तो क्षयोपशम, विशुद्धि और करणलब्धि है जो कि तीनों पुरुषार्थ की परिचायक है। इसलिए काल, नियति, स्वभाव, पूर्वकर्म की जानकारी रखते हुए हमें पुरुषार्थ की ओर, आत्महित की ओर क़दम आगे बढ़ाने होंगे।

-1370, ताराचन्द नायाब का रास्ता, एल.एम.बी. के पीछे, जौहरी बाजार, जयपुर-302003 (राजस्थान)

- शरीर में प्राणवायु का सञ्चार होते ही जैसे इन्द्रियों में हलचल मच जाती है और वे काम करने लगती हैं। वैसे ही अहिंसा व्रत में पूर्ण गतिशील होने पर अन्य धर्मों का पालन स्वत: हो जाता है।
- व्यक्ति में अहिंसा के प्रति जितनी निष्ठा और श्रद्धा होती है, वह उसी अनुपात में महानता की उपलब्धि कर पाता है।

-आचार्यश्री हीरा

ISSN 2249-2011

युवा-स्तम्भ

फैशनजन्य समस्याएँ एवं वस्त्रविवेक

डॉ. नवलसिंह जैन

मम्मी! देखो यह कितनी सुन्दर पोशाक है, प्राइज भी कितनी कम है और मात्र एक ही बची है। इसे ऑनलाइन मँगाना भी नि:शुल्क है। क्या मैं मँगवा लूँ? नयना ने मोबाइल में पोशाक का चित्र दिखाते हुए अपनी मम्मी से कहा।

मम्मी–''नहीं, नयना अभी कोई पोशाक की जरूरत नहीं है, पहले ही तुम्हारे पास ढेरों कपड़े पड़े हैं, उनमें से कई को तो तुमने एक बार भी नहीं पहना है और कई एक-दो बार पहन कर छोड़ दिये हैं।''

नयना–''मम्मी! जब कोई अवसर होगा तब पहनूँगी न। ऐसे ही घर में कौन पहनता है?''

मम्मी–''जब तक अवसर आएगा तब तक इन कपड़ों को पुराना चलन बताकर फिर से खरीदने की बात करोगी। पिछली बार मामा की शादी में जो कपड़े खरीदे थे, उनमें से तीन जोड़ी तो तुमने आज तक नहीं पहने हैं। तीन-तीन हजार की पोशाक अलमारी की शोभा बढ़ा रही हैं।''

नयना–''मम्मी! आप देख नहीं रही हो क्या, मेरे शरीर का कद बढ़ रहा है। अब छोटी पोशाक कैसे पहनूँगी?''

मम्मी–''नयना! तुम्हें मैंने कहा था कि एक साथ इतनी पोशाक मत खरीदो। दो हजार के गिफ्ट वाउचर के चक्कर में पूरे 20 हजार की खरीददारी कर ली और ऐसे कपड़े खरीद लिये जो तुमने आज तक पहने ही नहीं।''

नयना–''मम्मी! क्या सारे नियम मुझ पर ही लागू होते हैं। आपके पास भी तो ऐसी ढेरों साड़ियाँ पड़ी हैं, जो आपने आज तक नहीं पहनी है। फिर हर बार आपको नानी के यहाँ से दो-तीन साड़ियाँ मिल जाती हैं। आप खुद ही तो कहती हो कि मैंने शादी का 20 हजार का लहँगा केवल एक बार ही पहना है, इतने का सोना लिया होता तो दो लाख का हो जाता। मेरे पास तो ऐसी कोई पोशाक नहीं है जो इतनी महँगी हो और मैंने एक बार भी खरीदी हो। आपके पास इतनी साड़ियाँ होते हुए भी आप पर्युषण में व्याख्यान में जाने के लिए आठ दिन के लिए आठ साड़ियाँ खरीदकर लाए हो।''

अपनी मम्मी और बहन की बातें सुन रहा मयंक भी बीच में बोल पड़ा।

मयंक–''अब तो हद हो गई, कोरियर और पार्सल लाने वाले लड़के को अपनी नयना का घर तक याद हो गया है। कल मेरा पार्सल आया था। पता समझते समय डिलीवरी वाले लड़के ने पूछा यह नयनाजी का ही पता है न। नयना दी! अब तो ऑनलाइन खरीददारी कम कर दो, मुझे तो यह डर लगने लगा है कि कहीं अपना घर कपड़े की दुकान न बन जाये।''

नयना–''मयंक! तुम ज्यादा शरीफ मत बनो। तुम जो एक साथ दस-दस पोशाकें खरीदते हो उसका क्या? और जो व्यायाम के नाम पर हर बार नई पोशाक लेकर आते हो और दो दिन भी व्यायाम नहीं करते हो। तुम्हारा योगा करने का आसन धूल खा रहा है। जुराबों के जोड़ीदार ही गायब हो जाते हैं। नए के नए मौजों के पोछे बनाने पड़ रहे हैं। तुम्हारे पास भी ढेरों पोशाकें होने के बाद भी कहीं जाना हो तो अलमारी के सामने खड़े होकर यही सोचते रहते हो कि क्या पहनूँ?''

वस्तुत: कपड़ों की अनाप-शनाप खरीददारी और उस पर फिजूलखर्ची मात्र किसी एक परिवार की समस्या नहीं है। बदलते जमाने के साथ बदलते इस फैशन के दौर का, आज हर कोई शिकार है। दुनिया में तेजी से सब कुछ बदल रहा है, इस बदलते हुए जमाने में सभी लोग खुद को बदलते देखना चाहते हैं। खासतौर पर युवा

अपने को अलग दिखाने की कोशिश में लगे हैं। कपड़े खरीदने की लत इस हद तक लग गई है कि आर्थिक अभाव होने के बाद भी कपड़ों पर फिजूलखर्ची हो जाती है। अलमारी में बहुत से नये कपड़े रखे रहते हैं। बहुत बार आप ऐसे कपड़े खरीद लेते हैं जिनकी जरूरत ही नहीं होती है। बहुत-सी बार इसलिये कपड़े खरीद लेते हैं, क्योंकि वे सस्ते या एक के साथ एक फ्री मिल रहे होते हैं। ऑनलाइन कपड़े खरीदने या मँगवाने एवं पार्सल मिलने पर स्वयं को उत्साहित महसूस करते हुए पार्सल खोलते हैं। कई बार ग्लानि महसूस होती है कि खरीदा हुआ कपड़ा घर लेकर आते हैं और फिर उसे नापसन्द करते हैं। हर कोई स्वयं को सुसज्जित दिखाना चाहता है या अपने डिजाइनर कपड़ों का दिखावा करना चाहता है। हर मौके के लिए कपड़े खरीदना आदत बन गई है। पिछले 15 वर्षों में वैश्विक स्तर पर कपड़ों का उत्पादन दोगुना हो गया है। वहीं किसी कपड़े को पहने जाने का औसत समय भी कम हो रहा है।

मार्च 2018 में जेनेवा में 'फैशन एण्ड सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स : व्हाट रोल फॉर द यूएन?' नाम के कार्यक्रम में यूएनईसीई ने आगाह किया कि फैशन कारोबार में जिस तरह कपड़ों का बड़ी मात्रा में उपयोग किया जा रहा है वह एक 'पर्यावरण और सामाजिक आपातकाल' दर्शाता है।

एक रिपोर्ट के मुताबिक एक टी-शर्ट को बनाने में तकरीबन 2,700 लीटर पानी लगता है, जिसे हम कुछ दिन पहनने के बाद कचरे में डाल देते हैं। हर साल उत्पादित 100 अरब कपड़ों में से 92 मिलियन टन कचरों में फेंक दिया जाता है। यानी कपड़ों से भरा एक ट्रक कचरा हर सेकेण्ड कचरों का पहाड़ बनाने के लिए तैयार होता है। अगर यही स्थिति निरन्तर जारी रही तो हर साल कचरे का अम्बार बढ़कर 134 मिलियन टन हो सकता है। इस दशक के अन्त तक वस्त्र उद्योग का वैश्विक उत्सर्जन दोगुना हो जाएगा। (https://smarterbusiness.co.uk/blogs/the-top-5-industries-that-consume-the-most-water/)

कपड़ों की रंगाई करना भी एक जटिल समस्या है। कपड़ों को रंगाई करने के लिए जिन रसायनों का प्रयोग किया जाता है, वे पर्यावरण के लिए काफी खतरनाक होते हैं। कपड़ों के प्रसंस्करण एवं रंगाई की रसायन प्रक्रिया से लगभग 20 प्रतिशत जल प्रदूषण होता है। इण्डोनेशिया में सिटरम नदी और इसके पास बसी मानवीय बस्तियों और वन्य जीवों को वस्त्र उद्योग ने काफी गम्भीरता से प्रभावित किया है। इसी तरह तमिलनाडु में तिरुपुर, राजस्थान के पाली एवं बालोतरा में वस्त्र उद्योग प्रदूषण का एक बड़ा स्रोत बन गया है और इस क्षेत्र में कृषि एवं जल स्रोतों को पूरी तरह से नष्ट करने में इसकी बड़ी भूमिका हो गई है। (https://www.worldwildlife.org/threats/water-scarcity)

उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत है समाधान

जैनागमों में साध्वियों के लिए 96 हाथ एवं साधुओं के लिए 72 हाथ तक वस्त्र रखने का नियम है। श्रावक-श्राविकाओं के लिए इस सन्दर्भ में कोई निश्चित प्रावधान नहीं है। आचार्यश्री हेमचन्द्र ने योगशास्त्र में धर्माधिकारी या श्रावक के आवश्यक 35 गुणों में 'वित्तानुसार वेश' को एक गुण बताया है। गृहस्थ जीवन में वेश का महत्त्व है। वेश से व्यक्तित्व की पहचान होती है। अपनी वित्तीय स्थिति, वय, देश, काल और कुलाचार को ध्यान में रखकर वेश धारण करना चाहिये। उक्त मर्यादाओं को ध्यान में न रखने से लोक में उपहास का पात्र होना पड़ता है। विवेकवान् गृहस्थ के लिए अपनी वेशभूषा सात्त्विक, स्वच्छ और सुरुचिपूर्ण रखना चाहिये। धर्म के अभिमुख होने की योग्यता प्राप्त करने का यह भी एक मानदण्ड है।

श्रावक का दूसरा गुणव्रत उपभोग-परिभोग परिमाणव्रत है। इस व्रत में दैनिक उपयोग में आने वाली 26 प्रकार की वस्तुओं की मर्यादा की जाती है। वस्त्र के सम्बन्ध में मर्यादा करना कि मैं अमुक किस्म के इतने वस्त्रों से अधिक वस्त्र नहीं पहनूँगा। इस प्रकार की मर्यादा करना वत्थविहि परिमाण कहलाता है।

पाठकों के लिए कुछ सुझाव दिये जा रहे हैं जिन्हें

अपनाकर सरलता से कपड़ों के परिग्रह को कम कर वत्थविहि परिमाण व्रत का सहजता से पालन किया जा सकता है।

अलमारी की सार-सम्भाल

कपड़ों की एक सूची तैयार करें, जिसमें यह तय करें कि कितने कपड़े समारोह हेतु, कितने आस-पास जाने पर पहनने हेतु तथा कितने रोजाना पहनने के हैं। किस रंग के कितने कपड़े हैं। कितने कपड़े ऐसे हैं जो एक बार भी नहीं पहने हैं। ऐसा करने से आपको अपने पास उपलब्ध कपड़ों की जानकारी रहेगी और फालतू की खरीददारी से बचेंगे। अगर आपको लगता है कि अब आपको रहे हुए कुछ कपड़ों की जरूरत नहीं है तो उन्हें जरूरतमन्दों को दान भी कर सकते हैं।

बनाएँ शॉपिंग लिस्ट

बाजार से सब्जी खरीदने से पहले हम फ्रिज में यह देखकर जाते हैं कि कौन-कौन-सी सब्जी कितनी-कितनी रखी है। किराने की दुकान जाने से पहले भी आवश्यक सामान की सूची बनाते हैं। इसी तरह क्या कपड़े खरीदने जाने से पहले हम सूची बनाते हैं? बिना सूची के खरीददारी का मतलब है बिना जरूरत की चीजों को खरीद लेना। अगर आप बिना सूची लिये खरीददारी के लिए जा रहे हैं मतलब कि आप निश्चित रूप से ऐसी चीजें खरीदेंगे जिनकी आपको वाकई जरूरत है ही नहीं। बाजार जाने से पहले आवश्यकता के कपड़ों की सूची बनायें और जब खरीददारी करें, अपनी सूची पर कायम रहें।

बाजार और उपभोक्तावाद की समझ

उपभोक्तावाद एवं बाजार के प्रभाव से हम न सिर्फ पहले से अधिक कपड़े खरीद रहे हैं, बल्कि उन्हें पहले के मुकाबले आधे समय ही उपयोग कर रहे हैं। दूसरों से अच्छा दिखने की चाह में नवीनतम फैशन के कपड़े पहन रहे हैं। अल्ट्रा फास्ट फैशन का नवीनतम ट्रेण्ड, जिसमें कैटवॉक लुक और सेलिब्रिटी से प्रभावित होकर फटाफट नए कलेक्शन उतारे जाते हैं, साल की शुरुआत के बाद से, फास्ट फैशन दिग्गज एच एण्ड एम और जारा ने संयुक्त रूप से लगभग 11,000 नये डिजाइन जारी किए हैं। इसी समय अल्ट्रा-फास्ट फैशन ब्राण्ड शीन ने 3 लाख नये डिजाइन जारी करके सबको चौंका दिया है। ग्राहक अधिक से अधिक कपड़े खरीदे, इसके लिए कई तरीके अपनाए जा रहे हैं। एक के साथ एक फ्री, 3 के मूल्य में 5 कपड़े जैसी योजनाओं में कई बार हम ऐसे कपड़े भी खरीद लेते हैं, जिन्हें हम पहनते ही नहीं है। ऑनलाइन ऑफर के लोभ एवं अन्तिम पीस बचा है के डर से खरीददारी करना मूर्खता ही है। जब भी कपड़े खरीदें, स्वयं से पूछें कि क्या वाकई में मुझे इसकी जरूरत है?

ऑनलाइन खरीदारी के एप्प से दूरी

ऑनलाइन खरीददारी पोर्टल पर समय बिताना, कहाँ क्या सस्ता मिलता है, की रिसर्च, प्रोडक्ट रिव्यू, रेटिंग देने जैसी आदत डालना बाजार का एक ऐसा मकड़जाल है जिसमें उलझा हुआ व्यक्ति समय, धन और मन की बर्बादी करता हुआ हर वक्त मोबाइल पर अपनी अंगुलियाँ घुमाता देखा जा सकता है। इन ऑनलाइन कम्पनियों द्वारा भेजे गये सन्देश भी खरीदने की इच्छा को बढ़ावा देते हैं। मोबाइल से ऐसे एप्लीकेशन को हटाना ही बेहतर विकल्प है।

बनायें अपना फैशन स्टाइल

कुछ साल पूर्व तक प्रत्येक जाति का अपना स्थायी फैशन स्टाइल होता था। महिलाओं एवं पुरुषों के पहनावे के आधार पर ही पता लग जाता था कि ये अमुक जाति के हैं। राजस्थानी संस्कृति में चुंदड़, लहरिया, पोमचा, फाग आदि की परिपाटी वस्त्रों के सीमित उपयोग के प्रयोजन से ही चली आ रही थी। विवाह के समय ससुराल से मिलने वाली चुंदड़ (चूंदड़ी) में ही सभी मांगलिक कार्य यथा देवपूजन, गृहप्रवेश, मायरा, बच्चों की शादियाँ आदि सम्पन्न हो जाते थे। यहाँ तक कि सुहागिन रहते मृत्यु होने पर वही चूंदड ओढ़ाकर अन्तिम यात्रा सम्पन्न की जाती थी।

वर्तमान में फैशन का दौर अस्थायी है। फैशन बदलते ही नया का नया कपड़ा अनुपयोगी मान लिया जाता है। ऐसे में खुद का एक फैशन स्टाइल बनाना वस्त्र उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत पालन करने में सहायक हो सकता है। यूक्रेन के प्रधानमन्त्री जेलेंस्की हमेशा हरे रंग की टी शर्ट पहनते हैं वहीं फैसबुक के संस्थापक मार्क जुकरबर्ग ने ग्रे रंग की हुडी एवं टी शर्ट को, तो विश्व के सर्वाधिक धनी व्यक्ति बिल गेट्स ने सूट और टाई के स्थान पर सामान्य स्वेटर एवं बटन डाउन शर्ट को अपनी फैशन स्टाइल बनाया है। स्वयं का फैशन स्टाइल स्थायी होता है, अतः कपड़े लम्बे समय तक पहने जा सकते हैं एवं बहुत अधिक कपड़े खरीदने की आवश्यकता भी नहीं होती है।

आजकल कपड़े फटने या पुराने होने पर नहीं, अपितु मन भर जाने से पहनना बन्द कर दिये जाते हैं। पुराने कपड़ों के पुनः उपयोग के उद्देश्य से विदेशों में रिश्तेदार एवं दोस्त एक जगह इकट्ठा होते हैं। अपने घर से स्वयं के एवं बच्चों के ऐसे कपड़े लेकर आते हैं, जिनसे उनका मन भर गया हो। ऐसे कपड़ों की अदला-बदली कर ली जाती है। क्लॉथिंग स्वेप पार्टी के अलावा एक ही बार उपयोग में आने वाले जैसे शादी में दूल्हा-दुल्हन के कपड़े किराये पर लेना भी एक अच्छा विकल्प हो सकता है।

वस्त्र पहनना आवश्यक है, समय अनुरूप अच्छे वस्त्र पहनना भी आवश्यक है, सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिहाज से भी वस्त्रों की उपयोगिता नकारी नहीं जा सकती, किन्तु व्यक्तिगत स्तर पर टिकाऊ फैशन को विकसित कर बढ़ावा दिया जा सकता है। सस्ते फास्ट फैशन की बजाय अच्छी गुणवत्ता वाले कपड़े खरीदकर, कपड़ों के जीवन को बढ़ाने के तरीके जैसे दाग़ लगते ही तुरन्त दाग़ हटाकर, ड्रायर के बजाय हवा में सुखाकर, तेज धूप की बजाय छाँव में सुखाकर लम्बे समय तक उनका उपयोग किया जा सकता है। संक्षेप में फैशन की वजह से बर्बाद होती पृथ्वी को जैन संस्कृति में निर्दिष्ट उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत के अन्तर्गत वत्थविहि परिमाण का पालन कर बचाया जा सकता है।

-राज्यप्रमुख, अल्पसंख्यक मामले, बी.जे.एस, राजस्थान, निदेशक, प्राज्ञ ग्रुप ऑफ स्कूल्स, बिजयनगर, जिला-अजमेर (राज.)

लो समय, मैं तुमसे लड़ता हूँ

श्री सुशील चणोदिया

थक हार कमी मत कर देना,
निःशंक बढ़ाओ तुम दुःख को।
मैं देखूँ तेरी निष्ठुरता, तू देख मेरे पराक्रम को।
हाँ आँधी तूफान आने दो,
अब कहाँ मैं उनसे डरता हूँ।
लो समय, मैं तुमसे लड़ता हूँ।।1।।
अब और हजारों बाधाएँ, अब और हजारों त्रास मिले।
कटु शब्द दण्ड और रोगों से,
क्षणभर भी न अवकाश मिले।
विपरीत समय की धाराओं,
को चीर मैं आगे बढ़ता हूँ।
लो समय, मैं तुमसे लड़ता हूँ।।2।।
चाहे शत्रु ने घेरा हो, बौछार लगे अब बाणों की।
और चारों ओर अन्धेरा हो,
बाजी हो अपने प्राणों की।
एक क़दम न पीछे हट जाऊँ,
निष्कम्प हृदय से अड़ता हूँ।
लो समय, मैं तुमसे लड़ता हूँ।।3।।
सारी दुनिया विपरीत कभी,
और सत्य पक्ष कुछ और रहे।
तो सत्य पक्ष के आग्रह में, तन मन वाणी का जोर रहे।
सत्य शिखर को पाने का, हठाग्रह ले चढ़ता हूँ।
लो समय, मैं तुमसे लड़ता हूँ।।4।।

-हैदराबाद (तेलांगना)

10 अप्रेल 2023
जिनवाणी 58
ISSN 2249-2011

अध्यात्म-विज्ञान

ध्यान और रसायन

श्री प्रमोद महनोत

ध्यान, जिसे आजकल Meditation के सुलभ नाम से जाना जाता है और रसायन अर्थात् Hormones in Medical Terms. कई बार हम गुणी जनों से प्रवचन के दौरान सुनते हैं कि तप-त्याग, ध्यान के द्वारा उत्कृष्ट रसायन की प्राप्ति होती है। इन उत्कृष्ट रसायन के बारे में जानकारी का विज्ञान अभी सामर्थ्य को प्राप्त नहीं हुआ है। पर हाँ, इसके लिये कोई आधार बनाने की ओर प्रयास जारी है।

प्राणायाम का शाब्दिक अर्थ है प्राण का आयाम एवं विस्तार। प्राणायाम अर्थात् हमारी जीवनी शक्ति अथवा प्राण ऊर्जा का विस्तार। प्राणायाम के बाद ध्यान का अभ्यास करने से गहरे लाभ होते हैं। वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध हुआ है कि प्राणायाम के दौरान प्राण ऊर्जा का स्तर बढ़ने से हमारे मस्तिष्क के न्यूरोट्रांसमीटर्स में अच्छे परिवर्तन होते हैं और हमारा व्यवहार स्वस्थ एवं सकारात्मक बना रहता है। साथ ही शरीर को प्रसन्नता प्रदान कराने वाले जैव रसायनों का सञ्चार पर्याप्त मात्रा में होता है।

जिस प्रकार अग्नि से तपाये जाने पर स्वर्ण, चाँदी आदि धातुओं के मल दूर हो जाते हैं वैसे ही प्राणायाम के पश्चात् ध्यान के अनुष्ठान से न सिर्फ इन्द्रियों में आये दोष विकार, बल्कि देह, प्राण, मन के विकार भी नष्ट हो जाते हैं। इसके अभ्यास से विवेक (ज्ञान) रूपी प्रकाश पर पड़ा अज्ञानरूपी आवरण हट जाता है। ध्यान का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक साधना का मार्ग प्रशस्त करना है।

प्राणायाम तथा ध्यान के दौरान शरीर से सेरोटोनिन हार्मोन निकलता है, जिससे सकारात्मक दृष्टिकोण की उत्पत्ति होती है। अगर सेरोटोनिन का लेवल बढ़ा हुआ रहेगा तो विपरीत परिस्थितियों में भी सोच सकारात्मक रहेगी। जब हम नि:स्वार्थ भाव से किसी की सहायता करते हैं, मदद करते हैं, तो भी शरीर में सेरोटोनिन बढ़ता है। चाहे सुख-सुविधाओं और संसाधनों की सीमितता हो, फिर भी दान करने पर खुशी महसूस होती है। वैज्ञानिकों के अनुसार दान, उपहार देने से दिमाग का रिवार्ड सेन्टर (मीसोलिम्बिक पाथ वे) सक्रिय हो जाता है और Endorphine की उत्पत्ति होती है। अपने वजूद का भान जाग्रत होता है, जिससे हमें सुकून का अहसास होता है।

जब मानव तनाव में होता है, वह चाहे बाहरी हो या आन्तरिक, तब शरीर में कोरटिसोल नामक हार्मोन का रिसाव होता है, इसे खतरनाक रसायन मानते हैं, क्योंकि यह झगड़ा करने हेतु प्रोत्साहित करता है। यह हमारी याददाश्त की शक्ति एवं रोग प्रतिरोधक प्रणाली को नुकसान पहुँचाता है तथा नकारात्मक विचार उत्पन्न करता है। ध्यान द्वारा उत्पादित सेरोटोनिन रसायन कोरटिसोल रसायन के स्राव को रोकता है, जिससे ऐसा वातावरण बनता है, जिसमें सीखना तथा याद करना अत्यन्त आसान हो जाता है। इससे समता भाव भी जाग्रत होता है।

हम देखते हैं कि दुनिया के अरबपति जिन्होंने प्रचुर सांसारिक सुख को भोग लिया है, हर मनचाही वस्तु को प्राप्त कर लिया है तथा Dopamine स्राव होने से एक स्वच्छ एवं सुन्दर अवस्था में पहुँच चुके हैं तो उनमें फिर सामाजिक कार्यों में अभिरुचि जाग्रत होती है और फिर उन्हें आवश्यकता पड़ती है Serotonin की, जिसे वे आध्यात्मिक झुकाव से प्राप्त करते हैं।

विज्ञानानुसार जब हम दिल खोलकर हँसते हैं या

अत्यधिक प्रसन्न होते हैं, तो इससे हमारे शरीर में प्राकृतिक रूप से Endorphins नामक रसायन स्राव होता है। जो स्वस्थ होने का अहसास कराता है, ऊर्जा के स्रोत को बढ़ाता है। ध्यान के दौरान उत्पादित Endorphin आनन्द प्रदान करता है।

डॉ नोडोलस्काई के अनुसार नियमित Meditation द्वारा Estrogen रसायन को सन्तुलित रख सकते हैं। इससे दिमाग की स्वस्थता रहती है और शरीर में वसा (Fat) का जमाव व्यवस्थित होता है।

डॉ. सारा गोटप्राइड के अनुसार स्वस्थ रहने के लिए प्रथम आवश्यकता है-सात्त्विक आहार। तत्पश्चात् शारीरिक श्रम, व्यायाम, योग और ध्यान। ऐसी स्थिति में प्रोजेस्ट्रोन (Progestrone) रसायन उपलब्ध होता है, जो उतावलेपन तथा चिड़चिड़ेपन को रोकता है। अच्छी नींद मिलती है और स्वभाव (मूड) बदल जाता है।

Mc Gill University के शोध के अनुसार संगीतमय वातावरण में रहने से, जिनमें भजन, कीर्तन और मन्त्र उच्चारण शामिल हैं, के दौरान डोपामाइन (Dopamine) रसायन प्राप्त होता है तथा वातावरण सुन्दर प्रतीत होता है। यह Feel Good Atmosphere प्रदान करता है और Depression से सुरक्षा प्रदान करता है।

San Francisco के वैज्ञानिकों के अनुसार तनाव मुक्त एवं जीवन को सुखमय-सन्तोषमय बनाने वाले व्यक्ति करीब 10 वर्ष अधिक जीवित रहते हैं। इसका मुख्य कारण है टेलोमेरेज (Telomerase) रसायन का उत्पादन, जो सांसारिक तनाव खत्म कर हमें युवा एवं स्वस्थ्य रखता है।

ध्यान द्वारा Brain की Beta Waves की Intensity कम होने लगती है तथा Brain Alfa state की ओर जाने लगता है, जिसकी वजह से मन शान्त और प्रसन्न रहने लगता है। दुःख सहने की क्षमता बढ़ने लगती है। व्यक्ति के बौद्धिक चेतनागत स्तर में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देने लगते हैं।

ध्यान के प्रभाव से शरीर में O_2 की खपत भी कम हो जाती है और CO_2 का निष्कासन अधिक होने लगता है, जिसकी वजह से Metabolic Rate में सुधार होने लगता है। साथ ही शरीर में Free Radicals के बनने की गति धीमी पड़ने लगती है। ग्रहण किये हुए भोजन का पाचन, अवशोषण, वितरण और निष्कासन प्रणाली सही तरीके से काम करने लगती है। साथ ही हृदय गति, रक्तचाप, श्वास गति आदि भी सही बनी रहती है। बहते हुए रक्त में Lactic Acid की मात्रा कम होने लगती है। जब शरीर के सभी महत्त्वपूर्ण अंग अपनी कार्य प्रणाली को स्वस्थ तथा सुचारू रूप से सम्पन्न करते रहते हैं तो मस्तिष्क और हृदय को स्वस्थ किया जा सकता है।

धर्म, योग, सात्त्विक भोजन, प्रकृति प्रदत्त जीवन प्रणाली, आध्यात्मिक जीवन पथ, दान, दूसरे जीवों का कल्याण आदि के अनुरूप जीवन जीने से व्यक्ति के भीतर आत्मघाती रसायनों का निर्माण बहुत ही कम मात्रा में होने लगता है। ऐसे रसायन के स्राव के कारण ही हिंसा, कठोरता, कृपणता आदि को जीवन में प्रश्रय मिलता है। जो व्यक्ति प्रकृति के नियमों के अनुसार अपने जीवन को ढाल लेते हैं वे मनोदैहिक रूप से सम्पूर्ण जीवन को सृजनता के पथ पर अग्रसर कर देते हैं।

भारत की विशिष्टता रही है कि यहाँ कभी धर्म एवं विज्ञान में टकराव नहीं होता। सम्पूर्ण भारतीय इतिहास दर्शाता है कि यहाँ की सभ्यता अनूठी है। खास बात यह रही है कि हमारे अधिकतर वैज्ञानिक स्वयं सन्त, ऋषि एवं मनीषी थे, जैसे-तीर्थंकर आदिनाथ, आचार्य चरक, भास्कराचार्य, आचार्य भट्ट, सुश्रुत, वराहमिहिर आदि।

विज्ञान के नित नये तथ्य उजागर होते रहते हैं, पुरानी थ्योरी का स्थान नई थ्योरी ले लेती है और बदलाव चलते रहते हैं। परन्तु आगम वाणी शाश्वत है, जो युगों-युगों से सत्य रही है और रहेगी तथा हमें दिशा प्रदान करती रहेगी।

-सी 345, हंसमार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राजस्थान)

10 अप्रेल 2023
जिनवाणी 60
ISSN 2249-2011

अध्यात्म

कैसे हो व्यर्थ-चिन्तन का त्याग?

श्री धर्मेन्द्र कुमार जैन

व्यर्थ चिन्तन का अर्थ है बिना किसी प्रयोजन या उद्देश्य के विचार करना, चिन्तन करना।

मानव जीवन में विचार या सोच का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि सर्वप्रथम मानव मानसिक स्तर पर सोच-विचार करता है, फिर अपने विचारों के अनुरूप ही उसके वचन होते हैं तथा सोच के अनुसार ही उसका आचरण होता है। अत: वचन एवं आचरण (कर्म) में व्यक्ति की सोच का ही प्रभाव होता है। संस्कृत में एक सूक्ति है-**प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते।**

अर्थात् बिना किसी प्रयोजन या उद्देश्य के मन्दमति अर्थात् मूर्ख भी कोई कार्य नहीं करता। उसका भी किसी भी प्रवृत्ति के पीछे कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। फिर चिन्तनशील मानव की तो बात ही क्या? 'मननात् मनुष्य:' अर्थात् मनन करने से ही मनुष्य कहलाता है। मनन करने का सामर्थ्य जितना मनुष्य योनि में है उतना अन्य योनियों में नहीं है।

चिन्तन के 2 प्रकार हैं-1. सकारात्मक चिन्तन 2. नकारात्मक चिन्तन। जिन विचारों से मनुष्य में आशा, विश्वास, साहस, ऊर्जा एवं शक्ति का सञ्चार होता है वह सकारात्मक चिन्तन है। सकारात्मक चिन्तन से व्यक्ति का उत्थान होता है। वह सदा सन्मार्ग पर अवस्थित रहता है, उसका मन सदा प्रसन्न रहता है। जिस व्यक्ति की सोच जितनी ऊँची होती है, वह जीवन में उतना ही विकास करता है।

व्यर्थ चिन्तन क्या होता है? जिन विचारों को हम नहीं चाहते हैं फिर भी वे हमारे मानस पटल पर उभर कर आते हैं, अथवा जिनसे कोई प्रयोजन नहीं होता, वे सभी विचार व्यर्थ चिन्तन के अन्तर्गत आते हैं।

व्यर्थ चिन्तन का कारण

व्यर्थ चिन्तन का मुख्य कारण है परिस्थिति। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि सदा सर्वत्र मेरे अनुकूल परिस्थिति बनी रहे। मैं जैसा चाहता हूँ वैसा ही होता रहे, सभी पारिवारिक जन मेरे अनुकूल रहें। किन्तु यह पूर्णरूपेण व्यक्ति के नियन्त्रण में नहीं है। कभी मन चाहा हो जाता है तथा कभी नहीं होता। चाहे अमीर हो या गरीब, छोटा हो या बड़ा, शिक्षित हो या अशिक्षित, सामान्य हो या विशेष, प्रत्येक व्यक्ति के सामने अनुकूल एवं प्रतिकूल स्थितियाँ उत्पन्न होती रहती हैं, किन्तु जो परिस्थिति उसे अच्छी लगती है, उसके प्रति उसका राग हो जाता है। अत: अनुकूल परिस्थिति को प्राप्त कर वह हर्षित होता है, प्रसन्न होता है, जबकि प्रतिकूल परिस्थिति उत्पन्न होने पर वह उससे द्वेष करने लगता है, वह उसे अच्छी नहीं समझता है। अनिष्ट के वियोग हेतु वह निरन्तर चिन्तन करता रहता है कि कैसे इससे मुझे छुटकारा मिले। परिणामत: वह निरन्तर दु:ख भोगता रहता है। यही आर्तध्यान है।

व्यर्थ चिन्तन से हानियाँ

चिन्तन करना मानव का स्वभाव है। व्यक्ति कितना ही चाहे तथापि चिन्तन किए बिना नहीं रह सकता। अत: हम दुश्चिन्तन न करके सद्चिन्तन करें, क्योंकि व्यर्थ चिन्तन से नकारात्मक भावों की निरन्तर अभिवृद्धि होती है। व्यर्थ चिन्तन से पूर्व सञ्चित शक्ति का ह्रास होता है, मन दूषित होता है, भयभीत होता है, विवेक कुण्ठित होता है तथा व्यक्ति किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाता है। सोच-विचार कर कार्य करने की शक्ति नष्ट हो जाती है। उसके अन्दर भय, तनाव, घबराहट और सामर्थ्यहीनता उत्पन्न हो जाती है। वह प्राप्त तन, मन, धन, योग्यता, सामर्थ्य, शिक्षा आदि संसाधनों का

उपयोग नहीं कर पाता है। भूतकाल के सुख-दुःखों का चिन्तन एवं भविष्य के सुख की कल्पनाओं के कारण वह उपलब्ध का सदुपयोग नहीं कर पाता। परिणामस्वरूप उसका वर्तमान भी नहीं सुधरता है।

आचार्य हस्ती चिन्तन के विषय में फरमाते हैं- ''अतीत भोग-विलास में बीत गया और किसी प्रकार की साधना न हो सकी, इसकी चिन्ता मत कीजिए। चिन्ता करिए वर्तमान की, जो शेष है। उसका निश्चय ही सदुपयोग होना चाहिए। मनुष्य, वर्तमान अवस्था में जागकर ही आत्म कल्याण कर सकता है।''

व्यर्थ चिन्तन प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्ति के विकास-मार्ग को अवरुद्ध करता है चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, राजनीति का हो, आर्थिक हो, सामाजिक हो या आध्यात्मिक हो। जैसे एक विद्यार्थी शिक्षा के क्षेत्र में अपना उज्ज्वल भविष्य बनाकर कीर्तिमान स्थापित करना चाहता है, किन्तु उसके मन में नकारात्मक विचार आ जाएँ कि मैं अपने कक्षा साथियों की तुलना में कमजोर हूँ। मेरी विषय के हार्द को ग्रहण करने की शक्ति न्यून है। परिश्रम करने पर भी मुझे अन्य छात्रों की अपेक्षा अंक कम प्राप्त होते हैं। मेरा दिमाग कमजोर है। अतः वह परिश्रम से जी चुराने लगेगा। मन को एकाग्र करके अध्ययन में संलग्न नहीं होगा। उसके मस्तिष्क में ये विचार पूर्णरूप से दृढ़ हो जायेंगे कि मैं अध्ययन में अव्वल नहीं हो सकता। इसका परिणाम होगा कि उसे असफलता ही हाथ लगेगी। दूसरी ओर वही विद्यार्थी यह चिन्तन करे कि मुझमें और कक्षा साथियों में कोई अन्तर नहीं है, जैसे वे हैं, वैसा ही मैं हूँ। कक्षा में एक ही शिक्षक छात्रों को बिना भेद के समान रूप से अध्ययन कराता है तो कोई छात्र कक्षा में प्रथम स्थान बना सकता है तो मैं क्यों नहीं बना सकता। उसमें कौन-कौन से गुण हैं जो मुझमें नहीं हैं, यदि मैं भी उसकी तरह लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पित होकर मन को एकाग्र करके पूर्ण ईमानदारी से कठोर परिश्रम करूँ तो मुझे भी अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी। इस प्रकार इसमें सकारात्मक चिन्तन से एक नयी अभूतपूर्व ऊर्जा और शक्ति का सञ्चार होगा। फलस्वरूप ऐसी कोई शक्ति नहीं, जो उसको अपने इष्ट लक्ष्य की प्राप्ति से रोक सके। वह अवश्य ही सफलता के सोपान पर आरूढ़ होगा।

व्यर्थ-चिन्तन से मुक्ति कैसे हो ?

संसार में दो स्थितियाँ हैं-परिवर्तनशील और अपरिवर्तनशील, नित्य और अनित्य, नाशवान् और अविनाशी। व्यर्थ चिन्तन का मूल कारण है ज्ञातिजन, बन्धुजन, इन्द्रिय सुखों के भोग भोगने के साधन आदि के प्रति व्यक्ति की आसक्ति, मोह एवं ममता का होना। इन सभी का स्वभाव है निरन्तर परिवर्तन होना, बदलाव होना। व्यक्ति चाहे या न चाहे इनमें स्वाभाविक रूप से परिवर्तन होता है। ममता, राग, मोह एवं आसक्ति के कारण व्यक्ति चाहता है कि इनमें बदलाव न हो, किन्तु फिर भी बदलाव हो ही जाता है। ऐसा होने पर उनसे राग के कारण दुःख होता है। अतः व्यक्ति के सामने कैसी भी स्थिति हो, अनुकूल या प्रतिकूल, बुरी या अच्छी, जैसी भी हो, उससे ममता, मोह आसक्ति न रखे, बल्कि उसका स्वागत करे, आदर करे, सदुपयोग करे। प्राप्त परिस्थिति के प्रति राग-द्वेष भाव से रहित होकर असहयोग करें। व्यक्ति चिन्तन करे कि ये सब पर भाव हैं, परिवर्तनशील हैं, नाशवान हैं, इनसे मेरा नित्य सम्बन्ध नहीं है। वीतरागी सन्त के ये वचन उद्धरणीय हैं-

''अप्राप्त परिस्थिति के व्यर्थ-चिन्तन का त्याग कर शक्ति का सञ्चय करें। उसके द्वारा वर्तमान परिस्थिति का सदुपयोग कर डालें। वर्तमान के सदुपयोग से ही भविष्य उज्ज्वल बनता है। व्यर्थ चिन्तन से नहीं।''

यदि व्यक्ति अनुपलब्ध भोग के साधनों के चिन्तन का त्याग कर देता है तो उसका आवश्यक सामर्थ्य सुरक्षित रहता है। व्यर्थ-चिन्तन का त्याग कर देने पर उससे होने वाले सुख-दुःख से वह मुक्त हो जाता है। अनुपलब्ध काम-भोगों के साधनों को जुटाने के सम्बन्ध में चिन्तन करने से मानव की शक्ति वृथा व्यय होती है, जिससे जो साधन सहज में हमें प्राप्त हैं, चाहे वह तन हो, मन हो, धन हो उनका भी पूर्णरूपेण सदुपयोग नहीं हो पाता।

व्यर्थ-चिन्तन का त्याग तथा सद्चिन्तन युगपद् होते हैं। यदि साधक निरन्तर सद्चिन्तन करता है तो वह स्वतः ही स्वाभाविक रूप से व्यर्थ-चिन्तन से बच जाता है। अनुपलब्ध वस्तु एवं व्यक्तियों के चिन्तन का त्याग करने से नवीन राग की उत्पत्ति नहीं होती है, क्योंकि जिसका हृदय से त्याग हो जाता है, वह वस्तु सामने होने पर भी उससे आसक्ति नहीं होती, उसकी चाह नहीं होती। व्यक्ति अपने ही द्वारा सन्तोष को प्राप्त करता है। उपलब्ध संसाधनों का सदुपयोग करने का सामर्थ्य उसमें स्वतः उत्पन्न हो जाता है। अतः स्थायी सुख-शान्ति, प्रसन्नता एवं दुःखरहित होने का अमोघ उपाय यह है कि व्यक्ति वस्तुओं आदि का ममता रहित होकर सदुपयोग करे, उनकी ममता न रखे। भगवान महावीर की अन्तिम देशना रूप उत्तराध्ययनसूत्र भी साधक को निरन्तर निर्मम, निरंहकार, निस्संग होने की प्रेरणा दे रहा है-

निम्ममो निरहंकारो, निस्संगो चत्तगारवो।
समो य सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य।।29-89।।

-प्लॉट नं. 55-56, क्यूब लोटस, फ्लैट नं. 102, अमृत नगर, मुहाना मण्डी, जयपुर (राजस्थान)

कैरियर से पहले कैरेक्टर जरूरी

श्री प्रियेश पारसमल दुग्गड़

आजकल देखा जाय तो हर एक माता-पिता का अपने बच्चों के लिए एक ही सपना होता है। कोई चाहता है कि मेरा बेटा डॉक्टर बने, तो कोई चाहता है वकील बने, कोई चाहता है सी.ए. बने, तो कोई चाहता है इञ्जीनियर बने, कोई चाहता है शिक्षक बने तो कोई चाहता है इन्सपेक्टर बने। इन सपनों को हकीकत में बदलने के लिए वे माता-पिता क्या-क्या नहीं करते हैं, बहुत रुपया वे अपने बच्चों की पढ़ाई के लिए खर्च कर देते हैं और सुबह से शाम तक पढ़ाई-पढ़ाई का गीत गाते हैं।

लेकिन बन्धुओं! यह स्कूल कॉलेज की पढ़ाई उन बच्चों को डिग्रियाँ तो दिला सकती हैं उनका कैरियर तो बना सकती है, लेकिन उनका कैरेक्टर नहीं बना सकती।

अगर आप अपने बच्चों का कैरेक्टर बनाना चाहते हैं तो आज से ही आप अपने बच्चों को धर्म की शिक्षा अवश्य दीजिए, उनको सन्त-मुनिराजों एवं महासतियाँजी म.सा. के पास भेजिये, उनको धार्मिक पाठशाला में भेजिये, उनको धार्मिक शिविरों में भेजिये। फिर देखिये आपके बच्चों में कितनी जल्दी धर्म के संस्कार आते हैं और यही संस्कार जीवनभर रहते हैं। याद रहे पाठशाला के 10 वर्ष जीवन के 100 वर्षों को अच्छा बना देते हैं।

खुशी-खुशी हार जाइये

श्री राजेन्द्र जैन 'राजा'

छोड़िये सारी शिकायतें,
और जी खोल के, मुस्कराइये।
दिल भी मिल जायेंगे एक दिन,
पहले हाथ तो मिलाइये।।
माना कि अन्धेरा है घना,
मगर, वह भी हार जायेगा।
आत्मविश्वास का मित्रों,
देहरी पर, एक दीप तो जलाइये।।
लम्बा है सफर और पथरीली है डगर,
तो भी क्या? हिम्मत मत हारिये।
मञ्ज़िल मिलेगी यकीनन तुम्हें,
बस चलने की कसम तो खाइये।।
बात बात पर रूठना-मनाना छोड़िये,
दर्द बाँटने का हुनर सीख जाइये।
रिश्तों की खातिर गर, पड़े हारना,
तो बेशक, खुशी खुशी हार जाइये।।

-44/221, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर

ISSN 2249-2011

जीवदया

उड़ जा कबूतर

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

रविवार को संस्कारशाला से बच्चों को कुछ जीवदया एवं परोपकार के कार्य करने के लिए प्रेरणा दी गई ...जिसमें से एक कार्य था ..पक्षियों को पिञ्जरे से मुक्त करवाना। बच्चों ने घर आकर जब मुझे बताया ...तो मैंने कहा ..यह तो बहुत अच्छा कार्य है ..हम अवश्य करेंगे। चेन्नई में एक ऐसी दुकान है जहाँ पक्षी बेचे जाते हैं...मेरे ध्यान में थी। 18 मार्च को मेरी बेटी वर्षल, भवी एवं भतीजे गौरव को लेकर मैं उस क्षेत्र में गया। उस दुकान से 5-6 बिल्डिंग दूर... एक रिश्तेदार के ऑफिस में बच्चों को बैठाकर मैं उस दुकान पर गया, जो कि मूलतः तो कसाई की दुकान ही थी ...बस उसको बाहर काँच इत्यादि लगाकर आधुनिक रूप देने का प्रयास किया गया था। दुकान के ऊपर बड़े बोर्ड में लिखा था कि अनेक तरह के पशु-पक्षी यहाँ जिन्दा और मुर्दा उपलब्ध हैं। यह पढ़कर मन घबराने लगा कि हिंसा के उस मञ्जर को ..उन रक्त से सने वीभत्स दृश्यों को ...कैसे देखना होगा?

खैर...हिम्मत करके उस दुकान की दहलीज पर बैठे एक लड़के से पूछा कि पक्षी खरीदने हैं? उसने कहा कि उनके पास अनेक तरह के पशु-पक्षी हैं जैसे कि बिल्ली, मुर्गी, कबूतर, खरगोश, चिड़िया इत्यादि ...जो चाहे खरीद लो ...फिर कहा कि ऊपर की मञ्ज़िल में सभी तरह का माँस भी मिलेगा और जिन्दा एवं मुर्दा पशु-पक्षी भी भरे पड़े हैं...ऊपर चलो और खुद ही देख कर ले लो...मैंने कहा कि मुझे ऊपर नहीं चलना ..ऐसा करो कि तुम चार कबूतर लेकर आ जाओ। वह गया ...आया तो उसके दोनों हाथों में निर्ममता से दो-दो कबूतर पकड़े हुए थे ...वे कबूतर एकदम कमजोर .. एकदम बेबस ..मन काँप गया। छह सौ रुपये देकर मैंने उससे कहा कि भाई इनको इतना जोर से मत पकड़ो.. इनको एक पिंजरे में डालकर 5-6 बिल्डिंग दूर लेकर आ जाओ... वहीं बच्चों के सामने इनको आकाश में उड़ा देंगे...!

तीनों बच्चे बेसब्री से इन्तजार कर रहे थे ...मेरे साथ आये उस लड़के ने जैसे ही पिञ्जरे से चारों कबूतरों को निकाल कर हाथों में पकड़ा...बच्चे अत्यन्त द्रवित हो गए ...उन्होंने सोचा भी नहीं होगा कि मासूम से दिखने वाले इन पक्षियों पर कैसे-कैसे जुल्म ढाए जाते होंगे। हम खुश भी थे कि कुछ ही पलों में कबूतर आकाश में उड़ जायेंगे ...हम सभी ने उन चारों कबूतरों को नमस्कार महामन्त्र सुनाया ...और उस लड़के को पहले एक कबूतर उड़ाने को कहा ...जैसे ही उसने पहला कबूतर उड़ाया..आश्चर्य...उसके हाथ से छूटते ही..कबूतर उड़ा तो नहीं ..लेकिन झटपट से सड़क पर चौराहे की ओर बढ़ गया ...सड़क भी कोई साधारण नहीं ...चेन्नई की एक प्रमुख सड़क पुन्नमल्ली हाई रोड़ ...जहाँ प्रत्येक मिनट में सैकड़ों बड़े-छोटे वाहन गुजर रहे थे ...और पलक झपकते ही वह कबूतर ..सड़क के बीचों-बीच पहुँच गया...ग्रीन सिग्नल हो गया और एक साथ अनेकों वाहन तीर की गति से छूटे ...हम सबकी साँसें अटक गयी कि पता नहीं उस नन्हें से कबूतर का क्या होगा ..बच्चों की आँखों में आँसू निकलने को ही थे कि मैंने बच्चों को सम्भालते हुए उस लड़के को कहा ...भाई! वह कबूतर उड़ नहीं पा रहा है ...तुम प्लीज जाओ और उसे वापिस ले आओ ...तुरन्त गाड़ियों को हाथ दिखाकर रोकते हुए वह गया ..और देखा हमने ...तेज गति से आती गाड़ियों के बीच फँसा हुआ...वह कबूतर भी अपने जीवन के लिए संघर्ष कर रहा था... परन्तु न आगे बढ़ पा रहा था और न ही पीछे आ पा रहा था ...हम सड़क के किनारे ही खड़े अपनी साँसें थाम

कर खड़े थे ...अचानक एक बड़ी-सी वैन कबूतर के ऊपर चढ़ गई ...हम सभी ने अपनी आँखें ही बन्द कर ली ....लेकिन आँखें खोली तो देखा कि उस लड़के ने वैन को रुकवा दिया था ...वैन के चारों पहियों के बीच कबूतर अपनी जान की बाजी खेल रहा था ...कुछ सेकेण्ड भी आगे पीछे होते..तो शायद ..!

उस वैन का ड्राइवर नीचे उतरा...पूरी रोड़ का ट्रैफिक रुक सा गया था ...और उस लड़के ने ड्राइवर के साथ मिलकर पहियों के बीच से डरे हुए कबूतर को निकाला ...भक्षक ही एक बार के लिए तो रक्षक बन गया..कम से कम इस एक कबूतर के लिए ...! और वह लड़का कबूतर को हलके हाथों से पकड़कर किनारे लेकर आया ..हम सभी खुश भी थे और विचलित भी ...एक तरफ कबूतर की जान बचने की ख़ुशी ...तो दूसरी ओर कबूतर की गर्दन के पास घाव दिख रहा था और उसमें से बहता खून हमारे हृदय को भेद रहा था ...किसी गाड़ी के टकराने से यह घाव हुआ लगता है ..लेकिन अनेक तेज गति से दौड़ती गाड़ियों के बीच से ...उस कबूतर का जिन्दा बच पाना किसी आश्चर्य से कम नहीं ...अन्तर्मन में आगम की वाणी कह रही थी ...कि जब तक उस जीव का आयुष्य बाकी है ...तब तक कोई उसके जीवन को छीन नहीं सकता।

बाकी तीन कबूतरों को अभी यहाँ नहीं उड़ाने का मन बन गया ..क्योंकि अब समझ में आ गया कि काफी दिनों से बन्धन में रहने के कारण ये पक्षी ..अस्वस्थ...निराश और हताश हैं। एक तरह से उड़ने का साहस भी नहीं जुटा पा रहे हैं ..इसलिए अभी उनको उड़ाने की कोशिश न करते हुए ..सबसे पहले इनका सहज होना जरूरी है एवं उनमें ये मनोबल बढ़ना जरूरी है कि हम फिर से उड़ सकते हैं।

उस लड़के ने कहा कि आपको इस घायल कबूतर के बदले दूसरा कबूतर दे देता हूँ ...लेकिन हमें अन्दाजा था कि वह दूसरा कबूतर तो दे देगा ..लेकिन इस घायल कबूतर को तुरन्त मारकर इसका मांस बेच देगा...वैसे भी ऐसे लोगों के लिए ..जो रोज सैकड़ों पशु-पक्षी को मारते हैं ...उनके लिए एक जीव के प्राणों की क्या क़दर होगी भला ...। इसलिए उस लड़के को मना करके ...चारों कबूतरों को लेकर...पिञ्जरे को गाड़ी में रखकर हम रवाना हुए। रास्ते में कबूतरों को नमस्कार मन्त्र सुनाया ...सिर्फ बच्चों का ही नहीं ...मेरे जीवन का भी इस तरह का यह पहला अनुभव था ...हम सभी मन ही मन बस यही प्रार्थना कर रहे थे ...कि कैसे भी ये चारों कबूतर स्वस्थ होकर उड़ जाएँ।

सबसे अधिक फिक्र यह थी कि घायल कबूतर का इलाज कहाँ कराया जाए? तुरन्त सोचा कि कोई जैन ट्रस्ट का पक्षी चिकित्सालय हो तो काम हो जायेगा ...लेकिन कोई जानकारी उपलब्ध नहीं हुई ..एक प्राइवेट pet क्लीनिक पर लेकर गए ...डॉक्टर ने जाँच करके बताया कि कबूतर की गर्दन के पास गहरी चोट लगी है ...ड्रेसिंग पट्टी करने के लिए जैसे ही कैंची उठाई...हमारी आत्मा काँप गयी ...उनको रोका कि प्लीज़ ऐसा मत कीजिये ...लेकिन उन्होंने कहा कि यह जरूरी है...पँखों का थोड़ा-सा हिस्सा काटने से ही ड्रेसिंग हो पायेगी ...हम देख ही नहीं पाए...उफ़्फ़ ..वह वेदना ...अभी लिखते समय भी उस दृश्य को सोचकर आँखों में आँसू आ ही गए ...डॉक्टर ने हमारी भावना को समझते हुए बहुत हल्के हाथों से घाव की सफाई की और दवाई लगाकर पट्टी कर दी।

ड्रेसिंग पट्टी करवाकर हम रवाना हुए ...रास्ते में भी यह चिन्तन चलता रहा कि मेरे जीव ने भी ...सिर्फ मेरे ही नहीं बल्कि प्रत्येक जीव ने भी ऐसी और इससे भी कई गुना अधिक वेदना को सहन किया है अनेक भवों में..अनेक बार...! काश...इस दर्दनाक परम्परा का शाश्वत अन्त हो जाए।

घर पर आये और छत पर बने खिड़की वाले कमरे में पिञ्जरे को खोल कर रखा...दाना-पानी के कटोरे रखे...चारों कबूतर पिञ्जरे से बाहर तो आ गए ..लेकिन बिना दाना-पानी ग्रहण किये ही कोने में दुबक गए ...एकदम सहमे-सहमे ...एकदम भयभीत ...नमस्कार महामन्त्र और मंगल पाठ सुनाकर मैं लौट आया।

शाम को भी पूरे परिवार को कबूतरों की चिन्ता ही लगी रही ...भवी प्रतिदिन शाम को 15 मिनट का संवर करने का प्रयास करती है ...आज भी संवर में कबूतरों को याद करके उनके लिए विचार कर रही थी। बात आई तो मैंने उसे तीर्थंकर भगवान शान्तिनाथ के..पूर्व भव की वह अत्यन्त करुणाजनक कहानी सुनाई ...जिसमें मेघरथ राजा एक कबूतर के लिए ...कैसे अपने प्राणों का बलिदान तक देने के लिए सहर्ष तत्पर हो जाते हैं। साथ ही मैंने उसे उत्तराध्ययनसूत्र के पच्चीसवें अध्ययन में वर्णित जयघोष की कहानी का सारांश सुनाया कि कैसे गंगा नदी के किनारे मक्खी, मेंढ़क, साँप, मोर इत्यादि प्राणी...एक-दूसरे के प्राणों के प्यासे बने हुए हैं और कैसे यह मार्मिक दृश्य ...जयघोष के भीतर में वैराग्य का उत्कृष्ट निमित्त बनता है और वे पाँचवें पद को अंगीकार करके ..शाश्वत दूसरे पद को प्राप्त कर लेते हैं। भवी को दोनों कहानी बहुत अच्छी लगी और मुझे यह बहुत अच्छा लगा कि...कितने अधिक धन्यवाद की पात्र हैं संस्कारशालाएँ और उनमें समयदान देने वाले शिक्षक वर्ग...जो बच्चों को इतनी निर्जरा कारक सामायिक-स्वाध्याय साधना के साथ-साथ ...पक्षियों को पिञ्जरे से मुक्त करना जैसे महापुण्यकारक कार्य के माध्यम से स्व-दया और पर-दया को जीवन्त रखते हैं ..खूब-खूब अनुमोदना।

रात में सोने से पहले भी कबूतर का ही विचार चल रहा था ...स्मृति पटल पर वह दिन याद आ गया..जब जोधपुर में 11 जनवरी को तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के साथ विहार सेवा का अमूल्य लाभ मिला। तब श्रद्धेयश्री म.सा. ने पाल रोड़ स्थित कन्हैया गौशाला के ट्रस्टी सेवाभावी श्री राजकुमारजी भण्डारी की लम्बे समय से चली आ रही विनति को ध्यान में रखकर कन्हैया गौशाला में पदार्पण किया। सन्तवृन्द के साथ अनेक श्रद्धालुजन भी गौशाला में उपस्थित थे।

करुणासागर म.सा. ने अत्यन्त अनुकम्पा की बरसात करते हुए ..अनेक गायों के झुण्ड को मंगलपाठ सुनाकर लाभान्वित किया ...। श्री राजकुमारजी भण्डारी ने गौशाला के परिसर में ही बना पक्षी चुग्गा स्थान भी दिखाया और कहा कि यहाँ लगभग 12,000 पक्षी रोजाना दाना चुगने आते हैं। साथ ही यह भी बताया कि यहीं पर जल्द ही पक्षी चिकित्सालय भी शुरू हो जाएगा ...कुत्ते-बिल्लियों के हमलों से घायल, पतंग की डोरी से घायल अथवा अन्य दुर्घटनाओं से ज़ख्मी पक्षियों को जीवनदान देने का यह सशक्त केन्द्र बन सकेगा। अनेक सेवाभावी लोग अलग-अलग क्षेत्र में मञ्ज़िलनुमा पक्षीघरों का निर्माण भी करवा रहे हैं.. जिसमें एक साथ हजारों पक्षी...सुरक्षित रहते हुए दाना-पानी ग्रहण कर सकते हैं। मन में तब भी और...अभी भी अभयदाता और सेवाप्रदाता सभीजन के लिए अत्यन्त अनुमोदना के भावों के साथ ...कब नींद आ गई पता ही नहीं चला।

अगले दिन प्रातःकाल ...घायल वाला कबूतर अभी भी कमजोर ही लग रहा था ....बाकी तीनों कबूतर कुछ स्वस्थ दिखे क्योंकि शायद खिड़की से ...खुले आकाश में उड़ते ...अपने जैसे हजारों पक्षियों को देखकर उनके भीतर भी यह आत्मविश्वास बढ़ा...ऐसा मेरा अन्तर्मन बोल रहा था। मैंने देखा उन्होंने कुछ दाना-पानी खाया ...नमस्कार मन्त्र और मंगल पाठ सुनाकर मैं लौट आया। दिन भर यह विचार चलता रहा कि कबूतर जल्दी से जल्दी स्वस्थ होकर आकाश में उड़ जाए।

शाम को छत पर कमरे का दरवाजा खोला ...चारों कबूतर कुछ सहज दिखे ...मन ही मन ये भाव और शब्द उच्चारित हो रहे थे ..उड़ जा कबूतर ..उड़ जा कबूतर। लगभग आधे घण्टे तक कुछ भी हलचल नहीं हुई ...मन मायूस हो गया। नमस्कार महामन्त्र सुनकर मैं नीचे लौटने को सोचकर मुड़ा ही था ...तभी पीछे से हलचल-सी हुई और कन्धे के पास से तीन कबूतर एक साथ ऐसे उड़े कि बस...बिजली की गति से ...सीधे ऊँचे आकाश में ...मैं अत्यन्त प्रसन्न मन से उन्हें देखता ही रहा...देखता ही रहा तब तक ...जब

तक आँखों से ओझल न हो गए ..परिवार भी यह जानकर खुश हो गया। सभी के बस एक जैसी भावना बनी कि यह चौथा वाला.. घायल कबूतर भी जल्दी से जल्दी उड़ जाए ...इस नीले आकाश में। इसलिए चेन्नई में ज़ख्मी और अस्वस्थ पशु-पक्षी का इलाज करने वाली ...संस्था ब्लू क्रॉस से बात करने पर उन्होंने विशेष एम्बुलेंस भिजवाने का आश्वासन दिया।

श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. की दयाभाव से सनी हुई बात यहाँ याद आ रही है ...वे अक्सर फरमाते हैं कि .. कबूतर कितना अधिक भोला प्राणी है ...दाना चुगने में ही इतना मस्त हो जाता है कि कब बिल्ली झपट कर अपने शिकंजे में जकड़ लेती है ..उसे पता ही नहीं लगता ...बेचारा छूट ही नहीं पाता। मैंने म.सा. को बताया कि मैंने कई बार फ्लैट की पार्किंग में ...कुत्ते-बिल्लियों के मुँह में जकड़े कबूतर को देखकर ..उनके पीछे दौड़ भी लगाई ...लेकिन शिकारी कब शिकार को छोड़ना चाहते हैं? ...कभी कारों के नीचे से होकर बेसमेण्ट में दौड़ जाते ...तो कभी मरणासन्न अवस्था में कबूतर उनके मुँह से छूट जाते...दम तोड़ देते।

मन में यह भावना आई कि प्रत्येक गाँव-शहर में पक्षी चिकित्सालय एवं पक्षीघर सञ्चालित होना ही चाहिए। यह छोटे स्थान पर भी बन सकता है। अतः सभी से विनम्र निवेदन है कि अपने-अपने क्षेत्रों में .. स्थानीय स्तर पर..संस्थाओं के तत्त्वावधान में...गौशालाओं में अथवा अलग परिसर में ...यथासम्भव पक्षी चिकित्सालय एवं पक्षीघर ..सञ्चालित करने की योजना बनाकर ...इस महान् कार्य की शुरुआत करें। साथ ही हितैषी भावना से एक निवेदन यह भी है कि .. पशु-पक्षियों को प्रतिदिन अपने हाथों से चारा-दाना-पानी इत्यादि अवश्य दीजिये ..उदासी दूर हो जाएगी ..अपने जीवन की भी और अपने भाग्य की भी ..अनुभव अवश्य कीजियेगा।

22 मार्च, नए संवत्सर का शुभारम्भ ...सुबह ही ब्लू क्रॉस संस्था की एम्बुलेंस आ गयी ..हमने उस अस्वस्थ कबूतर को नमस्कार महामन्त्र सुनाया और खूब मंगल भावनाएँ ज्ञापित की। उन्होंने बहुत नाजुकता से कबूतर को एम्बुलेंस में रखा ..और हम सभी के चेहरे खिल गए ..आँखों में चमक आ गई और उस जाते हुए कबूतर को देखते हुए ...मन को यह भी विश्वास हो रहा है कि...वहाँ यह कबूतर जल्दी से स्वस्थ होकर उड़ जाएगा ..खुले आसमान में खुली साँस ले पायेगा। पर मन साथ ही यह भी मनन कर रहा है कि अनादिकाल से संसार के पिञ्जरे में रहकर ..कर्मों के बन्धन में फँसकर...यह जीव भी कहीं..उस कबूतर की तरह... बेबस, हताश और निराश तो नहीं हो गया कि अपनी उड़ान को ...अपने शाश्वत घर को ही भूल गया। जैसे अनन्त आकाश हर पक्षी का इन्तजार कर रहा है ...वैसे ही अनन्त सुखों का धाम ...मोक्ष भी तो इन्तजार कर रहा है ...मेरा..आपका...हम सबका ...देह के पिञ्जरे से परे ..इस आत्मा पक्षी का..परमात्मलक्षी का।

-'जिनशासन', 14, अग्रहारम स्ट्रीट, चिन्तादरीपेट, चेन्नई-600002 (तमिलनाडु)

सबको देती ज्ञान किताबें

श्री शुभम बोहरा

भले-बुरे का फर्क बताकर
करती हैं अहसान किताबें।
जीवनभर की हर मुश्किल को
कर देती आसान किताबें।
पुरखों के संचित अनुभव की
होती हैं ये खान किताबें।
बूढ़ी होती और न मरती,
सदा जवान रहती किताबें।।
ऊँची शिक्षा सेवा देकर
बनवाती धनवान किताबें।
सदा सही सन्मार्ग दिखाकर
बना रही बलवान किताबें।। *-जलगाँव (महाराष्ट्र)*

ISSN 2249-2011

साधना

संयम की संरक्षा : जिज्ञासा-समाधान

संकलित

जिज्ञासा–संयम लेने के बाद मात्र आराधना ही करनी चाहिए या प्रभावना पर भी ध्यान देना चाहिए?

समाधान–इसे एक प्रसङ्ग द्वारा समझ सकते हैं। एक पुरुष ऐसा है जो न नौकरी करता है और न व्यापार करता है, वह किसी के लिए भी प्रशंसनीय एवं आदर्श रूप नहीं होता है। कुछ नहीं करने से अच्छा है नौकरी करके कुछ तो आगे बढ़े। व्यापार के लिए धन और अनुभव दोनों चाहिए। नौकरी करने से धीरे-धीरे धन इकट्ठा होने लग जाता है एवं समय के साथ जब अनुभव भी बढ़ने लगता है, तब वह समझदार व्यक्ति सुबह-शाम व्यापार और पूरे दिन नौकरी करता है। आगे बढ़ते-बढ़ते वह स्वयं का व्यापार शुरू कर देता है तथा शाम को कुछ घण्टे नौकरी करता है, फिर एक समय ऐसा आता है कि जब वह स्वयं का व्यापार ही करता है, नौकरी नहीं करता है। सम्पन्नता तो निज से ही मिलती है। साधक की स्थिति भी ऐसी ही होती है। प्रारम्भिक स्तर में उन्हें मात्र आत्मचिन्तन में इतनी रमणता प्राप्त नहीं होती कि वह दिनभर निवृत्ति का जीवन जी सके, लम्बी निवृत्ति में नीरसता आने लगती है। अत: वह प्रारम्भ में कुछ घण्टे आत्मचिन्तन, आत्मरमणता करता हुआ अपने शेष समय का अशुभ से बचाकर शुभ में उपयोग करता है अर्थात् प्रभावना, जन्मकल्याणक आदि में लगाता है। छुट्टी का महत्त्व उसे अधिक समझ में आता है, जो छह दिन अधिक व्यस्त रहता है। ऐसे आराधना के साथ प्रभावना करते हुए उसकी आराधना की प्यास बढ़ने लगती है। अत: वह प्रभावना के कार्य से अवकाश पाते ही स्वयं में डुबकी लगाता है और अखूट आनन्द को पाता है। इस तरह निवृत्ति का, आत्मध्यान का, अभ्यास बढ़ता जाता है और समय के साथ प्रभावना में समय कम और आराधना में समय अधिक लगाया जाता है। आराधना व्यापार तुल्य है। कैवल्य, वीतरागता रूप सम्पन्नता तो आराधना से ही प्राप्त होती है, परन्तु जैसे नौकरी से दरिद्रता घटती है वैसे ही प्रभावना से पुण्य की, गुणों की दरिद्रता घटती है। परन्तु यहाँ ज्ञातव्य है कि प्रभावना नि:स्वार्थ भाव, निरहंकार भाव एवं निर्ममत्व भाव से की जाए तो ही प्रभावना है, नहीं तो वह आत्म-विराधना है। आत्म-गुणों को जीवित रखते हुए की गई प्रभावना भी भावी के लिए कल्याणकर है। ऐसा स्थानाङ्गसूत्र का 10वाँ स्थान और उत्तराध्ययनसूत्र का 29वाँ अध्ययन समझाता है।

जैसे नौकरी का समय घटता गया, व्यापार का समय बढ़ता गया, वैसे ही बढ़ती हुई दीक्षा पर्याय के साथ-साथ आराधना के लिए अधिकाधिक समय निकालना चाहिए। बादल अच्छे भरे हुए होंगे तो अल्प समय बरसकर ही तृप्त कर देंगे, वैसे ही जो अध्यात्म से आपूरित महापुरुष होते हैं, वे 2-5 मिनट में ही शरणार्थी, आगन्तुक पिपासुओं को तृप्त कर देते हैं। आत्मसाधना में निष्णात साधक कुछ न बोले, कुछ न कहे, कुछ न करे, कुछ सुझाव न दे तो भी उनकी उपस्थिति, उनकी आभा, उनकी कृपा-किरणें, उनकी दृष्टि ही आनन्द का कारण बन जाती है।

अत: प्रभावना भी करें तो भी अपना आन्तरिक लक्ष्य तो आराधना ही रहना चाहिये, वैसी ही अपने जीवन की योजना बनानी चाहिए और इस योजना को समय के साथ क्रियान्वित भी करना चाहिए। प्रभावना के कार्यों में संलग्न रहते हुए भी सावधानी रखनी चाहिए कि-

(1) साधु सामाचारी में दोष नहीं लगे। (2) प्रभावना के नाम पर साधुत्व की एवं संघ की अप्रभावना न हो। (3) गण की सेवा को प्राथमिकता रहे। (4)

प्रभावना के कार्यों में हठाग्रह न हो, संघ-समाज की अनुकूलता के अनुसार हो। (5) उसकी सफलता का रसपान करके अहंकार न बढ़े। (6) उसमें अपनी आराधना गौण न हो। (7) गृहस्थ से अधिक व्यक्तिगत सम्बन्ध न जुड़े। (8) प्रभावना का लक्ष्य व्यक्ति को ज्ञान-दर्शन-चारित्र से जोड़ने का हो, स्वयं से जोड़ने का न हो। (9) प्रभावना की शैली अपनी स्थानकवासी परम्परा को सुरक्षित रखने वाली हो। (10) प्रभावना के किसी कार्य से कहीं राग-द्वेष फैल रहा हो तो उसे तुरन्त रोक देना चाहिए, क्योंकि उससे अप्रभावना होती है।

सबसे विशेष तो यह है कि कल्याण कभी स्व-पतन का कारण न बने। कल्याण की चकाचौंध में भी स्वयं का परमार्थ आँखों के आगे स्पष्ट चमकता रहे, यह आवश्यक है।

जिज्ञासा-संयम लेने के बाद गुणस्थान को टिकाये रखने के लिए क्या करना चाहिए?

समाधान-संयम लेने के बाद साधक का जीवन तलवार की धार पर चलने के समान होता है। थोड़ी भी लापरवाही काम नहीं आती। अन्तर्मुहूर्त्त तक ही 6ठा गुणस्थान रह सकता है, अन्तर्मुहूर्त्त में ऊपर न चढ़ें तो गुणस्थान से नीचे गिर जाते हैं। यावत् भावों से मिथ्यात्व तक पहुँच जाते हैं। संयम के भावों से नीचे गिरकर ऊपर चढ़ने का कार्य भी पृथकत्व हजार बार तक ही होता है। अत: संयमी को विशेष सतर्कता रखनी चाहिए। जाग्रत आत्माओं का प्रयास तो ऐसा होता है कि इस भव में 8वें गुणस्थान तक नहीं पहुँच सकते तो अधिकांश समय 7वें गुणस्थान में ही व्यतीत हो, 6ठा गुणस्थान तो मात्र स्पर्श ही हो, इसके लिए संयमी प्रयासरत रहते हैं। जागृति बढ़ाने के उपाय कुछ इस प्रकार हो सकते हैं-

1. किसी भी विषय से मन खेदित हो जाए तो अधिक से अधिक अन्तर्मुहूर्त्त में तो समाधि में आ ही जाना चाहिए।
2. मन में किसी से नाराजगी आ जाए तो यथा शीघ्र उसे क्षमा कर देना चाहिए। अथवा मन मुटाव होने पर सामने वालों से क्षमा माँग लेनी चाहिए।
3. कुछ-कुछ समय में अपने अध्यवसायों को पढ़ते रहना चाहिए। अध्यवसायों में अशुभता आ जाए तो 12 भावना, भजन, चिन्तन आदि के माध्यम से अशुभ से शुभ में आ जाना चाहिए।
4. 'समणोऽहं-मैं श्रमण हूँ' यह स्मृति हर समय रहना चाहिए।
5. लगातार प्रवृत्ति नहीं करनी चाहिए। प्रवृत्ति के बीच-बीच में निवृत्ति के क्षण को जीना चाहिए।
6. विभिन्न-विशुद्ध साधनाओं को करते रहना चाहिए, जिससे अपूर्व-अपूर्व उत्साह बना रहे।
7. आत्म-ग्लानि हो रही हो, मन में निराशा आ रही हो तो गुरु के समक्ष जाकर आलोचना करके हल्का हो जाना चाहिए। गुरु सान्निध्य सम्भव न हो तो लिखकर रख लेना चाहिए। लिखने से मस्तिष्क का भार कम हो जाता है, फिर अवसर आने पर गुरुदेव के समक्ष गर्हा कर लेनी चाहिए। पश्चात्ताप में अन्तर्मुहूर्त से अधिक न रहकर समाधि में रमण करना चाहिए।
8. लक्ष्य प्रतिबद्धता के गुण को जीवन्त रखना चाहिए।
9. बिना किसी प्रसंग को लेकर संकल्प-विकल्प बहुत देर तक रहे हों तो उनसे निवृत्ति दिलाने हेतु बालक बनकर प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिए।
10. लम्बे समय तक आत्मभाव न आ रहे हों तो भरत, ऐरावत, महाविदेह क्षेत्र के संयमियों की हृदय से भाव अनुमोदना करनी चाहिए।
11. आगम की कुछ ऐसी गाथाएँ जो विशेषकर स्व स्तर पर प्रेरणादायी बनती हैं, उनका समय-समय पर चिन्तन करना चाहिए।
12. साधु को अयोग्य प्रवृत्ति से नहीं जुड़ना चाहिए। अनजाने में लापरवाही से जुड़ गए तो यथाशीघ्र उससे निवृत्त हो जाना चाहिए।
13. भूतकाल एवं भविष्यकाल में जीने से ममता-कामना बढ़ती है। वर्तमान में जीने वाला वर्धमान

बनता है। अत: वर्तमान में जीने का विशेष प्रयास रखना चाहिए।

14. चित्त की प्रसन्नता को टिकाये रखना चाहिए। विशुद्ध चित्त ही प्रसन्न रहता है, अत: मन-वचन-काया की विशुद्धि को बनाये रखने में जाग्रत रहना चाहिए।

15. सामान्यत: जिन प्रसंगों से मन में हलचल रहती है, मन में आर्त्तध्यान आता है, उस समय पूर्व में जो-जो चिन्तन सहयोगी सिद्ध हुआ। ऐसे चिन्तनों को स्मृति में सजीव रखना चाहिए।

ये कुछ बिन्दु हैं, विशेषत: तो ज्ञानी भगवन्तों के ज्ञान में है। ऐसे अन्य भी अनेक समाधान हो सकते हैं।

प्रभुवर महावीर भगवान

श्री विजेन्द्र जैन

धन्य धन्य हो प्रभुवर मेरे, महावीर भगवान
कठिन तपस्या करके इन्होंने, पाया केवल ज्ञान
ख्यात हो गए सारे जग में, करके अद्भुत काम
जानोगे जीवन इनका हो जाए कल्याण
धन्य धन्य हो...........
महावीर जब गर्भ में आए, घटना घटी तब एक
त्रिशला ने देखे दिव्य नज़ारे, स्वप्न आए अनेक
पैदा होगा वीर तपस्वी करेगा जग में नाम
धन्य धन्य हो...........
माता को न कष्ट हो कुछ, हलचल कर दी बन्द
चिन्तित हो गए माता-पिता, तब लौटाया आनन्द
पैदा हो गए कुण्डलपुर में, नाम मिला वर्धमान
धन्य धन्य हो...........
देवों ने जब ली परीक्षा, तरह तरह से डराया
मुष्टि से प्रहार किया और, युद्ध में उनको हराया,
परिचय दिया वीरता का, महावीर नाम है पाया,
क्षमा माँग कर देवों ने असली रूप दिखाया,
आशीर्वाद देकर उनको हो गए अन्तर्ध्यान
धन्य धन्य हो...........
यशोदा से विवाह रचाकर, गृहस्थी को अपनाया
आज्ञा पाकर पिता श्री की, राजपाट को पाया
यश फैलाया चहुँ दिशाओं में, नाम खूब कमाया
बन गए सबके राज दुलारे, करके अच्छे काम
धन्य धन्य हो...........
जन मानस की पीड़ा देखी, जाना जीवन सार
ऊब गया मन राजपाट से, संयम का अब करे विचार
आज्ञा पाकर नन्दिवर्धन की, छोड़ दिया परिवार
धन्य धन्य हो...........
बढ़ गए अब तो संयम पथ पर, धर्म मार्ग अपनाया
गाँव-गाँव और नगर नगर में, धर्म का पाठ पढ़ाया
कानों में कीले ठुक गए, क्रोध न बिलकुल आया
क्षमा कर दिया उस ग्वाले को, समता भाव दिखलाया
आठों कर्म खपाकर बन गए तीर्थंकर भगवान
धन्य धन्य हो...........
विषधर ने भी गुस्से से जब, प्रभुवर जी को डराया
सुनकर उनके मधुर वचनों को, आत्मज्ञान ऐसा पाया
पश्चात्ताप की अग्नि में जलकर, पाया जाति ज्ञान
वन्दन करके प्रभु चरणों में, पहुँचे पावन धाम
धन्य धन्य हो.............
कृपा करी चन्दना पर ऐसी, बन गई वह भगवान
अर्जुन ने जब सुनी देशना, हो गया उसका भी उद्धार
मानव जन्म मिला है हमको, मत करो उसको यूँ बेकार
करणी कर लें हम भी ऐसी, पाकर इनका ज्ञान
धन्य धन्य हो...........
प्रभुवरजी मधुर वचनों से, कृपा ऐसी बरसाते
सुनकर श्रोता मधुर वचनों को, मन्त्रमुग्ध हो जाते
सूत्र समझाते सार युक्त, देते आगम ज्ञान
धन्य धन्य हो प्रभुवर मेरे, महावीर भगवान

-77/235, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर

ISSN 2249-2011

पुण्य-स्मरण

साहित्य के सूर्य आचार्यश्री हस्ती

श्री शुभम बोहरा

आकाश में उदित होता सूर्य किसी परिचय का मोहताज नहीं होता। उसका प्रकाश, उसकी उपस्थिति स्वयं अपना परिचय देती है। जब सूर्य का प्रकाश क्षितिज पर फैलता है, जब पहली पौ फटती है, तब पृथ्वी पर जीवन बोल उठता है। पेड़, पौधे, पशु-पक्षी प्रफुल्लित हो उठते हैं। पशु-पक्षियों के नाद की ध्वनि सम्पूर्ण आकाश मण्डल को गूँजा देती है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये सभी प्राणी सूर्य के उपकारों को याद करते हुए उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर रहे हों। बिना किसी भेद-भाव के सूर्य से ऊर्जा, शक्ति, ऊष्मा आदि प्राप्त होती है। उसकी उदारता का यह गुण ही स्वयं उसकी श्रेष्ठता का परिचायक है, उसी प्रकार आचार्य पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. साहित्य के वे सूर्य हैं, जिन्होंने जन-जन के मन रूपी क्षितिज पर जैन धर्म के मौलिक इतिहास के द्वारा सत्य का प्रकाश किया है। उन्होंने इतिहास के अनसुलझे पहलुओं को सुलझाया है। यह कोई साधारण कार्य नहीं था, यह कार्य सरसों और राई के दानों से संयुक्त ढेर में से अलग-अलग करने से भी अधिक कठिन था। असाधारण कार्य को असाधारण व्यक्तित्व वाला महापुरुष ही पूर्ण कर सकता है, जो आत्म-कल्याण के साथ-साथ जनकल्याण की भावना से ओतप्रोत हो। आचार्यश्री ने जैनधर्म का मौलिक इतिहास के कार्य को अपने जीवन का प्रमुख कार्य बना लिया था। अपने इस साहित्य के महायज्ञ को पूर्ण करने के लिए वे न भूख देखते, न प्यास। इतिहास के कार्य के दौरान उदक एवं गोचरी वापरने के लिए सन्त-मण्डली कई बार जब उन्हें निवेदन करती थी, तो वे कई बार पानी में रोटी मिलाकर वापर लेते थे। वे त्यागमूर्ति, अपने श्रेष्ठ संकल्प की पूर्ति हेतु निरन्तर अपने कार्य में लगे रहते थे। आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. उत्कृष्ट कोटि के साहित्यकार थे। आचार्यश्री ने संयम-साधना के साथ-साथ साहित्य-निर्माण और काव्य-सृजन के क्षेत्र को अत्यन्त समृद्धशाली बनाया। आपकी साहित्य-साधना अद्भुत थी, इसके चार प्रमुख क्षेत्र हैं-1. आगमिक व्याख्या साहित्य, 2. जैनधर्म सम्बन्धित इतिहास, 3. प्रवचन साहित्य और 4. काव्य साहित्य।

आचार्यश्री समाज में स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकसित करना चाहते थे। इसी कारण उन्होंने आगमों के बहुपक्षीय आयामों की सुन्दर विवेचना प्रस्तुत की। आचार्यश्री ने क्लिष्ट विषय को भी सरल, सुगम विधि से प्रस्तुत किया, ताकि समाज में धार्मिक जागृति बढ़े और लोग धार्मिक विषयों को आसानी से समझ सकें।

आचार्यश्री ने दो अंगसूत्रों एवं तीन मूलसूत्रों तथा एक छेदसूत्र पर कार्य किया। आचार्यश्री ने महत्त्वपूर्ण आगमों की टीकाएँ, अनुवाद तथा विवेचन आदि प्रस्तुत कर आगमिक रहस्यों को सर्वसाधारण के लिए सुलभ कराया।

आचार्यश्री का जैन समाज पर बहुत बड़ा उपकार है। एक कण्ठ से उनके सम्पूर्ण गुणों का कीर्तन करना सम्भव नहीं है। इसलिए हम उनके उपकारों और गुणों को स्मरण करते हुए संकल्प करें कि हम इस वर्ष जैनधर्म का मौलिक इतिहास के चार भागों को स्वयं पढ़ेंगे तथा दूसरों को पढ़ने के लिए प्रेरित भी करेंगे। जैनधर्म का मौलिक इतिहास साहित्य क्षेत्र की वह कृति है, जो आज समाज के प्रत्येक घर में पढ़ी जानी आवश्यक है। जिससे हमें हमारे गौरवमय इतिहास एवं धर्म की महत्ता का ज्ञान हो सकेगा। यह कृति हमें वास्तविकता के धरातल पर उतारकर हमारे पूर्वजों एवं महापुरुषों के त्याग, बलिदान एवं समर्पण की जीवनगाथा बताकर धर्म की रक्षा हेतु प्रेरित करती है।

-नयनतारा गेस्ट हाउस, मोहादी रोड़, जलगाँव

ISSN 2249-2011

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

श्री गौतमचन्द जैन

चीकागो प्रश्नोत्तर एवं श्री जैनधर्म विषयक प्रश्नोत्तर-ग्रन्थकार-आचार्य श्रीमद् विजयानन्द सूरीश्वरजी महाराज (प्रसिद्ध नाम पूज्य आत्मारामजी महाराज)। सम्पादक-डॉ. जितेन्द्र बी. शाह, **प्रकाशक**-भोगीलाल लहेरचन्द इन्स्टिट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, विजय वल्लभ स्मारक जैन मन्दिर कॉम्पलेक्स, जी.टी. करनाल रोड़, पो.ओ. अलीपुर, दिल्ली-110036, फोन 011-27202065, **पृष्ठ**-197

ईस्वी सन् 1883 में अमेरिका के चिकागो (शिकागो) शहर में प्रथम विश्वधर्म परिषद् आयोजित हुई थी। उसमें पूज्य श्री आत्मारामजी म.सा. के प्रतिनिधि के रूप में श्री वीरचन्द राघवजी गाँधी गये थे। तब शिकागो प्रश्नोत्तर पुस्तक श्री आत्मारामजी ने लिखकर श्री वीरचन्द राघवजी गाँधी को दी थी, जिसके आधार पर उन्होंने विश्व धर्म परिषद् में व्याख्यान दिया था। पुनः प्रकाशित इस पुस्तक में जैनधर्म और ईश्वर, कर्म एवं उनके भेद-प्रभेद, साधु एवं गृहस्थ धर्म और जीवन के नैतिक आधार आदि विषयों का उल्लेख किया गया है। इसके साथ ही प्रस्तुत पुस्तक में प्रश्नोत्तर के माध्यम से जैनधर्म के तत्त्वों का सरल भाषा में वर्णन किया गया है। इसमें तीर्थंकर, संघ, साधु, श्रावक, जातिवाद, आगम, राजधर्म, जैनधर्म एवं बौद्धधर्म की तुलना, जगत का अनादित्व, सच्चा धार्मिक वात्सल्य आदि विषयों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है।

पुस्तक के प्रारम्भ में श्री विजयानन्द सूरीश्वरजी म.सा. का संक्षिप्त जीवन-चरित्र एवं उनके द्वारा रचित साहित्य का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

उपोद्घात के पश्चात् पुस्तक के प्रथम भाग में चीकागो प्रश्नोत्तरों का विस्तृत उल्लेख किया गया है। तत्पश्चात् ग्रन्थ के द्वितीय भाग में जैनधर्म विषयक 162 प्रश्नोत्तरों का वर्णन किया गया है। प्रश्नों के उत्तरों में आगमिक/शास्त्रीय सन्दर्भ भी दिये गये हैं। पुस्तक के अन्त में ग्रन्थ प्रशस्ति और पाँच परिशिष्ट भी दिये गये हैं। पुस्तक के अध्ययन से जैनधर्म के सम्बन्ध में स्पष्ट, प्रामाणिक एवं महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती है।

अज्ञान तिमिर भास्कर-ग्रन्थकार आदि का विवरण उपर्युक्तानुसार, **पृष्ठ**-292

प्रस्तुत ग्रन्थ अपने नाम के अनुसार ही अज्ञान रूपी अन्धकार के लिए ज्ञान रूपी सूर्य के समान है। पूज्य श्री आत्मारामजी म.सा. ने इसमें स्व-मत एवं अन्य मतों का विशेष अध्ययन कर स्व-मत का मण्डन एवं अन्य मतों का तार्किक ढंग से खण्डन किया है। उनका स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक पर भी आधिकारिक ज्ञान था। अतः उन्होंने जैनधर्म की प्राचीनता सिद्ध करते हुए वैदिक कर्मकाण्डों, यज्ञ-हिंसा आदि का विरोध प्रकट किया और वैदिक शब्दों का वास्तविक अर्थ लोगों को बतलाया। इस ग्रन्थ के दो भाग हैं-प्रथम भाग में ईश्वर कर्तृत्ववाद का खण्डन और द्वितीय भाग में साधु एवं श्रावक धर्म की योग्यता, श्रावक के 21 गुणों का वर्णन और तीन प्रकार की आत्मा बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा के स्वरूप का सविस्तार वर्णन किया है। प्रस्तुत ग्रन्थ पूज्य आत्मारामजी म.सा. ने विक्रम सम्वत् 1939 में अम्बाला में लिखना प्रारम्भ किया था और विक्रम सम्वत् 1942 में खम्भात (गुजरात) में पूर्ण किया।

पुस्तक के प्रारम्भ में आस्तिक-नास्तिक, वेदों के मत, हिंसा आदि का खण्डन, वेदों की उत्पत्ति, मांसाहार, शांकरभाष्य, वल्लभाचार्य, पशुहोम, ब्राह्मण, वेदविद्या आदि अनेक विषयों का एवं तत्कालीन प्राचीन मान्यताओं का वर्णन प्रस्तुत किया गया है। ग्रन्थ के प्रथम खण्ड में यज्ञ, वेद, वेदोत्पत्ति, श्रुतियों के अर्थ, कात्यायन कल्पसूत्र, गृहस्थधर्म आदि

अनेक तत्कालीन मतों एवं मान्यताओं का विस्तृत वर्णन है। ग्रन्थ के द्वितीय-खण्ड में जैनों का पूर्व इतिहास, जैन ग्रन्थों का इतिहास, मूर्तिपूजा का मण्डन, ढुंढक मत की उत्पत्ति, चतुर्विध धर्म का स्वरूप, साधु का स्वरूप, आचार्य के 36 गुण और आत्मा के तीन प्रकार का विस्तृत वर्णन किया गया है। अन्त में गुरुप्रशस्ति के साथ 6 परिशिष्ट दिये गये हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के अध्ययन से वैदिक मान्यताओं एवं जैनधर्म की महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

निस्पृह साधक-गणाधिपति श्री शान्तिमुनि विशेषांक-पथ के आलोक-आचार्य श्री विजयराजजी म.सा.। पथ-प्रदर्शक-उपाध्याय श्री जितेशमुनिजी म.सा.। प्रबन्ध सम्पादक एवं संयोजक-कमल कुमार खाबिया, सम्पादक-मधु मट्टा, **प्रकाशक**-श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी शान्त-क्रान्ति श्रावक संघ, उदयपुर (रजि.), **प्रकाशन** -सितम्बर, 2022, **पृष्ठ**-656

प्रस्तुत विशेषांक में नि:स्पृह साधक श्रमणश्रेष्ठ, महास्थविर, गणाधिपति परम पूज्य श्री शान्तिमुनिजी म.सा. के जीवन-चरित का एवं उनके कृतित्व तथा लोकोपकारी कार्यों का विवरण अनेक सन्त-सतियों और श्रावक-श्राविकाओं के द्वारा अपनी-अपनी दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। श्री शान्तिमुनिजी ने आचार्यप्रवर श्री नानालालजी म.सा. से दीक्षा ग्रहण की थी। बाद में आपने 22 मई, 1997 को मन्दसौर में शान्त-क्रान्ति संघ का गठन किया। आपको दिनांक 19 फरवरी, 2022 को ब्यावर में गणाधिपति का विरुद प्रदान किया गया।

प्रस्तुत विशेषांक के प्रारम्भ में आचार्य श्री विजयराजजी म.सा. ने उन्हें प्रभावक सन्त के रूप में प्रतिपादित किया है। उपाध्याय श्री जितेशमुनिजी ने उन्हें भारत की भव्यात्मा के रूप में वर्णित किया है। श्रद्धा अभिषिक्त वन्दन शीर्षक लेख में श्री शान्तिमुनिजी का परिचय दिया गया है। प्रवचन सुरभि भाग में गणाधिपतिजी के साहित्य में से प्रमुख प्रवचनों को संकलित कर प्रस्तुत किया गया है।

विशेषांक को दो भागों में विभक्त किया गया है- भावाञ्जलि और शब्दाञ्जलि। प्रथम भाग 'भावाञ्जलि' में लेखाञ्जलि उप विभाग में अनेक गणमान्य आचार्य एवं सन्त-सतियों के लेख-संस्मरण प्रस्तुत किये गये हैं, जो गणाधिपति श्री शान्तिमुनिजी के जीवन-चरित से सम्बन्धित हैं। द्वितीय उप विभाग श्रद्धासुमन सन्देश में प्रतिष्ठित जनप्रतिनिधियों के सन्देश प्रस्तुत किये गये हैं। तृतीय उप विभाग काव्याञ्जलि में सन्त-सतियों के द्वारा श्री शान्तिमुनिजी की प्रशंसा में स्तवन, भजन और कविताएँ प्रस्तुत की हैं। द्वितीय भाग 'शब्दाञ्जलि' के प्रथम उप विभाग लेखाञ्जलि में विभिन्न श्रावक-श्राविकाओं के गणाधिपति श्री शान्तिमुनिजी के जीवन से सम्बन्धित प्रसङ्ग, घटनाएँ, संस्मरण और अपनी भावाभिव्यक्तियाँ प्रस्तुत कर उनके जीवन की विशेषताओं को रेखांकित किया है। द्वितीय उप विभाग काव्याञ्जलि में कविताओं के माध्यम से श्रद्धाशील श्रावक-श्राविकाओं ने अपने हृदय के उद्गारों को प्रकट किया है। बाल-बगीचा नामक तृतीय उप विभाग में बालक-बालिकाओं के संस्मरण प्रस्तुत किये गये हैं। अंग्रेजी सम्भाग नामक विभाग में कतिपय लेख अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत हुए हैं। अन्त में कुछ प्रमुख भजन, गुरु शान्ति चालीसा और गुरुवन्दना आदि प्रस्तुत किये गये हैं। श्री शान्तिमुनिजी द्वारा लिखित, रचित और सम्पादित साहित्य की सूची भी दी गई है।

वास्तव में प्रस्तुत विशेषांक के अध्ययन से नि:स्पृह साधक गणाधिपति श्री शान्तिमुनिजी म.सा. के जीवन से सम्बन्धित विभिन्न जानकारी एवं सत्प्रेरणाएँ प्राप्त होती हैं।

-पूर्व संयुक्त खाद्य आयुक्त, 70, 'जयणा', विश्वकर्मा नगर-द्वितीय, महारानी फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

10 अप्रेल 2023
जिनवाणी 73
ISSN 2249-2011

समाचार विविधा

जोधपुर में पूज्य आचार्य भगवन्त, भावी आचार्यप्रवर की सन्निधि में तपाराधना एवं अपूर्व धर्मोल्लास

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, प्रवचन प्रभाकर, आगमज्ञ, जिनशासन गौरव, **आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा में एवं **व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा.** आदि ठाणा पावटा सिद्धान्त शाला जोधपुर में सुखे-समाधौ विराजित हैं।

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि चारित्रात्माओं के पावटा विराजने से, निरन्तर सन्त-सतीवृन्द एवं चहुँओर से श्रावक-श्राविकाओं, श्रीसंघों के आवागमन से धर्मध्यान, तप-त्याग, साधना-आराधना का ठाट लगा हुआ है।

गुणानुवाद-28 फरवरी, 2023 को जयपुर में पूज्य आचार्य भगवन्त की आज्ञानुवर्तिनी एवं साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. के नेश्रायवर्तिनी महासती श्री प्रियदर्शनाजी म.सा. के देवलोकगमन एवं महाप्रयाण यात्रा सम्पन्न होने के अनन्तर 2 मार्च, 2023 को पावटा-स्थानक जोधपुर प्रवचन सभा में दिवंगत महासतीजी के गुणानुवाद किये गये। **भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** ने फरमाया कि वे रत्नसंघीय सन्त श्री दयामुनिजी म.सा. की सांसारिक सुपुत्री थी। बाल्यावस्था में ही उनमें वैराग्य के भाव जाग्रत हो गए थे अर्थात् जन्मघुट्टी से ही गुरुभक्ति के संस्कार मिले। जितना उनका शरीर हल्का था, उतना ही उनमें संयम के प्रति उत्साह भारी था। **श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.** ने फरमाया कि उन्होंने दीक्षा कब ली यह ही याद नहीं रखा, बल्कि दीक्षा क्यों ली यह भी याद रखा। वर्तमान समय में वृद्ध व्यक्तियों को संयम लेना एवं देना कठिन है, लेकिन संयम की भावना के पोषक गुरुदेव पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं गुरुणी साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. ने उनके तप, त्याग, पुरुषार्थ एवं दृढ़-संयम-भावना का पोषण करते हुए दीक्षा दी। उनके वैराग्य भावों एवं पुरुषार्थ से परिचित **महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.** ने फरमाया कि महासती श्री प्रियदर्शनाजी की भावना रही कि गुरु-गुरुणीजी ने मेरे ऊपर विश्वास किया है और मुझे गुरु-गुरुणी का विश्वास कभी-भी खण्डित नहीं होने देना है। **महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा.** आदि चारित्रात्मों ने भी उनके संयम-जीवन पर अपने हृदयोद्गार व्यक्त किये।

संघ संरक्षक सुश्रावक **श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना** ने अपने वक्तव्य में कहा कि-''जो आत्मदर्शन कर लेते हैं वे प्रियदर्शन होते हैं।'' सुश्रावक श्री कानराजजी मुणोत, श्री कमलेशजी मेहता (वीरपुत्र), सुश्रावक श्री सुनीलजी चौपड़ा, युवक परिषद् शाखा जोधपुर के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा आदि ने अपने वक्तव्य में उनके जीवन से जुड़े पहलुओं का उल्लेख किया।

फाल्गुनी चौमासी-फाल्गुनी चौमासी के पावन प्रसङ्ग पर शेखेकाल में भी आचार्य भगवन्त की चरण सन्निधि में महासती श्री शशिकलाजी म.सा. के मासक्षपण तपस्या चल रही थी एवं तप-अनुमोदनार्थ वीर परिवारजन भी आये हुए थे। पावटा विराजित महासतीवर्याओं-महासती श्री कान्ताजी म.सा., महासती श्री सुव्रतप्रभाजी म.सा. एवं ज्ञानार्थी बहिनें-सुश्री दिव्याजी सिंघवी, सुश्री नेहाजी पल्लीवाल ने तेले-तेले की एवं

वीरभ्राता श्री दिलीपजी सिंघवी ने अठाई की तपाराधना के अर्घ्य अर्पित किये। 31 उपवास की मासक्षपण तपस्या एवं पारणा सुखे-समाधौ सम्पन्न होने के पश्चात् महासती श्री शशिकलाजी का स्वास्थ्य समाधिमय है।

होली चौमासी पर अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने तेले, बेले, उपवास, एकाशन, आयम्बिल, दया, संवर, पौषध, सामायिक-स्वाध्याय, चौमासी प्रतिक्रमण कर चौमासी पर्वाराधना का धर्मलाभ गुरुचरण सन्निधि एवं महासती मण्डल की सेवा में पावटा में लिया।

होली चौमासी पर अनेक श्रीसंघों का चातुर्मास की विनति एवं स्वीकृति भावना से आवागमन हुआ। आगत सभी श्रद्धालुओं, श्रीसंघों ने दर्शन, वन्दन, मांगलिक श्रवण, धर्माराधना, जिनवाणी आदि का धर्मलाभ लिया एवं अपनी-अपनी भावना/विनति आचार्य भगवन्त के श्री चरणों में प्रस्तुत की। जिस पर पूज्य आचार्य भगवन्त के निर्देशानुसार भावी आचार्यश्री ने यथासमय चातुर्मास स्वीकृत किये जाने के भाव फरमाये।

85वाँ जन्मदिवस-चैत्र कृष्णा अष्टमी को भगवान आदिनाथ का जन्मकल्याणक एवं परमाराध्य आचार्य भगवन्त के 85वें जन्मदिवस के पावन प्रसङ्ग पर आगत एवं स्थानीय श्रद्धालुओं ने विविध तपाराधनाओं के साथ संवर, दया, पौषध आदि विविध धर्मचर्याओं के अर्घ्य अर्पित किये। प्रवचन सभा में **भावी आचार्यश्री** ने फरमाया कि हमारे आराध्य देव ने 84 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं, उनके 84 के भवभ्रमण सीमित हो जाये, तो कोई आश्चर्य नहीं है। जो 60 वर्ष से लगातार साधना-आराधना कर रहे हैं और साधना करा भी रहे हैं उनका भवभ्रमण सीमित हो जाये तो भला क्या आश्चर्य होगा। **श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.** ने फरमाया कि हमें गुरुभक्ति सिर्फ वचनों से ही नहीं, आचरण और व्यवहार से करनी है। गुरुदेव ने अपने गुरु पर अपनी सुरक्षा और सफलता सर्वतोभावेन सौंप दी है। गुरुदेव के जीवन में सात्त्विकता, व्यवहार में आगम निष्ठा और आत्मा में आध्यात्मिकता रोम-रोम में रमी हुई है। **श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.** ने फरमाया कि गुरुदेव जादूगर के समान हैं। जिन्हें देखने के साथ कामवासनाएँ दूर हो जाती हैं। वे वाणी के जादूगर हैं। **श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा.** ने भजन के माध्यम से फरमाया कि 'तेरे बिना गुरुवर हमारा नहीं कोई रे......।' भजन पंक्ति बोलकर कहा-आचार्य भगवन्त भगवान ही नहीं, श्रेष्ठ भक्त भी हैं। अरिहन्तभक्ति, सिद्धों की भक्ति, जिनशासन की भक्ति, गुरुभक्ति, आगमभक्ति आपमें सब कुछ सर्वोच्च है। **महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.** ने फरमाया कि आठ सम्पदा, 36 गुणों का जिनमें पूर्ण समावेश है, ऐसे आचार्य भगवन्त, हमारे आराध्यदेव को दशवैकालिकसूत्र के माध्यम से जानें तो चार समाधि में गुरुदेव के दर्शन होते हैं। उत्तराध्ययनसूत्र को देखें तो सम्यक्त्व पराक्रम के समस्त बोल गुरुदेव के जीवन में पूर्णतया घटित होते हैं। **महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा.** ने फरमाया कि हमारे आराध्य संघनायक में कैसी भक्ति रही हुई है, इससे मुझ को प्रेरणा मिलती है। गुरुदेव के चार गुणों से मुझे विशेष प्रेरणा मिलती है-(1) गुरुदेव व्यक्ति को नहीं, व्यक्ति की अपेक्षा संघ को अधिक महत्त्व देते हैं। (2) गुरुदेव स्वयं को नहीं, स्वयं की अपेक्षा अपने गुरु को विशेष महत्त्व देते हैं (अनेकान्तवाद की अपेक्षा से)। (3) गुरुदेव इच्छा को नहीं, इच्छा की अपेक्षा प्रभु आज्ञा को विशेष महत्त्व देते हैं। (4) गुरुदेव प्रायश्चित्त को नहीं, प्रायश्चित्त की अपेक्षा सामने वालों की आत्म-जागृति को विशेष महत्त्व देते हैं।

प्रत्येक रविवार को सामूहिक सामायिक होती है, जिसमें भरपूर उपस्थिति रहती है। नियमित प्रवचन चल रहा है, जिसमें अच्छी उपस्थिति रहती है। भगवतीसूत्र वाचनी दोपहर में 2 से 3 बजे तक परम श्रद्धेय भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. फरमाते हैं।

पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सांसारिक वीर परिवारजन दिल्ली से सांसारिक अनुजवधू सुश्राविका श्रीमती कमलाबाईजी गाँधी एवं पीपाड़ से वीर बहिन सुश्राविका श्रीमती चन्दाबाईजी (जो दिवंगत श्रद्धेय

श्री मोतीमुनिजी म.सा. की सांसारिक धर्मपत्नी हैं। दोनों) को लेकर दिल्ली-पीपाड़ से गुरुचरणों में उपस्थित हुए तथा जीवन के अन्तिम दिवसों में क्या साधना करें, ऐसी प्रेरणा करने की प्रार्थना की। गुरुदेव ने सतत नमस्कार मन्त्र एवं लोगस्स का ध्यान, अठारह पापों के प्रत्याख्यान एवं सागारी संथारा की प्रेरणा की। सागारी संथारापूर्वक 21 मार्च को श्रीमती कमलाबाईजी गाँधी का देवलोकगमन हो गया तथा पुनश्च पूरा वीर परिवार 26 मार्च को गुरुचरणों में मांगलिक श्रवण हेतु उपस्थित हुआ।

महासती श्री अदितिप्रभाजी म.सा. की सांसारिक दादीजी श्राविकारत्न श्रीमती रतनीदेवीजी जैन के देवलोकगमन के पश्चात् अलीगढ़-रामपुरा से सभी वीर-परिवारजन गुरुचरणों में मांगलिक श्रवण हेतु उपस्थित हुए। अनेक वीर परिवारजन का आवागमन भी निरन्तर बना हुआ है। दया, आयम्बिल प्रतिदिन की शृङ्खला सतत गतिशील है एवं अन्यान्य विविध तपाराधनाएँ भी गतिशील हैं। पहली पुलिया हाउसिंग बोर्ड निवासी श्रीमती उच्छबबाईजी ने 190 की तपस्या के प्रत्याख्यान गुरुभगवन्त के मुखारविन्द से ग्रहण किये।

27 मार्च को आचार्य भगवन्त के निर्देशानुसार प्रवचन सभा में भावी आचार्यश्री ने अग्रांकित चातुर्मासों की स्वीकृति फरमायी है। जोधपुर श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् एवं श्री मनमोहनजी कर्णावट, श्री धनपतजी सेठिया, श्री प्रकाशजी टाटिया-राष्ट्रीय पदाधिकारीगण, शासन सेवा समिति के श्री गौतमजी हुण्डीवाल, श्री गौतमजी सुराणा आदि की सतत सेवाएँ गुरुचरणों में प्राप्त हो रही हैं। सन्त-सतीवृन्द की सेवा समिति, आगन्तुक श्रद्धालुओं की सेवा सम्भाल, आवास-निवास, भोजन-व्यवस्था सुव्यवस्थित गतिशील है। विहार-सेवा में श्री पारसजी गिड़िया आदि की सेवाएँ सराहनीय हैं। प्रवचनांश संकलन में श्री सुमतिचन्दजी मेहता, पीपाड़ की सेवाएँ सराहनीय हैं। *-गिर्राज जैन*

रत्नसंघीय चातुर्मासों की घोषणा

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने 27 मार्च, 2023 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में विक्रम सम्वत् 2080 सन् 2003 हेतु साधु-मर्यादा के समस्त आगारों के साथ वर्तमान की देश-प्रदेश की परिस्थिति के कारण कोई परिवर्तना करना पड़े, उस आगार के साथ कतिपय चातुर्मास स्वीकृत किए हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है-

1. जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा — जोधपुर (क्षेत्र का निर्णय बाद में, स्वास्थ्य सम्बन्धी आगार के साथ)
2. मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा — बिजयनगर-अजमेर (राजस्थान)
3. सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा — खेरली-अलवर (राजस्थान)
4. तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा — शिरपुर (महाराष्ट्र)
5. श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा — नागौर (राजस्थान)
6. साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा — प्रतापनगर-जयपुर (राजस्थान) सुखेसमाधे
7. विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. आदि ठाणा — अजमेर (राजस्थान) सकारण
8. व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकँवरजी म.सा. आदि ठाणा — जामोला-अजमेर (राजस्थान)

9. विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा — जंगमपुरा-इन्दौर (मध्यप्रदेश)
10. व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा — जोधपुर (राजस्थान) स्थान की घोषणा बाद में
11. व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा — काचीगुड़ा-हैदराबाद (तेलंगाना)
12. व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा — जोधपुर (राजस्थान) स्थान की घोषणा बाद में
13. व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा — शिरपुर (महाराष्ट्र)
14. व्याख्यात्री महासती श्री नि:शल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा — भद्रावती (कर्नाटक)
15. व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा — थाँवला-अजमेर (राजस्थान)
16. व्याख्यात्री महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा — रामपुरा-कोटा (राजस्थान)
17. व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा — रालेगाँव-यवतमाल (महाराष्ट्र)
18. व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा — पाली (राजस्थान)
19. व्याख्यात्री महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा — बजरिया-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
   नगरपालिका क्षेत्र खुला रखकर रत्न हितैषी श्रावक संघ शाखा बजरिया को स्वीकृत
20. व्याख्यात्री महासती श्री सरोजश्रीजी म.सा. आदि ठाणा — प्रतापगढ़ (राजस्थान)
21. व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा (30 मार्च को घोषित) — पुराना किशनगढ़-अजमेर

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 85वाँ जन्मदिवस तप-त्यागपूर्वक सम्पन्न

बालोतरा-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुर व्याख्यानी **श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3** का आगोलाई प्रवास अत्यन्त प्रेरणादायी रहा। समीपवर्ती बालेसर, बालोतरा, सोइंतरा इत्यादि क्षेत्रों से श्रावक निरन्तर अपने-अपने क्षेत्रों को फरसने की विनति लेकर उपस्थित हो रहे थे। बालेसर वालों के विशेष आग्रह से सन्तत्रय विहार कर बालेसर पधारे और फाल्गुनी चातुर्मासी का लाभ भी बालेसर वासियों को प्राप्त हुआ। वाचनी, प्रतिक्रमण और विशेष तौर पर प्रवचनों में स्थानीय श्रद्धालुओं ने अत्यन्त रुचि और उत्साह से भाग लिया। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने अपने चातुर्मासिक प्रवचन में फरमाया कि संवत्सरी के पश्चात् जिनशासन में यह दूसरा बड़ा पर्व है। हमारा यह पर्व आमोद-प्रमोद का परिचायक नहीं, भौतिक जगत से जुड़ा हुआ नहीं है। हमारा यह पर्व सिर्फ आत्म रक्षा की साधना को पुष्ट करने वाला है। विशेषकर इन पर्व के दिनों में दोषों की आलोचना कर आत्मशुद्धि का लक्ष्य हर साधक का होना चाहिए, यही पर्व की मौलिक प्रेरणा है,क्योंकि छोटा सा दोष भी शुद्धि के अभाव में आत्मा के लिए घातक बन जाता है। कहा जाता है कि एक बूँद कभी बाढ़ नहीं बनती, लेकिन एक चिंगारी दावानल बन जाती है। इसी प्रकार एक गुण जीवन के लिए कल्याणकारी साबित हो या न हो, मगर एक दोष आत्मा के लिए घातक बन जाता है। फाल्गुनी चौमासी के बाद सन्त वहाँ से विहार करके मध्यवर्ती सोइंतरा इत्यादि गाँवों को फरसते हुए 13 मार्च को बालोतरा पधारे। सन्तों के आगमन की सूचना से बालोतरा का हर धर्मबन्धु प्रफुल्लित था। यही कारण था कि अगले दिन से ही प्रवचन में श्रद्धालु उमड़ पड़े। **श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.** ने भी वर्तमान समसामयिक विषयों पर अपने प्रखर वचनों से आजकल समाज में बढ़ने वाली विकृतियों पर सभी का ध्यान आकर्षित किया। विशेषकर शादी, पार्टी इत्यादि सामाजिक आयोजनों में पैसों की बर्बादी और बढ़ते हुए आरम्भ पर महाराज श्री ने कहा कि आज हमारा स्वधर्मी भाई परिस्थितिवश गरीबी में जीने के लिए मजबूर है और दूसरी तरफ

शादी आदि आयोजनों में लाखों के फूल, पटाखे, सजावट इत्यादि फिजूल खर्च करते जा रहे हैं। खेद का विषय है कि ऐसे समय में हमें अपना स्वधर्मी भाई याद नहीं आता। पहले समाज बन्धु समाज-हित और स्वधर्मी वात्सल्य में उदारता का परिचय देते थे, मगर आज इस आडंबर और बाह्य प्रदर्शन के नाम पर हम आने वाली पीढ़ी को क्या विरासत देकर जाना चाहते हैं? जहाँ तक संस्कारों का प्रश्न है हमारी आज की जवान पीढ़ी शादियों के आयोजन में जिस फूहड़ता के साथ नाच गाने करती है, प्री वेडिंग शूट से अपने आपको रईस और प्रतिष्ठित मानती है, क्या यही ऊँचाई का मापदण्ड है? महाराज श्री ने इन सारी विकृतियों पर लोगों को झकझोरते हुए आह्वान किया कि कायदे में रहोगे तो फायदे में रहोगे। आज यदि संस्कारों की परम्परा कायम रहेगी तो आने वाली पीढ़ी कुछ हद तक इन सब से बच पाएगी, वरना बिगाड़ के लिए तो कुछ प्रयास करने की जरूरत ही नहीं होती। उसके लिए तो एक मोबाइल ही पर्याप्त है। इस सुधार के लिए आज सामूहिक रूप से एकजुट होकर इन सब विकृतियों का विरोध करना जरूरी है। मुनिश्री के प्रवचन से पूर्व **श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा.** ने जीवन जीने की कला और जैनसिद्धान्तों का परिचय इत्यादि विषयों पर अपने प्रवचन दिए। उन्होंने अज्ञान को सबसे बड़ा घातक कारण बताया। वाचना इत्यादि का महत्त्व भी सुन्दर विश्लेषण के साथ फरमाया।

15 मार्च को परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 85वाँ जन्मदिवस तप, त्याग एवं सामायिक साधना के साथ मनाया गया। प्रवचन सभा में मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आज भगवान ऋषभदेव का जन्म-कल्याणक का मंगल प्रसंग है, तीर्थंकर भगवान अपने जीवन में आत्म कल्याण के लिए प्राणिमात्र को सन्देश देते हैं और सतत करुणा के साथ मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करते हैं। आज ही के दिन रत्नसंघ के यशस्वी आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का भी जन्म दिवस है। आचार्यश्री के जीवन की महत्ता को दर्शाते हुए कहा कि आचार्य भगवन्त में 8 गुण सम्पदा प्रत्यक्ष देखने को मिलती है। आपके जीवन में गुरुदेव आचार्यश्री हस्ती की प्रेरणा से साक्षात् सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र की निर्मल साधना नज़र आ रही है। आचार्य भगवन्त जिनशासन में अपूर्व प्रभावना करते हुए अपने ओजस्वी प्रवचन एवं निर्मल संयम-साधना के साथ पूरे धर्म संघ को सतत प्रेरणा प्रदान करते आ रहे हैं। अपनी साधना में एवं चारित्र पालन में श्रेष्ठ जीवन जी रहे हैं। उनका जीवन हमारे लिए मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए हमें वीतराग प्रभु के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए सतत प्रेरणा प्रदान कर रहा है।

श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. ने आचार्यश्री के जीवन प्रसंगों का उल्लेख करते हुए कहा कि पीपाड़ धन्य धरा है जहाँ पर आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. एवं आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. जैसे जिनशासन के गौरवशाली आचार्यों का जन्म हुआ। आचार्यश्री के जीवन से सामायिक-स्वाध्याय, व्यसनमुक्ति एवं सामाजिक परिवेश में भी हित चेतना के लिए सतत प्रेरणा प्राप्त हो जाती है। प्रवचन सभा में श्री गुरु हस्ती कल्याण संस्थान के मन्त्री श्री ओमप्रकाशजी बाँठिया ने देव-गुरु-धर्म की महत्ता का वर्णन करते हुए आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के निर्मल साधना मय चारित्रिक जीवन को दर्शाते हुए कहा कि आचार्यश्री ने बालोतरा चातुर्मास में युवावर्ग को विशेष रूप से व्यसनमुक्ति, सामाजिक नियमों में भी सादगी के लिए अपूर्व प्रेरणा प्रदान की। आपके मंगल सान्निध्य में बालोतरा में जैन भागवती दीक्षाएँ भी सम्पन्न हुईं। हम सभी आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 85वें जन्मदिवस पर उनके दीर्घायु होने की एवं मंगलमय सान्निध्य, प्रेरणा से आगे बढ़ने की भावना रखते हैं। संघमन्त्री नरेन्द्रजी भण्डारी ने बालोतरा श्री वर्धमान जैन स्थानकवासी संघ की ओर से आचार्यश्री के गुणगान किये। आशुकवि श्री कमलेशजी चौपड़ा ने भक्तियुक्त मर्म स्पर्शी गीतिका एवं श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती मनीषादेवीजी भंसाली ने भी प्रेरक गीतिका प्रस्तुत की। उपवास, बेला, एकाशन, दया व्रत की तपस्या की साधना के साथ ही अधिकांश भाइयों-बहनों ने सामूहिक रूप से 5-5 सामायिक की साधना एवं मध्याह्न में श्री अविनाशमुनिजी म.सा. के मंगल सान्निध्य में प्रेरणा पाथेय प्राप्त किया, श्रावक-श्राविकाओं ने प्रतिक्रमण में भी बड़ी संख्या में भाग लिया।

इसी कड़ी में सकल जैन समाज की भावना के अनुसार वहाँ के उद्योग जगत के तत्त्वावधान में लघु उद्योग मण्डल के अध्यक्ष श्री जसवंतजी गोगड़ ने तेरापन्थी, मूर्तिपूजक और स्थानकवासी तीनों संघो के युवाओं का आह्वान करके रविवार 26 मार्च को दिन में 2:00 से 3:30 तक कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में 'Know yourself and acknowledge your own values : Do you know, what you don't know' विषय पर वक्तव्य हुए। बालोतरा के इतिहास में पहली बार सभी संघों का सम्मिलित ऐसा वृहद आयोजन हुआ। प्रवचन सभा में ऐतिहासिक उपस्थिति थी। प्रवचन हॉल, ऊपर बालकनी और उसके अन्दर के हॉल खचाखच पूरे भर गए। श्रद्धेय मुनिराज ने 'अपने गुणों का विकास करें-कल से बेहतर आज बनें' विषय के साथ-साथ वर्तमान सामाजिक विकृतियों पर सुधार की अपील करते हुए कहा कि लक्ष्य पर प्रतिबद्ध रहने से सफलता भले ही एक दिन में नहीं मिले, लेकिन एक दिन अवश्य मिलती है। प्रेरित होकर अनेक युवाओं ने पूलपार्टी, फूलों की सजावट, कोरियोग्राफर का निषेध, सड़कों पर नाचने आदि के त्याग का संकल्प लिया। वर्तमान में भी प्रवचन और वाचनी के द्वारा प्रेरणा की धारा अनवरत प्रवाहमान है। बालोतरावासी सन्तों से अधिकाधिक रुकने की विनति कर रहे हैं। *-धर्मेश चौपड़ा, ओमप्रकाश बांठिया, बालोतरा*

जलगाँव-आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा-4 का होली चातुर्मासार्थ जलगाँव आर. सी. बाफना जैन स्वाध्याय भवन में 2 मार्च को प्रवेश हुआ। 7 मार्च को लगभग 200 भाई-बहनों ने दयाव्रत की आराधना की। 15 मार्च को आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के 85वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में श्रावक-श्राविकाओं ने 13-14-15 मार्च को तीन दिवस तेले तप की साधना-आराधना की जो सानन्द सम्पन्न हुई। प्रवचन में महासतीजी ने आचार्य भगवन्त के जीवनदर्शन को रोचक तरीके से प्रस्तुत किया। उन्होंने आचार्य हस्ती के बाद रत्नसंघ के रथ को, संघ गौरव-गरिमा को आगे बढ़ाने के लिए आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने किस तरह संघ की बागडोर सम्भाली इस विषय पर भरी सभा को प्रभावी उद्बोधन के माध्यम से सम्बोधित किया तथा अन्य वक्ताओं ने भी शब्द सुमनों से गुण-गौरव किया। 2 से 16 मार्च तक प्रवचन में श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही, साथ ही शिरपुर, धुलिया, होलनांथा से श्रावकगण की उपस्थिति रही। 15 मार्च दोपहर 2 बजे आचार्यश्री हीरा के जीवन पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता ली गईं, जिसमें अच्छी उपस्थिति रही। 17 मार्च को महासतियाँजी का स्वाध्याय भवन से सागर भवन जलगाँव तक का विहार सम्पन्न हुआ।

चौथ का बरवाड़ा-आचार्यश्री रामलालजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती शासन दीपक श्री चिन्मयमुनिजी म. सा. आदि ठाणा-3 के पावन सान्निध्य में पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 85वाँ जन्मदिवस सामूहिक सामायिक, एकाशन, आयम्बिल, उपवास के साथ तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। सभी समाजजनों ने इसमें उत्साहपूर्वक बढ़-चढ़कर भाग लिया। संघमन्त्री श्री महेन्द्रजी जैन ने गुरु हीरा के प्रति अपने विचार व्यक्त किए।

- महेन्द्र जैन, मन्त्री

सवाईमाधोपुर-आदि तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान एवं आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 85वाँ जन्मदिवस इन्दिरा कॉलोनी, बजरिया स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में सामूहिक तीन सामायिक, एकाशन, आयम्बिल, नीवी, उपवास एवं तप त्यागपूर्वक मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री सुबाहु कुमारजी जैन सर्राफ, क्षेत्रीय प्रधान ने की। कार्यक्रम का शुभारम्भ वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री धर्मचन्दजी जैन, कुश्तला द्वारा मंगलाचरण, सामूहिक महामन्त्र नवकार जाप, गुरु हीरा-चालीसा पाठ एवं गुरु महिमा स्तवनों की प्रस्तुति के साथ हुआ। आचार्य पूज्य गुरुदेव को 36 मुक्तकों की सामूहिक प्रस्तुति के साथ छत्तीस बार गुरु वन्दना श्रावक-श्राविकाओं द्वारा अहोभाव पूर्वक की गई। प्रमुख वक्ता श्री धर्मचन्दजी जैन रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर ने-**गुरुवर हीरा**

गुणों के भण्डार हैं, संघ के आधार हैं, व्यसनमुक्त जीवन ही सुख का आधार है .. भजन की मधुर प्रस्तुति के साथ गुरु गुणगान कर गुरुदेव की साधना, स्वाध्यायशीलता के बारे में अभिव्यक्ति दी। श्रीमती रेखाजी जैन क्षेत्रीय प्रधान, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, पोरवाल सम्भाग ने कहा कि भगवान ऋषभदेव मानव-समाज के आदि व्यवस्थापक और प्रथम धर्म नायक तीर्थंकर हुए। उन्होंने भजन **संघ के आँगन में केशर की बरसात हो गई, हीरा गुरु की सुन्दर सी सौगात मिल गई...** प्रस्तुति दी एवं कहा कि गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा व्यसनमुक्त जीवन जीने कि प्रभावी प्रेरणा करते हैं साथ ही व्रती श्रावक बनाने, शीलव्रत के खन्द करवाने, रात्रिभोजन-त्याग अभियान को गाँव-गाँव, नगर-नगर में पहुँचाने में सफल रहे हैं। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कुशलचन्दजी जैन गोटेवाला ने गुरु हीरा के श्रावकों के लिए चार सन्देशों का सरल रूप में विवेचन कर आचरण में लाने के लिए निवेदन किया। सवाईमाधोपुर शहर शाखा अध्यक्ष श्री धर्मचन्दजी जैन ने कहा कि श्रावकाचार का पालन कर हम साधना में आगे बढ़ सकते हैं। बजरिया शाखा अध्यक्ष श्री मुकेश कुमारजी जैन, पान वालों ने **सदा स्वस्थ रहे गुरु हमारे ..** भजन के माध्यम से मंगल भावना व्यक्त की। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती रजनीजी जैन ने उत्तराध्ययनसूत्र गीति काव्य आधारित वीर प्रभु की अन्तिम वाणी ज्ञानवर्धक परीक्षा में भाग लेने की अपील की। श्री त्रिलोकचन्दजी जैन, प्रधानाचार्य और शाखा अध्यक्ष श्रीमती सुरेखाजी जैन गोटेवाला ने भजन के साथ गुरु महिमा का बखान किया। समारोह में आदर्श नगर, आवासन मण्डल, बजरिया, महावीर नगर एवं शहर सवाई माधोपुर के श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर सामायिक साधना का लाभ लिया। श्री पोरवाल क्षेत्र में 'वीर प्रभु की अन्तिम वाणी' पर प्रथम चरण परीक्षा रविवार 6, अगस्त को होगी एवं आवेदन तिथि 30 जून रहेगी। दोपहर में जैन रत्न श्राविका मण्डल की शाखा केन्द्रों पर सामूहिक सामायिक हुई एवं प्रतिक्रमणसूत्र आधारित परीक्षा सम्पन्न हुई।

-धनसुरेश जैन, सवाई माधोपुर

चेन्नई-प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म एवं दीक्षा-कल्याणक तथा आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा का 85वाँ जन्मदिवस श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ तमिलनाडु के तत्त्वावधान में स्वाध्याय-भवन, साहूकारपेट में तप-त्यागपूर्वक श्रद्धा सहित गुणगान करते हुए तीन-तीन सामायिक साधना तथा स्वाध्याय-दिवस के रूप में मनाया गया। स्वाध्यायी श्री महावीरचंदजी तातेड़, शासुन जैन महिला कालेज, चेन्नई के जैन विद्या विभाग के शोध प्रमुख साहित्यकार डॉ. दिलीपजी धींग, धार्मिक अध्यापक श्री विनोदजी जैन एवं श्रावक संघ-तमिलनाडु के पूर्व मन्त्री श्री जवाहरलालजी कर्णावट ने प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव एवं आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा.के गुणगाण किये। इस दिवस पर युवा रत्न श्री तरुणजी बोहरा 'तीर्थ' ने विशेष रूप से गुणगाण करते हुए आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा के चार मुख्य आयाम सामायिक, स्वाध्याय, संस्कार और संगठन पर विश्लेषण करते हुए इन आयामों हेतु आचार्यश्री की प्रेरणा तथा पुरुषार्थ पर अति सुन्दर प्रकाश डाला। श्राविका मण्डल तमिलनाडु की अध्यक्षा श्रीमती अमिताजी कवाड़ ने इस पावन प्रसंग के उपलक्ष्य में आयोजित महिलाओं के स्वास्थ्य की नि:शुल्क जाँच कैम्प हेतु विशेष रूप से जैन मेडिकल रिलीफ सोसाइटी, श्रावक संघ, युवक परिषद्, श्राविका मण्डल एवं श्राविका श्रीमती मनीषाजी कांकरिया, युवारत्न श्री सौरभजी बाघमार, कैम्प के प्रायोजक श्री सम्पतराजजी धर्मचन्दजी छल्लाणी के प्रति विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापित किया। श्रावक संघ, तमिलनाडु के मन्त्री श्री अनोपचन्दजी बागमार ने जन्म कल्याणक एवं जन्मदिवस कार्यक्रम का सुन्दर सञ्चालन किया। इस पुनीत दिवस पर चेन्नई महानगर के अनेक उपनगरों से उपस्थित श्रद्धालुओं ने उपवास, एकाशन, आयंबिल के प्रत्याख्यान किये तथा तीन-तीन सामायिक की साधना की।

-आर. नरेन्द्र कांकरिया

बीजापुर-पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के जन्मदिवस पर श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन युवक मण्डल एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा बीजापुर गौशाला में 600 गायों को चारा खिलाया गया।

-विजय नितिन कुमार रुणवाल

जयपुर में गुणानुवाद-सभा

परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. की सुशिष्या **महासती श्री प्रियदर्शनाजी म.सा.** का 28 फरवरी, 2023 को देवलोकगमन होने पर 2 मार्च, 2023 को गुणानुवाद सभा सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 तथा साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-10 के सान्निध्य में की गई, जिसमें सन्त-सतीवृन्द के अलावा संघ-संरक्षक न्यायमूर्ति श्री जसराजजी चौपड़ा, श्री विमलचन्दजी डागा, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा, कार्याध्यक्ष एवं जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्दजी जैन, श्री रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर के अध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोत आदि महानुभावों ने महासतीजी के संयमी जीवन के गुणगान करते हुए उनकी अनेक विशेषताओं को अभिव्यक्त किया। अन्त में चार लोगस्स के काउस्सग्ग से श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई। कार्यक्रम का सञ्चालन श्री प्रकाशजी जैन प्राचार्य के द्वारा किया गया।

- संजीव कोठारी, मन्त्री

रत्नसंघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों का दक्षिण प्रवास कार्यक्रम सम्पन्न

संघ के उन्नयन, विकास तथा संगठन को मजबूती प्रदान करने के लिए अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के राष्ट्रीय पदाधिकारियों का दक्षिण भारत का 16 से 19 मार्च तक प्रवास कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रवास में पदाधिकारीगण मैसूर, बेंगलौर, तोंडवेलापुर, रामपुर, रायचूर एवं हैदराबाद पधारे। प्रवास कार्यक्रम के दौरान दक्षिण क्षेत्र में विराजित व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा, व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा एवं व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण एवं सेवा का लाभ प्राप्त किया। इस प्रवास में दक्षिण क्षेत्र में रहने वाले वीर परिवारों से सम्पर्क किया गया तथा संघ के सदस्यों के साथ वार्त्ता, परिचय एवं विचार-विमर्श किया। हैदराबाद में आचार्य हस्ती फाउण्डेशन द्वारा डॉ. दिलीपजी धींग को प्रदत्त 'आचार्य हस्ती सेवा सम्मान-2022' के कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाशजी टाटिया की मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थिति रही। प्रवास कार्यक्रम के दौरान संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्रीमान प्रकाशजी टाटिया ने विभिन्न स्थानों पर सभी को संघ से जुड़ने का आह्वान किया। प्राथमिक रूप से भगवान महावीर स्वामी के सन्देशों के बारे में सारगर्भित विचार रखे। सभी संघ सदस्यों एवं युवाओं द्वारा संघ में दी जा रही सेवाओं के पीछे रहे हुए उनके पारिवारिकजनों के सहयोग एवं साथ के लिए उनका धन्यवाद भी ज्ञापित किया।

समाज में व्याप्त हो रही अव्यवस्थाओं से बचाव एवं पारिवारिक इकाईयों के सुदृढ़ीकरण के उपाय सुझाए। परिवार में संवाद एवं सामूहिक प्रार्थनाएँ हो, इसकी आवश्यकता बताई। राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता ने सभी को भगवान महावीर का चरित्र, 27 भवों की यात्रा को पढ़ने की प्रेरणा की। उन्होंने कहा कि सभी को माह के प्रथम सप्ताह में सामूहिक पारिवारिक समायिक करने एवं उसमें भगवान महावीर का जीवन पढ़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि सभी को अपने घर पर जिनवाणी अवश्य रूप में मँगवानी एवं पढ़नी चाहिये तथा इसके द्वारा गुरुओं के प्रवचन एवं शिक्षाओं को जानने का अवसर उनकी अनुपस्थिति में भी मिलता है।

'जैनधर्म का मौलिक इतिहास' के अनुसार पूर्व में जैनों की प्रतिष्ठा एवं बहुसंख्यक समाज से घट कर अब अल्पसंख्यक बनने की बात बताई। आपने भावना एवं जोश से भरपूर वक्तव्य द्वारा प्रभावी प्रेरणा की। श्राविका

मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया ने सभी श्राविकाओं से संघ की गतिविधियों में सक्रियता की माँग की, उन्होंने संस्कार शालाओं के प्रभावी सञ्चालन के लिए श्राविकाओं का आह्वान किया। युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विवेकजी लोढ़ा द्वारा सभी युवाओं को संघ एवं समाज से जुड़ने का आह्वान किया गया। युवाओं द्वारा विहार-सेवा में उल्लेखनीय योगदान के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया गया। उन्होंने दक्षिण में आयोजित युवा कनेक्ट के बारे में जानकारी दी एवं इस तरह के आयोजनों से जुड़ने पर जोर दिया। प्रवास कार्यक्रम में सभी स्थानों पर बैंगलोर श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री नरेन्द्रजी भण्डारी साथ रहे एवं उन्होंने प्रतिमाह आचार्य भगवन्त की सेवा में जाने के लिए, दक्षिण क्षेत्र से संघ यात्रा निकालने के विचार रखे। उन्होंने दक्षिण क्षेत्र में सन्त-सतीवृन्द के विचरण की आवश्यकता, दक्षिण में हो रहे धार्मिक गतिविधियों की जानकारी दी। साथ ही श्राविका मण्डल कार्याध्यक्ष श्रीमती संगीताजी बोहरा-चेन्नई, क्षेत्रीय प्रधान कर्नाटक सम्भाग श्रीमती वैजयन्तीजी मेहता-बैंगलोर, युवक परिषद् उपाध्यक्ष श्री विजयजी रूणवाल-बीजापुर, श्री माँगीलाल जी चोरड़िया-चेन्नई, वरिष्ठ संघ सदस्य एवं गजेन्द्र निधि के ट्रस्टी श्री यशवन्तजी सांखला-बैंगलोर एवं स्थानीय अध्यक्ष, मन्त्री एवं टीम, वीर परिवारों एवं गजेन्द्र निधि के ट्रस्टियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

इस प्रवास कार्यक्रम में सभी संघ सदस्यों, पदाधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले गुरुभ्राताओं का अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 85वें जन्मदिवस पर अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा प्रतिक्रमण पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 85वाँ जन्मदिवस चैत्र कृष्णा 8, बुधवार, 15 मार्च 2023 को अखिल भारतीय स्तर पर 'सामायिक-स्वाध्याय दिवस' के रूप में मनाया गया। पूज्य गुरुदेव के जन्मदिवस पर सभी अपने-अपने क्षेत्र में तीन-तीन सामायिक, तेले, एकाशन, उपवास, आयम्बिल की साधना-आराधना के साथ संवर हुए।

जहाँ सन्त-सतीवृन्द विराज रहे थे वहाँ पर प्रवचन के माध्यम से गुरु गुणगान, भाषण, गीतिका का आयोजन करने के साथ अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिक्रमण पर आधारित प्रश्नोत्तरी तथा कई स्थानीय शाखाओं में गुरु हस्ती चालीसा, गुरु हीरा चालीसा, गुणाष्टकम् आदि प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। जिसमें कई श्रावक-श्राविकाओं ने बढ़-चढ़ कर उत्साह से भाग लिया।

कोलकाता श्राविका मण्डल द्वारा रत्नसंघ की पर्व तिथियों के भजनों की पुस्तिका 'जैन पर्व गीताञ्जलि' का विमोचन बहिनों द्वारा किया गया।

अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिक्रमण प्रतियोगिता में शीर्ष प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों की सूची इस प्रकार है-

प्रथम स्थान-(1) लीलाजी कटारिया-कोलकाता (2) हेमलताजी बाफना-इन्दौर (3) अर्पिताजी जैन-कोटा (4) आभाजी जैन-जयपुर (5) अरूणाजी जैन-अलीगढ़-रामपुरा (6) प्रीतिजी बाफना-बालोतरा (7) लीलाजी जैन-सुमेरगंज मण्डी (8) शिल्पाजी जैन-सवाईमाधोपुर (9) मेघाजी कोठारी-अजमेर (10) विश्रान्तिजी जैन-बजरिया (11) मनीषाजी कांकरिया-चेन्नई (12) चन्द्राजी बोथरा-जोधपुर (13) वनिताजी सिसोदिया-

रायचूर (14) वैजयन्तीजी मेहता-बैंगलोर।

द्वितीय स्थान-(1) विमलाजी भण्डारी-कोलकाता (2) गुंजनजी जैन-इन्दौर (3) अंकितजी लोढ़ा-कोटा (4) मधुजी जैन-जयपुर (5) चमेलीजी जैन- अलीगढ़-रामपुरा (6) सीमाजी पारेख-बालोतरा (7) मेघाजी जैन-सुमेरगंज मण्डी (8) वंदनाजी जैन- सवाईमाधोपुर (9) सुशीलाजी भंसाली-अजमेर (10) मंजूजी सर्राफ-बजरिया (11) तरुणजी बोहरा- चेन्नई (12) किरणजी दुगड़-जोधपुर (13) सुशीलाजी कांकरिया-रायचूर (14) सुशीलाजी भण्डारी-बैंगलोर।

तृतीय स्थान-(1) निर्मलाजी बोथरा-कोलकाता (2) सारिकाजी लुणावत-इन्दौर (3) सन्तोषजी लोढ़ा-कोटा (4) मायाजी चपलोत-जयपुर (5) सीमाजी जैन- अलीगढ़-रामपुरा (6) संतोषदेवीजी बाफना- बालोतरा (7) मुदिताजी जैन-सुमेरगंज मण्डी (8) संगीताजी जैन-सवाईमाधोपुर (9) नम्रताजी कोठारी-अजमेर (10) समताजी जैन-बजरिया (11) संगीताजी बोहरा- चेन्नई (12) रेखाजी मेहता-जोधपुर (13) सविताजी धोका-रायचूर।

श्राविकाएँ प्रतिदिन स्वाध्याय भवन में पधार कर अपना धर्म-ध्यान तो करती ही है साथ ही बच्चों में धर्म की अभिमुख हो उनमें प्रारम्भ से ही ज्ञानाराधन और धर्म-ध्यान की प्रेरणा की जाती है। जहाँ संस्कार केन्द्र की पाठशालाएँ खुली हुई हैं, वहाँ पर बच्चों को संस्स्कार केन्द्र की पाठशालाओं में भेजने की प्रेरणा की जाती है।

हमें कुछ ही प्रतिभागियों के बैंक खाता विवरण की जानकारी प्राप्त हुई है। विजेता प्रतिभागियों की पुरस्कार राशि उनके बैंक खाते में नेफ्ट के द्वारा भेजी जायेगी। अत: प्रतियोगिता प्रतिभागी अपने नाम के साथ, बैंक का नाम, बैंक खाता संख्या, आई.एफ.सी. कोड के साथ बैंक विवरण की जानकारी (जैसे बैंक पासबुक में मुद्रित) हुआ है, वैसा ही साफ खुले अक्षरों में लिखकर भेजें। *-श्वेता कर्नावट, महासचिव*

महाराष्ट्र क्षेत्र में प्रचार-प्रसार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगाँव के संयुक्त तत्त्वावधान में 20 से 24 मार्च, 2023 तक महाराष्ट्र के पारोला, शिरूड़, फागणा, मालेगाँव, ताहराबाद, जायखेड़ा, उमराणा, सटाणा, चाँदवड़, नादगाँव, न्यायडोंगरी, बोलठाण, लासुर स्टेशन क्षेत्र में प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रवास कार्यक्रम में स्वाध्याय संघ के राष्ट्रीय संयोजक श्री सुभाषजी हुण्डीवाल-जोधपुर, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के सह-संयोजक श्री राजेशजी भण्डारी-जोधपुर, श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगाँव, महाराष्ट्र शाखा के सह-संयोजक एवं प्रचारक श्री मनोजजी संचेती-जलगाँव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के कार्यालय प्रभारी श्री सुरेशजी हिंगड़ की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। कार्यक्रम के अन्तर्गत 20 नए स्वाध्यायी, पर्युषणपर्व में स्वाध्यायी आमन्त्रित करने हेतु पाँच क्षेत्रों की माँग एवं शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा की जानकारी देते हुए परीक्षा के 82 फॉर्म प्राप्त हुए। संस्कार केन्द्र एवं बच्चों की पाठशाला का निरीक्षण भी किया गया। *-सुनील संकलेचा, सचिव*

अक्षय तृतीया पर एकान्तर तप-साधकों से निवेदन

आगामी वैशाख शुक्ला तृतीया, 23 अप्रेल, 2023 को तप और दान का विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया समुपस्थित हो रहा है। इस पावन अवसर पर तप-साधक आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., भावी आचार्यप्रवर श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में उपस्थित होकर जो भी तपस्वी भाई-बहिन दान एवं तप के माहात्म्य को श्रवण कर नवीन त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण करना चाहते हैं, वे सभी साधक अपने पधारने

की स्वीकृति नाम एवं सदस्य संख्या का उल्लेख करते हुए संघ के प्रधान कार्यालय-सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर, फोन नं. 0291-2636763, 2624891 पर अवश्य लिखवा दिरावें। कार्यक्रम स्थल की सूचना गुरुदेव द्वारा घोषणा होने पर शीघ्र ही देने का लक्ष्य रहेगा। दूर गाँव से पधारने वाले साधक अपना आरक्षण जोधपुर तक का करवा सकते हैं। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

विद्यार्थियों के जीवन-निर्माण में बनें सहयोगी

छात्र-छात्रा संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण योजना

(प्रतिवर्ष एक छात्र के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, (सिद्धान्त शाला) जयपुर, संघ एवं समाज के प्रतिभाशाली छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 1973 से सञ्चालित संस्था है। इस संस्था से अब तक सैकड़ों विद्यार्थी अध्ययन कर प्रशासकीय, राजकीय एवं प्रोफेशनल क्षेत्र में कार्यरत हैं। अनेक छात्र व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं। समय-समय पर ये संघ-समाजसेवी कार्यों में निरन्तर अपनी सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में भी यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की नि:शुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जाती हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ ही छात्रों को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। वर्तमान में संस्थान में 71 विद्यार्थियों के लिए अध्ययनानुकूल व्यवस्थाएँ हैं। संस्था को सुचारूरूप से चलाने एवं इन बालकों के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्रों के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में बालकों के संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

इसमें सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में क्रमिक रूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं। संस्थान के लिए पूर्व छात्रों का एवं निम्नलिखित महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है-

53. श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, जयपुर	3,00,000/-
54. श्रीमती सुमनजी श्री विनयचन्दजी कोठारी, जयपुर, पूज्य पिताश्री स्व. ज्ञानचन्दजी कोठारी की पुण्यस्मृति में।	48,000/-
55. मैसर्स सुराणा एण्ड सुराणा, चेन्नई (तमिलनाडु) (फरवरी)	35,000/-
56. मैसर्स सुराणा एण्ड सुराणा, चेन्नई (तमिलनाडु) (मार्च)	35,000/-
57. श्रीमती शीलाजी धर्मसहायिका श्री प्रकाशजी कोठारी, जयपुर (राजस्थान)	30,000/-

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रांजेक्शनस्लिप एवं सम्बद्ध जानकारी हमें अवश्य भेजे।

खाते का विवरण:-Name : ***GAJENDRA CHARITABLE TRUST***, Account Type : *Saving*, Account Number : ***10332191006750***, Bank Name : *Punjab National Bank*, Branch : Khadi Board, Bajaj Nagar, Jaipur, Ifsc Code : PUNB0103310, Micr Code : 302022011, Custumer ID : 35288297 **निवेदक :** डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा (व्यवस्थापक), सुमन कोठारी (संयोजक), अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य' 9461456489, 7976246596

(प्रतिवर्ष एक छात्रा के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका), मानसरोवर-जयपुर, संघ और समाज की प्रतिभाशाली छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 2017 से सञ्चालित संस्था है। यहाँ इस संस्था में वर्तमान में 40 अध्ययनरत छात्राओं को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की नि:शुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जा रही हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ छात्राओं को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। संस्था को सुचारूरूप से चलाने एवं इन बालिकाओं के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्राओं के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में तथा उनके संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

इसमें सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में क्रमिक रूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं। संस्थान के लिए पूर्व छात्रों का एवं निम्नलिखित महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है-

17\. श्रीमती ताराकुमारीजी लोढ़ा, विजलपोर-नवसारी (गुजरात)
धर्मसहायक स्व. श्री बिरधीचन्दजी लोढ़ा की द्वितीय पुण्य-स्मृति पर। 24,000/-

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्राँजेक्शनस्लिप तथा सम्बद्ध जानकारी हमें अवश्य भेजे।

खाते का विवरण:-Name : ***SAMYAGGYAN PRACHARAK MANDAL***, Account Type : *Saving,* Account Number : ***51026632997***, Bank Name : *SBI*, Branch : Bapu Bazar, Jaipur, Ifsc Code : SBIN0031843 **निवेदक :** अशोक कुमार सेठ, मन्त्री। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क फोन नं. अनिल जैन 9314635755

स्वाध्याय शिक्षा द्विमासिक पत्रिका के सदस्य बनें

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर की ओर से स्वाध्यायियों के ज्ञान में विशेष अभिवृद्धि तथा भाषा ज्ञान को पुष्ट करने के लक्ष्य से गत 38 वर्षों से संस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी भाषा की द्विमात्रिक पत्रिका 'स्वाध्याय शिक्षा' का निरन्तर प्रकाशन किया जा रहा है। अभी इस पत्रिका की पाठ्य सामग्री एक-एक विषय पर आधारित रहती है। अब तक पंच परमेष्ठी, रत्नत्रय, आगम आदि पर सारगर्भित सामग्री के साथ प्रकाशन हो चुका है, जिसकी पाठकों ने खूब सराहना की है। अगले अंक के विषय की सूचना वर्तमान अंक में दे दी जाती है, अगला अंक इस बार (15 मई तक) प्रश्नव्याकरणसूत्र पर रहेगा। आपसे अनुरोध है कि आप अपने श्रुतज्ञान की वृद्धि हेतु इस पत्रिका के सदस्य बनें। सदस्यता शुल्क 20 वर्ष के लिए रुपये 1,000/- मात्र है। सदस्य बनने हेतु आप श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राजस्थान) 0291-2624891, 9462543360 पर सम्पर्क कर सकते हैं। **लेखकों से अनुरोध**-चिन्तनशील, प्रबुद्ध, विद्वान् लेखकों से अनुरोध है कि वे अपनी मौलिक रचनाएँ भेजकर स्वाध्यायियों की ज्ञानवृद्धि में सहयोगी बनें। आप अपने लेख सम्पादकीय कार्यालय-आध्यात्मिक शिक्षा समिति, ए 9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राजस्थान) assjaipur108@gmail.com पर भिजवा सकते हैं।

संक्षिप्त समाचार

जयपुर-श्री एस. एस. जैन सुबोध शिक्षा समिति द्वारा विगत तीन वर्षों से सुबोध संस्थान में जैन समाज के बच्चों का अधिक से अधिक प्रवेश हो, इस उद्देश्य से स्थानकवासी जैन समाज के बच्चों को सुबोध संस्थान में प्रवेश लेने पर निर्धारित शुल्क में 50% की छूट दी जा रही है। संस्थान में बच्चों को व्यावहारिक शिक्षा के साथ विद्यालय स्तर पर नैतिक संस्कार की शिक्षा भी देने का प्रयास किया जा रहा है। समिति के अन्तर्गत सञ्चालित शिक्षण संस्थाओं में प्ले

ग्रुप से लेकर स्नातकोत्तर तक (बी.ए., बी.कॉम, बी.एस.सी., बी.बी.ए., बी.सी.ए., एम.सी.ए., एल.एल.बी., एम.बी.ए., बी.एड.) समस्त व्यावहारिक शिक्षा के पाठ्यक्रम सञ्चालित हैं तथा छात्र-छात्राओं के लिए क्रमशः मानसरोवर एवं सांगानेर परिसर में छात्रावास सुविधा भी उपलब्ध है। अधिक जानकारी के लिए कार्यालय **सम्पर्क सूत्र :** प्रकाशचन्द लोढ़ा, मो. 95718-29925 *-सुमेरसिंह बोथरा, मानद् मन्त्री*

उदयपुर-जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर एवं आगम, अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 'सप्तदिवसीय पाण्डुलिपि-पठन कार्यशाला' का आयोजन 11 से 17 मार्च, 2023 तक अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर के पुस्तकालय में किया गया, जिसमें प्राचीन देवनागरी लिपि का अभ्यास 'लिपि विषय विशेषज्ञ' सुश्री मानसी धारीवाल, रायपुर द्वारा लिपि-अभ्यास करवाया गया, साथ ही अन्य पाण्डुलिपि प्रोफेसर विशेषज्ञों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। *- डॉ. सुमत कुमार जैन*

बधाई

जोधपुर-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व महामन्त्री, श्री जगदीशमलजी कुम्भट महावीर

इण्टरनेशनल ब्लू सिटी, जोधपुर के द्विवार्षिक चुनाव वर्ष 2023-2025 के लिए लगातार दूसरी बार सर्व सम्मति से अध्यक्ष चुने गये। तत्पश्चात् उन्होंने श्री रौनकजी कुम्भट को सह-सचिव तथा श्री राजेन्द्रजी भण्डारी को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया। श्रीमती पुष्पाजी कुम्भट धर्मपत्नी श्री जे.एम. कुम्भट निदेशक चुनी गई।

हैदराबाद-शासुन जैन कॉलेज, चेन्नई में जैनविद्या विभाग के शोध-प्रमुख डॉ. दिलीपजी धींग को 19 मार्च को

उपाध्याय गौतममुनि मानव सेवा केन्द्र भवन, हैदराबाद में आचार्य हस्ती सेवा सम्मान (2022) से सम्मानित किया गया। आचार्य हस्ती फाउंडेशन, हैदराबाद की ओर से आयोजित भव्य समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायाधिपति श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया एवं अन्य अतिथियों ने डॉ. धींग को शॉल, पगड़ी, प्रशस्ति पत्र, स्मृति-चिह्न और सम्मान राशि के साथ सम्मानित किया। *-श्रीपाल देशलहरा, मन्त्री-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, हैदराबाद*

मुम्बई-विख्यात सी. ए. श्री चिमनलाल जी डाँगी को समग्र जैन समाज की 124 वर्ष पुरानी एक मात्र राष्ट्रीय संस्था

भारत जैन महामण्डल का निर्विरोध राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया है। 5 मार्च को आयोजित शपथ ग्रहण समारोह मे पूर्व न्यायाधीश श्री कमलकिशोरजी तातेड़ द्वारा आपको शपथ दिलाई गयी। डाँगी परिवार की आचार्य भगवन्त और संघ के प्रति गहरी आस्था है। आपने अपनी कार्यकारिणी में श्री नरेन्द्रजी हीरावत, मुम्बई को उपाध्यक्ष के रूप में शामिल किया है।

बालोतरा-महावीर इण्टरनेशनल अपेक्स के नवनिर्वाचित अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष सी.ए. श्री अनिलजी जैन द्वारा समाजसेवी सी.ए. श्री ओमप्रकाशजी बाँठिया को उनकी सेवाओं को देखते हुए, उन्हें 2023-25 के लिए रीजन 6 का अन्तरराष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोनीत किया है, जिससे केन्द्र में विशेष हर्ष एवं उत्साह है। उन्हें बाड़मेर बालोतरा, पाली, जालौर, सिरोही जोन के केन्द्रों का मार्गदर्शन करने के साथ ही, महावीर इण्टरनेशनल अपेक्स आदर्श संगठन के सेवा कार्यों के विस्तार में, विकास एवं उत्थान में योगदान देने का कार्य भार सौंपा गया है।

जोधपुर-सुश्री लवि सुपुत्री श्री उत्कर्षजी सुपौत्री श्री पदमरूपचन्दजी भण्डारी, दौहित्री श्री धनपतजी सेठिया ने सम्पूर्णानन्द मेडिकल कॉलेज, जोधपुर से एम.बी.बी.एस. की परीक्षा तीसरी रैंक से उत्तीर्ण की है।

श्रद्धाञ्जलि

श्रवणबेलगोला-कर्मयोगी स्वति श्री चारुकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी का 74 वर्ष की आयु में 23 मार्च, 2023 को

देवलोकगमन हो गया। उन्होंने 54 वर्षों तक तपोमय साधक जीवन जीया। वे धवल तीर्थ श्रवण-बेलगोला के प्रमुख थे तथा बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ के राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष थे। विद्या एवं विद्वानों के प्रति उनका असीम स्नेह था। वे जैनधर्म दर्शन के विचारक विद्वान् होने के साथ प्राकृत भाषा एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार में भी संलग्न थे। प्राकृत विश्वविद्यालय की स्थापना करना उनका पावन संकल्प था। श्रवण बेलगोला में बाहुबली के महामस्तकाभिषेक पर राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों में उनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण होती थी। वे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। संस्कृति, पुरातत्त्व कला, प्राकृत भाषा एवं साहित्य के संरक्षण तथा सम्वर्धन में उनकी महती भूमिका रही। वे संयमित एवं व्रतनिष्ठ जीवनशैली के साथ जीवन जी रहे थे। एलोपैथी दवा का उन्होंने कभी सेवन नहीं किया, कभी रोग की जाँच नहीं करवायी। उनके सान्निध्य में अनेक प्राकृत की राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठियाँ आयोजित हुई तथा समय-समय पर विद्वानों के व्याख्यान भी होते थे। श्रवणबेलगोला में सेवा के अनेक सोपानों के रूप में चिकित्सालय आदि भी उपलब्ध हैं।

जयपुर-जैनदर्शन के अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान्, अनेक ग्रन्थों के रचनाकार आचार्य कुन्दकुन्द एवं कानजी

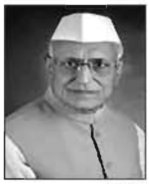

स्वामी के चिन्तन को सरल सुबोध भाषा में गद्य और पद्य में जन-जन तक पहुँचाने वाले तथा पण्डित श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्याल के अधिष्ठाता के रूप में सहस्राधिक छात्रों को विद्वान् बनाने वाले डॉ. हुकुमचन्दजी भारिल्ल का 26 मार्च, 2023 को देवलोकगमन हो गया। 'मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ' गीत आपकी कालजयी रचना है, जो हर जीव को सुख और शान्ति का वेदन कराती है। उन्होंने देश-विदेश में अपने व्याख्यानों से लोगों को प्रभावित किया।

सूरत-अनन्य गुरुभक्त, श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री लाभचन्दजी नाहर का 11 मार्च, 2023 को संथारापूर्वक

समाधिमरण हो गया। आप सन्त-सतियों के प्रति पूर्ण श्रद्धाभक्ति के साथ समर्पित होने के साथ सरल स्वभावी, सेवाभावी एवं उदारमना थे। आपके पिछले 23 वर्षों से वर्षीतप की तपस्या, 15 वर्ष से बड़ी स्नान का त्याग, 33 वर्ष की अवस्था से ही ज़मींकंद के त्याग-प्रत्याख्यान किये हुए थे। आपने 36 वर्ष की युवा अवस्था में ही आजीवन शीलव्रत अंगीकार कर लिया था तथा आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. के सान्निध्य में रहकर लगातार 9 वर्षों तक पर्युषण पर्व पर अठाई तप किया तथा प्रतिदिन 11 सामायिक, संवर, पौषध, दोनों समय प्रतिक्रमण एवं रात्रि चौविहार का पालन करते हुए गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी आप साधु सरीखा जीवन जीते थे। आप प्रातः 3.30 बजे ही गुरुदेव हस्ती, हीरा, मान की स्तुति करते थे। स्वाध्याय का आपका प्रतिदिन का क्रम था। इनके अतिरिक्त 16, 11, 8 की तपस्या एवं कई तेले की तपस्या बहुत बार की। आप प्रतिदिन 2000 गाथाओं का स्वाध्याय करते थे। आपने सूरत संघ की जड़ों का जिस तरह सिञ्चन किया है, आज उसके परिणामस्वरूप यह वटवृक्ष की तरह खड़ा है। आपकी अध्यक्षता में ही श्री सोहनलाल नाहर स्वाध्याय भवन का निर्माण हुआ। आपके परिवार का हर सदस्य जिनशासन एवं सन्त- सतीवृन्द की सेवा में अग्रणी है। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती लाडश्रीजी भी 24 वर्षों से वर्षीतप तपस्या एवं धर्मसाधना में रत हैं। आपके तीनों सुपुत्र श्री राजीवजी, संजीवजी एवं सन्दीपजी संघ-सेवा, विहार सेवा आदि में अग्रणी रहते हैं। श्री राजीवजी नाहर

अखिल भारतीय जैन रत्न युवक परिषद् में उपाध्यक्ष पद का दायित्व बखूबी निर्वहन कर चुके हैं। गुणानुवाद सभा में सभी स्थानकवासी संघों ने विचाराभिव्यक्ति कर श्रद्धाञ्जलि दी। शरद पूर्णिमा को जन्मे श्री नाहर साहब परिवार एवं समाज में पूर्णिमा की भाँति प्रकाश कर गये। *- सुनील गाँधी, महामन्त्री*

दिल्ली-अनन्य गुरुभक्त, श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कमलादेवीजी धर्मसहायिका वीरभ्राता स्व.

प्रेमचन्दजी गाँधी (पीपाड़ वाले) का 21 मार्च, 2023 को सागारी संथारापूर्वक देवलोकगमन हो गया। सुश्राविका देव, गुरु, धर्म एवं रत्नसंघ के प्रति समर्पित थीं। जिनके अन्तर्गुणों की सुवास उनके तप, त्याग, सामायिक, स्वाध्याय, व्रत-प्रत्याख्यान एवं सुपात्रदान की भावना के साथ पारिवारिकजनों एवं भावी सन्तति को धर्म संस्कारों से सुपोषित के कारण व्याप्त थी। स्वभाव में सरलता, विनय जैसे गुणों के कारण आपका बाह्य जीवन व्यवहार परिवार, संघ, समाज सभी के लिए प्रेरणास्पद रहा। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने फरमाया-''जब शरीर आहार ग्रहण करना छोड़ दे तब समझो कि अब शरीर कभी-भी जा सकता है और ये तो जाने वाला ही है, रुकने वाला नहीं, कभी भी जा सकता है। इसलिये ऐसी अवस्था में उठते-बैठते, सोते-जागते सतत नमस्कार मन्त्र या लोगस्स का ध्यान जितना कर सको, उतना करना है। अठारह पाप के प्रत्याख्यान, औषध आदि के आगार रखकर, आत्मसाक्षी भाव में लीन हो जाओ यही साथ जाने वाला, यही सागारी संथारा है।'' इन प्रेरक वचनों को आत्मसात् करके आपने अन्तिम प्रयाण किया।

अलीगढ़-रामपुरा-धर्मपरायण, वरिष्ठ सुश्राविका वीर दादी श्रीमती रतनीदेवी जी धर्मसहायिका स्व. श्री चाँदमलजी

जैन बजाज का 10 मार्च, 2023 को 80 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगीपूर्ण था। आपकी देव-गुरु-धर्म पर अनन्य आस्था थी। आप सभी सन्त-सतीवृन्द की सेवा में अग्रणी रहती थीं। स्थानक में सन्त-सतीवृन्द के पधारने पर दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ अवश्य लेती थीं। प्रतिदिन नवकारसी, सामायिक-स्वाध्याय करना आपकी दिनचर्या का अंग था। आपने उपवास, बेला, तेला, पचौला, अठाई एवं ग्यारह की तपस्याएँ की हैं। आपका जीवन धार्मिकता से ओतप्रोत था तथा आपके यौवन वय से ही रात्रिभोजन के त्याग थे। आपकी सत्प्रेरणा से ही आपकी सांसारिक सुपौत्री महासती श्री अदितिप्रभाजी म.सा. जिनशासन की प्रभावना कर रही हैं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर-श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ, सुश्राविका श्रीमती लीलाजी धर्मसहायिका श्री पूरणराजजी अबानी का 6 फरवरी,

2023 को देहावसान हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। पारिवारिक सुंस्कारों से संस्कारित धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक सन्त-सतीवृन्द की सेवा में तत्पर रहने वाली श्रीमती लीलाजी अबानी का जीवन त्याग-प्रत्याख्यान से युक्त था। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता के कारण आप सभी की प्रियपात्र थीं। आप नियमित रूप से गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करने वाली अग्रणी श्राविकारत्न थी। जोधपुर रत्नसंघीय सन्त-सतीवृन्द के चातुर्मास में आप सहित समस्त परिवारजनों ने धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया है। केवल आप ही नहीं, सम्पूर्ण परिवार रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है। साधनों की प्राप्ति पूर्व पुण्य से होती है पर आपने उनका सदुपयोग करके पुण्य का उत्पादन किया। श्राविकारत्न श्रीमती लीलाजी अबानी ने श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर के उपाध्यक्ष तथा कोषाध्यक्ष पद का भी दायित्व बखूबी निर्वहन किया। श्राविकारत्न ने संस्कारों से अपने समूचे परिवार को समृद्ध किया। आपके धर्मसहायक श्री

पूरणराजजी अबानी अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामन्त्री के रूप में, वात्सल्य निधि में संयोजक के रूप में महनीय सेवाएँ देने के साथ ही गजेन्द्र निधि के ट्रस्टी तथा श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी के अध्यक्षीय पद का दायित्व निर्वहन कर रहे हैं। आपके सुपुत्र श्री प्रवीणजी एवं श्री प्रशान्तजी अबानी संघ में अपना सहयोग प्रदान कर रहे है।

-प्रकाश टाटिया, संघाध्यक्ष

जोधपुर-प्रतिष्ठित समाज-सेवी डॉ. गोवर्द्धनजी पाराशर का 21 मार्च, 2023 को देहावसान हो गया। आपका

जीवन शान्तिपूर्ण और सन्तोषी था तथा चेहरे पर सदैव मुस्कराहट रहती थीं। आप सच्चे अर्थों में कर्मयोगी थे। आपको जब भी स्मरण किया जाता, तुरन्त प्रभाव से आप सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति एवं उपचारार्थ उपस्थित हो जाते थे। ऑस्टियोपैथी चिकित्सा का प्रशिक्षण आपने अपने पूज्य पिताजी से प्राप्त किया था। आपने देश-विदेश एवं भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री और विभिन्न राज्यों के राज्यपाल, कई अभिनेताओं, राजनीतिज्ञ जैसी हस्तियों को रोग-मुक्त किया। आपके इसी प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं सेवाओं के कारण देश-विदेश में कई पुरस्कारों से आपको नवाजा गया। संघ द्वारा जोधपुर में आयोजित गुणी-अभिनन्दन सम्मान-समारोह में भी आपको सम्मानित किया गया था। ऑस्टियोपैथी निरवद्य चिकित्सा पद्धति है। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., भावी आचार्यप्रवर सहित अनेक सन्त-सतियों को आपने एवं आपके सुपुत्र हेमन्तजी, गिर्राजजी, दामाद गौरवजी तथा अनेक शिष्य-शिष्याओं ने तत्परतापूर्वक सेवा प्रदान की है।

- धनपत सेठिया, महामन्त्री

चेन्नई-अनन्य गुरुभक्त, धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सायरदेवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री उमरावमलजी सुराणा (मूल

निवासी नागौर) का 11 मार्च, 2023 को देहावसान हो गया। आपकी सभी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आप सरलता, वाणी की मधुरता, करुणाशील आदि सद्गुणों के धनी थी। सेवा एवं सहृदयता के साथ आपने अनेक व्यक्तियों का जीवन-निर्माण किया। आपके परिवार ने आचार्यप्रवर के नागौर चातुर्मास में जो महनीय सेवा की, वह प्रेरणादायी है। आपके सुपुत्र श्री श्रीपालजी सुराणा संघ-सेवा में अग्रणी हैं तथा आपकी पुत्रवधू श्रीमती मधुजी सुराणा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की पूर्व में अध्यक्ष और परामर्शदाता पद का दायित्व बखूबी निर्वहन कर रही हैं। संघ-सेवा, सन्त-सेवा और आतिथ्य-सत्कार में सुराणा परिवार की सेवाएँ अतुलनीय है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

चेन्नई-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती हेमाजी धर्मसहायिका श्री महेन्द्रजी पुत्रवधू श्रीमती शान्तिदेवी जी-श्री

कुशलचन्दजी खींवसरा सुपुत्री श्रीमती जतनदेवी जी-श्री भोपालसिंहजी बरड़िया का 9 मार्च, 2023 को 57 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। आप स्वभाव से बहुत ही शान्त, सरल, धार्मिक, कर्त्तव्यनिष्ठ तथा पूर्णतया अपने परिवार को समर्पित थीं। आपका परिवार संघीय गतिविधियों से निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है। आपकी देव-गुरु-धर्म के प्रति दृढ़ आस्था थी। आपने अठाई, तेले, बेले, उपवास आदि तपस्याएँ की हैं। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

-सुनील हीरावत, जयपुर

बाड़मेर-धर्मनिष्ठ, सुश्राविका श्रीमती पानीदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री पुखराजजी बाँठिया का 78 वर्ष की वय में 10

फरवरी, 2023 को निधन हो गया। आप समर्पित श्राविकारत्न थीं। आप नित्य सात-आठ सामायिक, रात्रि भोजन-एवं जमीकन्द का त्याग रखती थी। सन् 1965 में आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के बाड़मेर आगमन पर, सन् 1992 एवं 2010 में आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के बाड़मेर होली चातुर्मास पर तथा सन् 2009 में उपाध्यायप्रवर मानचन्द्रजी म.सा.के पधारने पर और सन्

2020 में आचार्य श्री रामलालजी म.सा.के आगमन पर आपने सेवा-भक्ति का अपूर्व लाभ लिया। चातुर्मास में चार महीने तक आप स्थानक भवन में ही रहती थी। आपका पूरा परिवार धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में अग्रणी रहता है। आपके छोटे सुपुत्र श्री जितेन्द्रजी बाँठिया ने स्थानकवासी समाज के मन्त्री पद पर रहकर कई वर्षों तक समाज की सेवा की। अभी उपाध्यक्ष पद पर रहकर अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

- ओमप्रकाश बाँठिया

उपर्युक्त दिवगंत आत्माओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं सभी सम्बद्ध संस्थाओं के सदस्यों की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिक्षण एवं नैतिक संस्कार शिविरों का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आगामी ग्रीष्मकालीन अवकाश में धार्मिक शिक्षण एवं नैतिक संस्कार शिविरों का आयोजन सम्भावित 21 मई से 05 जून, 2023 तक किया जा रहा है। आप सभी से निवेदन है कि अपने क्षेत्र की सुविधानुसार पूर्व सूचना देकर तथा अनुमति प्राप्त कर शिविर का आयोजन अवश्य करें। इस हेतु अपने क्षेत्र के युवक परिषद् क्षेत्रीय प्रधान से सम्पर्क कर सकते हैं। शिविर का आयोजन करते समय निम्नांकित बिन्दुओं पर अवश्य ध्यान देंवे-

1. प्रतिदिन शिविर यदि 2.30 घण्टे का आयोजित हो तो कम से कम 15 दिन का होना चाहिए।
2. प्रतिदिन शिविर यदि 4.30 घण्टे का आयोजित हो तो कम से कम 7 दिन का होना चाहिए।
3. सभी पंथ/परम्परा के शिविरार्थी इसमें भाग ले सकेंगे।
4. शिविर में क्रियात्मकता के साथ ज्ञानार्जन तथा व्यक्तित्व विकास हेतु भी प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा।
5. शिविर में भाग लेने वाले प्रत्येक शिविरार्थी को पुरस्कार प्रदान किया जायेगा।

शिविर के सम्बन्ध में अधिक जानकारी हेतु श्री निपुणजी, नमनजी डागा-उपाध्यक्ष (धार्मिक शिक्षण एवं नैतिक संस्कार शिविर) मो. 98210-44803, 73037-44889 पर सम्पर्क करें। *-विकासराज जैन, महासचिव*

क्षण-भंगुर जीवन की कलिका

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

क्षण-भंगुर जीवन की यह नव-कलिका,
प्रातः समय फिर खिली न खिली।
मलयाचल की शुचि शीतल वायु,
प्रातः समय फिर चली न चली।

कलिकाल कुठार लिये फिरता,
तन-डाली नर्म है, चोट झिली न झिली।
रट ले प्रभु का नाम अरी रसना
प्रातः समय फिर हिली न हिली।।

क्या भरोसा है श्वासों का,
आए कब रुक जाए?
क्या पता, कब, किसका, समय आ जाए?

जाने से पहले सुनिश्चित कर लें
सदुपयोग कर लें, अपने तन का
अपने मन का, अपने धन का।

घट में जला लें ज्ञान-दीप
फिर अन्धकार मिट जाए।।

-'हुकम', 5-ए/1, सुभाष नगर, पाल रोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

ISSN 2249-2011

❁ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❁

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

16392 श्री सौरभजी जैन, जयपुर (राजस्थान)
16393 श्री सूर्यांशजी जैन, मुज़फ्फरनगर (उत्तरप्रदेश)
16394 श्री पंकजजी जैन, सवाई माधोपुर (राजस्थान)
16395 श्री अमिताभजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
16396 श्रीमती मीनाजी जैन, जयपुर (राजस्थान)
16397 श्री भूषणजी जैन, भोपाल (मध्यप्रदेश)
16398 श्री श्रेणिक कुमारजी चोरड़िया, चेन्नई (तमिलनाडु)
16399 श्री जिग्नेशजी संघवी, सूरत (गुजरात)

जिनवाणी प्रकाशन योजना हेतु साभार

100000/-श्रीमती लाड़श्रीजी, राजीवजी, संजीवजी, संदीपजी नाहर, सूरत (गुजरात)

जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार

11000/-श्री विमलजी, शैलेशजी गाँधी (पीपाड़ वाले-वीर परिवार), दिल्ली, पूज्या माताजी श्राविकारत्न श्रीमती कमलाबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री प्रेमचन्दजी गाँधी का सागारी संथारापूर्वक 21 मार्च, 2023 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

11000/-श्रीमती कमलाजी सोहनलालजी, अजयजी, राजेशजी, संजयजी, श्रीमती मोनिकाजी अजयजी, श्रीमती आशाजी राजेशजी मेहता, मुम्बई, चि. ऋषभजी का शुभविवाह सौ. मीनलजी के साथ सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

11000/-श्रीमती दाखाबाईजी जैन, अलीगढ़ रामपुरा (टोंक), सुपौत्र श्री शुभांशुजी जैन पुत्र श्रीमती उर्मिलाजी एवं सोहनलालजी जैन की पदोन्नति पुलिस अधीक्षक पद पर राँची (झारखण्ड) में पदभार ग्रहण करने हेतु सप्रेम।

11000/-श्रीमती जे. विजयाजी मेहता, चेन्नई, सप्रेम।

5100/- श्री महेन्द्रकुमारजी खींवसरा, चेन्नई, धर्मपत्नी स्व. श्रीमती हेमाजी खींवसरा (पुत्रवधू श्री कुशलजी खींवसरा) की पुण्यस्मृति में।

5100/- श्री नरेन्द्रकुमारजी मेहता, सुपुत्री सुश्री अदितिजी मेहता का 16 जनवरी, 2023 को देहावसान होने की पुण्यस्मृति में।

5000/- श्री समरथमलजी चतुर, अजमेर, सुपौत्र चि. अक्षयजी सुपुत्र श्री दिलीपजी, चि. अभिषेकजी सुपुत्र स्व. श्री मनोजजी के शुभविवाह के सम्पन्न होने पर सप्रेम।

2100/- श्री मदनलालजी, गजेन्द्रकुमारजी जैन, जयपुर, चि. गजेन्द्रजी (खेमराजजी) का शुभविवाह सौ. अरुणाजी के संग 21 फरवरी, 2023 को सम्पन्न होने एवं 24 घण्टे के नमस्कार मन्त्र के जाप के उपलक्ष्य में सप्रेम।

2100/- श्री विनोदकुमारजी, जयकुमारजी, विमलकुमारजी, कपिलजी जैन (सिंगोर वाले), सवाई माधोपुर, चि. मनीषजी सुपौत्र श्री बद्रीलालजी जैन का शुभविवाह सौ. मीनूजी सुपुत्री श्री गणपतलालजी जैन, चौरू के साथ 6 फरवरी, 2023 को सम्पन्न होने पर सप्रेम।

2100/- श्री महेन्द्रकुमारजी जैन बजाज, अलीगढ़-रामपुरा, मातुश्री श्रीमती रतनीदेवीजी (वीर दादीजी) के 10 मार्च, 2023 को देवलोकगमन होने की पुण्यस्मृति में।

2000/- श्री दिलीपजी धींग, चेन्नई, सप्रेम।

2000/- श्री पारसमलजी चण्डालिया, ब्यावर, सप्रेम।

1800/- श्रीमती ललिताजी, महेन्द्रजी गांग, सूरत, स्व. श्री मनमोहनमलजी गांग (जोधपुर) की 18वीं पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री बाबूलालजी, श्रीमती विमलाजी जैन, सवाई माधोपुर, श्री बुद्धिप्रकाशजी-श्रीमती मंजूजी जैन की सुपुत्री के जन्मदिवस पर सप्रेम।

1100/- श्री घनश्यामजी, श्रीमती खेमलताजी जैन, जयपुर, सुपौत्री श्रेष्ठी (सुपुत्री श्रीमती लविकाजी-अंकितजी जैन) के जन्मोत्सव पर सप्रेम।

1100/- श्री भूरचन्दजी जैन मेहता, सिणधरी-बालोतरा, चि. भावेशजी का शुभविवाह 22 फरवरी, 2023 को सम्पन्न होने पर सप्रेम।

गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन हेतु

श्री प्रकाशचन्दजी (प्राचार्य), पंकजजी, विशालजी जैन (श्यामपुरा वाले), जयपुर-मुम्बई।

श्री प्रकाशचन्दजी, दिनेश कुमारजी दफ्तरी, रायचूर (कर्नाटक)

श्री रोशनजी, समकितजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)

ISSN 2249-2011

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले अधिकतम 20 वर्ष की आयु के श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है। उत्तर प्रदाता अपने नाम, पते, आयु तथा मोबाइल नम्बर के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड आदि का भी उल्लेख करें।

भगवान महावीर की सहनशीलता

डॉ. प्रेमसुख सुराणा

एक समय की बात है भगवान महावीर जंगल में ध्यान लगाकर खड़े थे। चारों तरफ सुनसान वन था। उस समय एक ग्वाला अपने बैलों को चराते हुए वहाँ आया। उसने भगवान महावीर से कहा-''बाबाजी! मेरे बैल यहाँ चर रहे हैं, जरा देखते रहना, कहीं चले न जायें।'' यह कहकर वह अपना काम करने चला गया। भगवान महावीर ध्यान में थे, इसलिये उन्होंने कुछ उत्तर नहीं दिया। कुछ समय बाद वह ग्वाला वापस आया तो बैल वहाँ दिखाई नहीं दिये। वे घास चरते हुए आगे निकल गए थे। अपने बैलों को वहाँ न देखकर ग्वाला आग-बबूला हो गया। उसने भगवान से कहा-''अरे धूर्त! मेरे बैलों को छिपाकर यह ढोंग क्यों कर रहा है? बता मेरे बैल कहाँ हैं?'' भगवान तो ध्यान में थे। उन्होंने कुछ भी नहीं कहा। ग्वाले ने सोचा, मेरे बैलों को छिपाने वाला यही है। अब पूछने पर बोलता भी नहीं है, इसलिये उसने क्रोध में आकर भगवान को खूब मारा-पीटा। फिर भी भगवान पर्वत के समान अचल खड़े रहे। वे अपने ध्यान से विचलित नहीं हुए।

जब देवलोक के इन्द्र ने अपने ज्ञान के द्वारा यह सब देखा तो उन्हें बहुत दु:ख हुआ। वे भगवान महावीर के सामने उपस्थित हुए और ग्वाले को दण्ड देने के लिए तैयार हुए, किन्तु करुणासागर भगवान ने ग्वाले को दण्ड देने से इन्द्र को मना कर दिया। तब इन्द्र ने भगवान से कहा-''भगवन्! मैं आपके साथ रहना चाहता हूँ। मेरे साथ रहने से आपको इस प्रकार के कष्ट नहीं उठाने पड़ेंगे।''

भगवान ने उत्तर दिया-''इन्द्र! मुझे ग्वाले की मार से तनिक भी दु:ख नहीं हुआ, मुझे दु:ख तो इस बात का है कि उस बेचारे ने अज्ञानवश अशुभ कर्म बाँध लिये हैं। तुम श्रद्धावश मेरे साथ रहने की बात कह रहे हो, परन्तु किसी की सहायता से मुझे सिद्धि नहीं मिल सकती। मैंने जैसे कर्म बाँधे हैं, उन्हें तो मुझे ही भोगना पड़ेगा। कर्म का फल भोगे बिना उनसे छुटकारा नहीं मिल सकता। इसलिये मैं तुम्हारी सहायता नहीं चाहता हूँ।''

भगवान की निर्भय वाणी सुनकर इन्द्र को बड़ी खुशी हुई और वे प्रणाम करके अपने गन्तव्य स्थान को चले गये।

-39/15, प्रेम चौक, पुरानी मण्डी, अजमेर (राज.)

भक्तामर स्तोत्र की महिमा

संकलित

भोज राजा की धार नगरी का प्रसङ्ग है। उसी नगरी के राजदरबार में बाण एवं मयूर जैसे विद्वान् पण्डित रहते

थे। वे आपस में साला-बहनोई थे और परस्पर बहुत ही ईर्ष्या रखते थे। एक समय की बात है कि बाण की बहिन ने क्रोधवश बाण कवि को शाप दिया, जिससे उसे कुष्ठ रोग हो गया। बाण कवि ने सूर्य देवता के छह काव्यों की स्तुति की। सूर्य ने प्रत्यक्ष दर्शन देकर स्वर्ण कान्ति जैसा उसका शरीर बना दिया।

इस चमत्कार से राजा भोज अत्यधिक प्रभावित हुआ और मयूर पण्डित को भी अपनी शक्ति दिखाने के लिए कहा। पण्डित मयूर ने छुरी मँगाकर अपने हाथ-पैर की अंगुलियाँ काट ली। उसके द्वारा चण्डी देवी की स्तवना करने से देवी प्रसन्न हुई और उसकी सारी अंगुलियाँ जुड़ गई एवं शरीर वज्रमय हो गया। यह चमत्कार देखकर पूरी सभा आश्चर्यचकित एवं स्तब्ध हो गई। ऐसे समय में जैनधर्म से द्वेष रखने वाले किसी पण्डित ने ऐसी बात कही कि जैनधर्म में ऐसे चमत्कार करने वाले पण्डित नहीं हैं।

भोज राजा को जैनाचार्यों की परीक्षा का विचार आया। उन्होंने करीब में विचरते जैनाचार्य मानतुंगजी को अपने सेवकों को भेजकर दरबार में बुलाया। राजा ने उनसे कोई चमत्कार दिखाने के लिए कहा। इस पर मानतुंगाचार्य ने कहा कि हम पंचमहाव्रधारी साधु हैं तथा आत्मसाधना में विश्वास रखते हैं। सामान्यत: हम चमत्कार नहीं दिखाते हैं।

नृप को क्रोध आ गया और सेवकों को आदेश दिया कि आचार्यप्रवर को एड़ी से चोटी तक लोह शृङ्खलाओं में जकड़कर अन्धेरी कोठरी में बन्द कर दिया जाये। कोठरी के द्वार पर प्रहरी बिठा दिये जाये जो दिन-रात देखभाल करें। राजाज्ञा का अक्षरत: पालन कर सेवकों ने 48 लोह शृङ्खलाओं से उन्हें आपादकण्ठ जकड़कर तथा दरवाजों पर ताले लगाकर अन्धेरी कोठरी में बन्द कर दिया।

मानतुंगाचार्य अन्धेरी कालकोठरी में नितान्त नीरव एवं एकान्त स्थान पाकर भी बिना आक्रोश किये अपने आपको संयत कर, मन को पूर्णत: आराध्य देव के प्रति समर्पित कर प्रभु की स्तुति में तल्लीन हो गये। उनके मुखारविन्द से प्रभु-स्तुति में जो भाव प्रस्फुटित होने लगे वे एक-एक श्लोक का रूप धारण करते गये तथा एक-एक बन्धन टूटते गये। जब अड़तालीसवें श्लोक की रचना हुई तो आचार्यप्रवर अन्तिम बन्धन से भी मुक्त हो गये। काल कोठरी का अन्धेरा प्रकाश में परिवर्तित हो गया तथा आचार्यप्रवर सकुशल पुन: राजा के समक्ष उपस्थित हो गये।

ऐसा प्रभाव देखकर सभा का बड़ा भाग जो जैनों का द्वेषी था, उसने जैनधर्म को अपनाया। भक्तामर स्तोत्र वर्तमान में जैनधर्म शासन का प्रसिद्ध और प्रभावी स्तोत्र बन गया। आज भी प्रात:काल की शुभबेला में प्रभु स्तुति, सुख-समृद्धि एवं शान्ति हेतु यह स्तोत्र घर एवं धर्मस्थानों में श्रद्धा से बोला एवं सुना जाता है।

-प्रेषक : श्री जसराज देवड़ा, हैदराबाद

प्रतिक्रमण-प्रश्नोत्तर

प्र. 1– प्रतिक्रमण के छह आवश्यकों को देव, गुरु एवं धर्म में विभाजित किस प्रकार कर सकते हैं?

उत्तर– दूसरा आवश्यक चतुर्विंशतिस्तव देव का। तीसरा आवश्यक वन्दना गुरु का और शेष चार आवश्यक सामायिक, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग एवं प्रत्याख्यान धर्म के हैं।

प्र. 2– अकल्पनीय एवं अकरणीय में क्या अन्तर है?

उत्तर– सावद्य भाषा बोलना आदि प्रवृत्तियाँ 'अकल्पनीय' हैं तथा अयोग्य सावद्य आचरण करना 'अकरणीय' हैं। इस प्रकार अकल्पनीय में अकरणीय का समावेश हो सकता है, पर अकल्पनीय का समावेश अकरणीय में नहीं होता।

-'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से

Kamalsen

Shripat Sheth and his wife Sundari once visited Shri Shilandhar Āchārya and told him that they both observed daily vows such as reciting Namaskār Mangal Sutra, performed

Navkārasi (to eat 48 minutes after sunrise), and sāmāyīk. However, their son Kamalsen, did not observe any vows.

Kamalsen's parents were unhappy and anxious about their son's lack of devotion and spirituality. They requested the monk to give some advice to their son so that he would change for the better and happy life. The monk willingly obliged.

After reaching home, the merchant said to his son, "Well, my son, a great teacher is visiting our town. He is a very learned man, and his lectures are worth listening to." The next day, they accompanied their son to the lecture. After paying their respect to the Āchārya, they sat down to listen. The Āchārya talked about many things, including heaven, hell, misery and keval-jñān. After the discourse, the parents asked Kamalsen what he felt about the lecture. Kamalsen replied, "I was too busy watching the movements of the Āchārya's neck area." His parents were greatly dismayed and returned home disappointed.

Soon after another great sage, Āchārya Gunasāgar suri, visited the town and Kamalsen and his parents went to visit him. The Āchārya told the audience various stories of bravery, humor, sorrow and family relations with religious messages because such stories attract common people. The boy liked those stories, so every day he attended the Āchārya's sermons and listened with interest. After a few days, the Āchārya was preparing to leave town. Kamalsen joined the people at the farewell ceremony. Many people pledged to observe some vow. Kamalsen was asked if he would take a vow. He said, "I will not tell a lie except during the day or the night. I will not put a whole watermelon into my mouth, nor will I eat cow manure." The Āchārya was surprised by the boy's ridiculous behavior. Hence, in order to repent, the boy vowed not to eat food without looking at the baldhead of Simelo, a potter in the town. The Āchārya was very pleased with Kamalsen for taking a vow even though it was a very strange one.

One day, Simelo went to the forest to get some clay. Kamalsen was about to eat lunch when his mother reminded him of his vow. He immediately ran to the forest to find the bald potter. There he saw the potter digging in the ground. While digging, the potter came across a pot full of gems and precious stones. At the boy's arrival, he started hiding it underneath a heap of soil. Kamalsen shouted, "Yes! I have seen it (indicating to himself that he had seen the bald head of the potter)". The potter thought Kamalsen meant that he saw the pot and he did not want anyone else to know about the gems. Therefore, he told the boy that he would share half the treasure from the pot if he did not tell anyone. At first, Kamalsen did not understand what Simelo was talking about, but later he understood and gladly accepted the treasure and returned home.

Kamalsen thought deeply as he returned home, "A simple vow taken as a joke brought me this wealth. Had I taken this vow seriously, I would have benefited a lot more." This incident changed Kamalsen's life. He then observed many vows and became very happy.

Moral : When one takes vows to do something, it should require true devotion and discipline and require some from of sacrifice consistent with the principles of Jainism. Taking vows that do not fit this profile is useless and has no meaning. Taking vows and following through with them benefits one's soul. These benefits may be evident in one's present life or may not be evident until some future birth. However, vows definitely help to discipline your present life.

-Jain Story Book

समय का महत्त्व समझें

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

जिसने समय के महत्त्व को समझा है, वही जीवन में सफल हुआ है। समय के महत्त्व को नहीं समझने वाले जीवन विकास की दौड़ में पिछड़ जाते हैं, इस अनमोल ज़िन्दगी को व्यर्थ ही खो देते हैं।

किसी ने ठीक कहा है-Time is money. Time and tides waits for nobody.

समय मूल्यवान है। समय एवं ज्वारभाटा किसी का इन्तज़ार नहीं करते। समय का रथ अपनी गति से आगे बढ़ता रहता है। समय का सदुपयोग करने वाले ही अपने जीवन में रचनात्मक कार्यों का इतिहास बना देते हैं, जिसे दुनिया सदियों तक याद करती है। अनेकानेक महापुरुषों का जीवन इस बात का साक्षी है कि उन्होंने अपने जीवन को समय की धारा के साथ गतिमान किया था।

इस दुर्लभ मानव-जीवन को पाकर एक-एक पल एवं एक-एक क्षण की कीमत करना ही बुद्धिमानी है। हमारी दिनचर्या ऐसी होनी चाहिए कि हम अपने दिनभर के समय में अधिक से अधिक सत्कार्य कर सकें। समय को नियोजन करने की कला हमें आनी चाहिए। हमें यह बात भली-भाँति याद रहनी चाहिए कि बीता हुआ समय कभी लौटकर नहीं आता है। खोई हुई सम्पत्ति वापस मिल सकती है, किन्तु बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। समय के महत्त्व को समझते हुए हमें कभी भी अच्छे कार्यों के लिए आलस्य या प्रमाद नहीं करना चाहिए। किसी कवि ने ठीक कहा है-

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलय होयगी, बहुरि करेगो कब।।

जीवन की सफलता का रहस्य समय के सदुपयोग में ही निहित है। चाहे वह निर्धन हो या धनवान, किसान हो या मजदूर, राजा हो या प्रजा, विद्वान हो या मूर्ख, समय पर सभी का समान अधिकार है।

इसलिए यदि हम अपनी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति करना चाहते हैं, अपने देश और अपनी जाति का उत्थान चाहते हैं तो हमें अपने समय का सदुपयोग करना चाहिए, तभी हमारी उन्नति सम्भव है।

-जनता साड़ी सेंटर, फरिश्ता कॉम्पलेक्स, स्टेशन रोड, दुर्ग-49001(छत्तीसगढ़)

ऊँचा है आदर्श

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

(तर्ज :: मेरी माँ के बराबर कोई नहीं)

ऊँचा है आदर्श, ऊँचे सिद्धान्त, ऊँचा है जिनशासन तेरा
नर नारी क्या, देवता भी झुके, महिमामय जीवन तेरा
हे त्रिशलानन्दन! वर्धमान, महावीर के जैसा कोई नहीं
मेरे प्रभु के जैसा कोई नहीं...2

जैसे फूल रहता चमन में, जैसे हवा बहती गगन में
मेरे मन में बसता है प्रभु तू
करनी अब ऐसी है करना, खत्म जन्मना मरणा
शरणा तेरा ही अब मैं लूँ
मिथ्यात्व हटे उसका सारा, बस ज्ञान का फिर चमके तारा,
नाम तेरा जिसने भी पुकारा
अम्बर भी यहाँ है धरती भी, तुझ जैसा सहारा कोई नहीं
मेरे प्रभु के जैसा कोई नहीं...2।।1।।

वेदना जो मुझ पर आए, नैना मेरे नीर बहाए
दुःख में न तू अकुलाया
परीषह तूने कितने झेले, उपसर्गों के लगे थे मेले
मन न तनिक था डिगाया
सुख दुःख में समता रखी तुमने,
हर व्याधि हँसकर सही तुमने, वीतरागी तू कहलाया
समता सुमेरु तुम जैसा, प्रभुवर दूजा तो कोई नहीं
मेरे प्रभु के जैसा कोई नहीं...2।।2।।

जिसने भी तुझको ध्याया, बेड़ा उसका पार लगाया
नहीं पार करुणा का है तेरी
पथ जिसने तेरा अपनाया, मुक्ति को उसने ही पाया
हाथ तेरे नैया है मेरी

मिट जाती हैं सारी चाहें, मुक्ति की फिर मिलती राहें
वचनों को तेरे जिसने धारा
तीर्थपति! तुमसे बढ़कर, सच्चा शरणा तो कोई नहीं,
मेरे प्रभु के जैसा कोई नहीं...2।।3।।
तेरी करुणा से जो गहरा हो, ऐसा तो सागर कोई नहीं
मेरे प्रभु के जैसा कोई नहीं...2।।

-एस 149, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर-302015 (राजस्थान)

तुम अड़े रहो

सुश्री तृप्ति जैन

तुम अड़े रहो, तुम डटे रहो, अभी दूर तक जाना है।।
सफर का आनन्द लेते-लेते, तुम्हें मञ्ज़िल को पाना है।।
माना तुम लगे हुए हो...
अपने अथक प्रयासों से।
मगर कोई नहीं देखेगा....
तुम लड़े हो कितनी रातों से।।
दुनिया बस वही देखेगी...
जो तुम्हें उनको दिखाना है।
मेहनत का यह दौर नहीं....
परिणामों का जमाना है।।
असफल हो कर बैठोगे...
जब तुम घर के कोने में।
कोई साथ नहीं आएगा...
तुम्हारे अकेले होने में।।
लेकिन जब सफलता....
तुम्हारे क़दमों को चूमेगी।
यह दुनिया दीवानों की तरह...
तुम्हारे पीछे घूमेगी।।
मत सोचो उनके बारे में...
जो तुम्हारे खिलाफ हैं।
तुम मस्त रहो उन लोगों में...
जो सिर्फ तुम्हारे साथ हैं।।
अब नहीं होगा कुछ भी...
यह ख्याल मन में भी ना लाना।
अकेले यहाँ तक आए हो...
तो आगे भी जरूर जाना।।
तुमने किया है तुम कर लोगे, तुम सब कुछ कर सकते हो।
पंख फैलाकर अपने तुम, आकाश में उड़ सकते हो।।
तो बस मन में दृढ़ निश्चय बनाकर, आगे बढ़ते जाना है।
तुम्हें अपने नाम से... स्वर्णिम इतिहास बनाना है।।

-श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्थान (बालिका), मानसरोवर, जयपुर-302020 (राजस्थान)

Question Answers

Shri Dulichand Jain

Q1. What is the most important message of Tīrthaṅkara Mahāvīra?

Ans. The most powerful and sublime teaching of Mahāvīra is : 'Live and Let Live'. He stated that no one has the right to harm, injure, or kill any living being. We must love, respect and treat all living beings as equals, irrespective of each one's physical or spiritual development.

Ahiṃsā and its practice must be unconditional and free from caste, creed, race, gender, age or any other human-made or natural differences.

Q2. Why is non-violence ranked so highly in Jainism?

Ans. By not hurting or inflicting pain on any living being, We gain true wisdom and compassion. Practicing non-violence brings happiness and harmony to a family, society, nation and the world. It also inspires : Reverence for all life-forms, understanding, appreciation, acceptance, sharing and caring and harmlessness.

Non-violence is the basic virtue and foundation of Jainism. No other religious tradition lays such singular stress on non-violence, nor integrates it in such a logical, scientific and practical manner.

-Chennai (Tamilnadu)

10 अप्रेल 2023
जिनवाणी 96
ISSN 2249-2011

बाल-स्तम्भ

स्वजन कर्मफलभोग में हिस्सेदार नहीं होते

संकलित

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 मई, 2023 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपना नाम, आयु, मोबाइल नम्बर तथा पूर्ण पते के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड इत्यादि का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

वसुमती नगरी का वणिक् धनमित्र एक छोटी-सी दुकान करके अपनी आजीविका चलाता था। उसकी दुकान पर प्रायः भोले-भाले ग्रामीण स्त्री-पुरुष सौदा लेने आते थे। एक दिन एक भोली-भाली ग्वालिन धनमित्र की दुकान पर आयी और उसने उसके हाथ में दो रुपये देते हुए कहा-"मुझे दो रुपये का कपास दे दीजिए।" धनमित्र ने दो रुपये लेकर उसे एक रुपये के कपास को दो बार में तोलकर दे दिया। भोली-भाली ग्वालिन धनमित्र वणिक् की इस चालाकी को समझ न सकी। उसने समझा कि 'बनिये ने कपास दो बार तौला है, इसलिए मुझे दो रुपये का ही कपास दिया है।' वह कपास लेकर घर चली आयी।

उसके चले जाने पर वणिक् ने सोचा-'आज का दिन मेरे लिए बहुत ही भाग्योदय का है कि मुझे मुफ्त का एक रुपया मिला है। अतः आज मैं इस रुपये का उत्तम भोजन बनवाकर उपभोग करूँगा।' उसने उस एक रुपये की घी, शक्कर आदि सामग्री लेकर अपने घर भेजी और अपनी पत्नी को कहलाया कि-"आज इस सामग्री से घेवर बनाना।" पत्नी ने घेवर तैयार कर दिये। इतने में उसका दामाद अपने मित्रों के साथ किसी कार्यवश उसके यहाँ आ गया। वणिक्-पत्नी ने अपने दामाद तथा उसके मित्रों की थाली में घेवर परोस दिये। दामाद और उसके मित्र घेवर का भोजन करके तुरन्त वहाँ से चले गये।

यथासमय धनमित्र वणिक् अपने घर भोजन के लिए आया। वह रसोईघर में भोजन की थाली पर बैठा तो पत्नी ने उसकी थाली में प्रतिदिन की तरह साधारण भोजन परोस दिया। यह देखकर वणिक् ने पूछा-"क्या आज घेवर नहीं बनाए?" उसकी पत्नी ने कहा-"बनाये तो थे, किन्तु दामाद अपने इष्ट मित्रों के साथ आ गये थे, उन्हें तत्काल जाना था, इसलिए मैंने उनकी थाली में सभी घेवर परोस दिये थे।" यह सुनकर धनमित्र ने सोचा-'अरे ! व्यर्थ ही मैंने उस ग्वालिन को ठगा। मुझे तो उसका कुछ भी लाभ नहीं हुआ। मैंने तो दूसरों के लिए यह पापकर्म किया, किन्तु इस पाप का फल तो मुझे ही भोगना पड़ेगा।' उसके चिन्तन की धारा आगे बढ़ी-'ओ हो ! मैं कितना मूर्ख हूँ कि मैंने यह सोचकर पाप किया था कि चलो, इस मुफ्त में आये हुए रुपये का माल उड़ाऊँगा। परन्तु मुझे तो कुछ भी हाथ न लगा, सिर्फ पाप ही मेरे सिर चढ़ा, जिसका फल उदयकाल में मुझे ही भोगना पड़ेगा, उसमें दूसरा कोई भी हिस्सेदार नहीं होगा। संसार में वे लोग मूढ़ हैं, जो स्त्री, पुत्र आदि के निमित्त पापकर्म कमाते रहते हैं।'

यों चिन्तन करता-करता वणिक् धनमित्र घर से बाहर निकल गया। ग्रीष्मऋतु का समय था,

मध्याह्नकाल था। बहुत तेज धूप पड़ रही थी। वह शरीर चिन्ता से निवृत्त हुआ और गर्मी से घबराकर वहीं एक वृक्ष की ठण्डी छाया में विश्राम करने के लिए बैठ गया। इसी समय एक मुनि वहाँ से होकर जा रहे थे तो वणिक् ने उनसे कहा-''मुनिवर ! थोड़ी देर इस वृक्ष की छाया में बैठकर विश्राम ले लीजिए।'' मुनि के कहा-''मुझे अपने एक आवश्यक कार्य के लिए शीघ्र जाना है, इसलिए मैं विश्राम नहीं लूँगा।'' मुनिराज के वचन सुनकर वणिक् ने पूछा-''मुनिवर ! दुनिया में क्या कोई व्यक्ति पर-कार्य के लिए भी जाता है। (अर्थात् उद्यम करता है) ?'' ज्ञानी मुनिराज ने कहा-''हाँ, संसार में अनेक जीव ऐसे हैं, जो पर के निमित्त से नाना दु:ख उठाते हैं। तुम भी अपने स्वजनों के लिए जो दु:ख उठा रहे हो, वह सब पर का ही तो कार्य है।''

मुनिराज के ये मार्मिक वचन सुनकर धनमित्र वणिक् के हृदय की आँखें खुल गयी। वह प्रतिबुद्ध हो गया।

उसने मुनिवर से कहा-''पूज्यवर ! आप कहाँ ठहरे हैं ?'' मुनि ने कहा ''यहीं निकटवर्ती उद्यान में !'' यह कहकर मुनिराज चले गये। जब मुनिराज आवश्यक कार्य से निवृत्त होकर वापस लौटे तब वणिक् उनके साथ-साथ उद्यान में पहुँचा। वहाँ मुनिराज से उसने धर्मोपदेश सुना तो उसका अन्त:करण वैराग्य से परिपूर्ण हो गया। उसने मुनिराज से कहा-'गुरुदेव ! मुझे अब संसार से, स्वजन-धन एवं भोग साधनों से विरक्ति हो गयी। मुझे आपके चरणों में दीक्षित होना है। अत: मैं जब तक अपने स्वजनों की अनुमति लेकर आता हूँ, तब तक आप यहीं विराजे रहें।''

घर आकर धनमित्र वणिक् ने अपनी पत्नी और स्वजनों से कहा-''मुझे यहाँ इस दुकान से बहुत ही थोड़ा लाभ हो रहा है, अत: परदेश जाकर कोई बड़ा व्यापार करना चाहता हूँ ताकि मुझे विशेष लाभ हो।'' वह स्वजनों को समझाते हुए कहता है-''यहाँ मुझे दो सार्थवाह मिले हैं। उनमें से एक सार्थवाह तो ऐसा है, जो हमें मूल पूँजी देता है और यथेच्छ स्थान पर पहुँचा देता है तथा उस पूँजी से व्यापार करने पर जो लाभ होता है, उसमें से कुछ भी नहीं लेता। जबकि दूसरा सार्थवाह ऐसा है, जो हमें मूल पूँजी नहीं देता तथा साथ में रहकर समस्त उपार्जित द्रव्य को हड़प जाना चाहता है। अब आप सब बताएँ कि मुझे इन दोनों सार्थवाहों में से किस सार्थवाह के साथ जाना चाहिए ?'' सबने एक स्वर से कहा-''इसमें पूछने की क्या बात है ? आपका पहले सार्थवाह के साथ जाना ही उचित है।''

इस पर वह वणिक् समस्त स्वजनों को लेकर उस उद्यान में आया, जहाँ मुनि विराजमान थे। उसने मुनि को बताकर स्वजनों से कहा-''देखो, ये मुनिराज मुक्तिपुरी के सार्थवाह हैं। ये अपना धर्मरूपी मूलधन देकर मुमुक्षु मनुष्यों से धर्म का व्यापार करवाते हैं और मुक्तिपुरी को ले जाते हैं। ये उपार्जित धर्मधन में से कुछ भी हिस्सा नहीं माँगते, न लेते हैं। अत: मैं इन्हीं के साथ सिद्धपुरी जाना चाहता हूँ। दूसरे सार्थवाह-ये स्त्री-पुत्रादि स्वजन हैं जो पूर्वोपार्जित धर्मधन को भी हरण कर लेते हैं तथा अपना कुछ भी नहीं देते। आप सबने मुझे पहले सार्थवाह के साथ जाने की अनुमति दे दी है। अत: मैं आप सबके कथनानुसार अपने स्वजनों के मोह ममत्व को त्यागकर इन मुनिरूप मुक्तिपुरी के सार्थवाह का आश्रय लेता हूँ।'' इस प्रकार धनमित्र वणिक् ने स्वजनों की अनुमति पाकर उक्त मुनिवर से मुनिधर्म की दीक्षा ग्रहण करके स्व-पर कल्याण किया।

-साभार 'उत्तराध्ययनसूत्र भाग-1' चतुर्थ अध्ययन

प्र. 1 धनमित्र ने ग्वालिन के साथ कैसे छल किया ?

प्र. 2 धनमित्र को अपने किस कार्य पर पछतावा हुआ ?

प्र. 3 संसार में किन लोगों को मूढ़ कहा है और क्यों ?

प्र. 4 मुनिराज के वचनों का धनमित्र पर क्या प्रभाव पड़ा ?

प्र. 5 प्रस्तुत कथा हमें क्या शिक्षा देती है ?

प्र. 6 उद्यम, निवृत्त, निमित्त और उपार्जित शब्दों से एक-एक वाक्य बनाकर लिखिए।

बाल–स्तम्भ [फरवरी–2023] का परिणाम

जिनवाणी के फरवरी-2023 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'मेरी छोटी बहिन सन्तोष' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	पुलकित जैन, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	24
द्वितीय पुरस्कार-300/-	गणेश नगीन कुचेरिया, जलगाँव (महाराष्ट्र)	23
तृतीय पुरस्कार- 200/-	लक्ष्मी जैन, आलनपुर-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	22
सान्त्वना पुरस्कार (5) - 150/-	मुदिता जैन, सुमेरगंज मण्डी-बूँदी (राजस्थान)	21
	अर्पित जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	21
	सिमरन किरण अलीझाड़, भुसावल (महाराष्ट्र)	21
	रितिक जैन, कोटा (राजस्थान)	21
	आर्यन जैन, चौथ का बरवाड़ा (राजस्थान)	21

बाल–जिनवाणी मार्च, 2023 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 मई, 2023)

प्र. 1. लालच को पिशाच क्यों कहा गया है?
प्र. 2. साधु की बात न सुनने पर दोनों भाइयों का क्या हश्र हुआ?
प्र. 3. वर्धमान का नाम 'महावीर' कैसे पड़ा?
प्र. 4. भगवान महावीर ने नयसार के भव में क्या प्रतिज्ञा ली थी? उसका क्या फल प्राप्त हुआ?
प्र. 5. स्वाध्याय करने से जीवन में क्या परिवर्तन आता है?
प्र. 6. व्यक्ति के कष्ट किन्हें कहा गया है और क्यों?
प्र. 7. 'छोटे-छोटे बच्चे' कविता में बच्चों की क्या अभिलाषा है?
प्र. 8. काल के आधार पर प्रतिक्रमण के भेद लिखिए।
प्र. 9. What is Jainism and who started Jainism?
प्र. 10. What message does the theme "Win One, Win All" Convey to us?

बाल–जिनवाणी [जनवरी–2023] का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी-2023 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	आराध्या भंसाली, जोधपुर (राजस्थान)	38
द्वितीय पुरस्कार-400/-	हितेन्द्र जैन, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	37
तृतीय पुरस्कार- 300/-	सिद्धार्थ जैन, सरवाड़-अजमेर (राजस्थान)	36
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	रोहन राजेश अलीझाड़, नाशिक (महाराष्ट्र)	35
	हर्षित जैन, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	35
	यशवर्धन आहूजा, जयपुर (राजस्थान)	35

बाल-जिनवाणी, बाल-स्तम्भ के पाठक ध्यान दें

बाल–जिनवाणी एवं बाल–स्तम्भ के अन्तर्गत प्रत्येक अंक में दिए जा रहे प्रश्नों के उत्तर प्रदाताओं से निवेदन है कि वे अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाइल नम्बर, बैंक विवरण–(खाता संख्या, आई.एफ.एस.सी. कोड, बैंक का नाम इत्यादि) भी साथ में स्पष्ट एवं साफ अक्षरों में लिखकर भिजवाने का कष्ट करें ताकि आपका पुरस्कार उचित समय पर आपको प्रदान किया जा सके। जिन्हें अब तक पुरस्कार राशि प्राप्त नहीं हुई है, वे श्री अनिल कुमारजी जैन से (मो. 9314635755) सम्पर्क कर सकते हैं। *–सम्पादक*

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।

ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

7506357533 ✆ : 9022786523, 022-26287187

ई-मेल : **oswalmatrimony@gmail.com**

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि
आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

We Have Launched Membership Plans For Donors

	MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)	
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168

A/c No. 168010100120722 PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यो एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)

श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई।
श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन।
युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई।
श्रीमती इन्द्राबाई सूरजमल जी भण्डरी, चैन्नई (निमाज-राज.)।

DIAMOND MEMBER (RS.200000)

M/s Prithvi Exchange (India) Ltd., Chennai
श्रीमान् सुगनचन्द सा सरोजाबाई जी मुथा, डबल रोड, बैंगलोर

SILVER MEMBER (RS.50000)

श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोथरा, जलगांव (भोपालगढ़)
श्रीमान् अमीरचन्द जी जैन (गंगापुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर
श्रीमती बीना सुरेशचन्द्र जी मेहता, उमरगांव (भोपालगढ़ वाले)।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, जबलपुर
श्रीमान् प्रकाशचन्द शायरचन्च जी मुथा, औरंगाबाद (महा.)
श्रीमती लाडकंवर जी धर्मपत्नी श्रीमान् अमरचन्द जी सांड, विजयनगर, राजस्थान
श्रीमान पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरूवन्नमलई (तमिलनाडु)
श्रीमान् सिद्धार्थजी भण्डारी, जागृति नगर, इन्दौर (मध्य प्रदेश)
श्रीमान् हेमन्त अरविन्द जी सिंघवी, चारनी रोड, मुम्बई

GOLD MEMBER (RS. 75000)

श्रीमती पुष्पाबाई सुभाषचन्द जी बागरेचा, शिरपुर (महा.)
श्रीमान् सम्पतराज जी, सपनाजी, दिनेशजी राजेशजी सुराणा, जोधपुर-बैंगलोर
श्रीमान् संदीप मांगीलाल जी मुणोत, शिरपुर (महा.)

PLATINUM MEMBER (RS.100000)

श्रीमान् वूलीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई।
श्रीमान् दलीचन्द जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई।
श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई।
श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई।
श्रीमान् सम्पतराज जी राजकवंर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई।
प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)।
श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़।
श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडु।
श्रीमान जी. गणपतराजजी, हेमन्तकुमारजी, उपेन्द्रकुमारजी, कोयम्बटूर (कोसाणा वाले)
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, तिरूवल्लुवर (तमिलनाडु)।
श्रीमती कंचनजी बापना, श्री संजीव जी बापना, कलकत्ता (जोधपुर वाले)
श्रीमान पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरूवन्नमलई (तमिलनाडु)
श्रीमती शान्ता डॉ. उमरावसिंह जी लोढा, रावजी की हवेली, जोधपुर
स्व. श्रीमान् रिखभराज जी सज्जनकंवर जी भण्डारी, सरदारपुरा, जोधपुर

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

'छोटा सा चिंतन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

जिनवाणी-प्रकाशन-योजना के लाभार्थी बनें

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा जिनवाणी पत्रिका के प्रकाशन हेतु एक योजना प्रारम्भ की गयी है। जिसके अन्तर्गत एक-एक लाख रुपये की राशि प्रदान करने वाले दो महानुभावों के द्वारा प्रेषित प्रकाश्य सामग्री एक-एक पृष्ठ में एक माह प्रकाशित की जाती है। इसके साथ ही वर्ष भर उनके नामों का उल्लेख भी जिनवाणी में किया जाता है। सन् 2020 की जुलाई से अनेक महानुभाव इस योजना में जुड़े हैं, उन सबके हम आभारी हैं।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से चैक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रॉच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप एवं जमाकर्ता का पेन नं., मण्डल कार्यालय को प्रेषित करने की कृपा करें, जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके। 'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है।

वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु लाभार्थी

(1) न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया, जोधपुर।
(2) श्री कनकराजजी कुम्भट, जोधपुर।
(3) श्री पूनमचन्दजी जामड़ (किशनगढ़ वाले), जयपुर।
(4) श्री सुशीलजी बाफना, जलगाँव।
(5) श्री सोहनलालजी, गौतमचन्दजी हुण्डीवाल, चेन्नई।
(6) मैसर्स अमरप्रकाश फाउण्डेशन प्रा. लि., चेन्नई।
(7) श्री सुबाहु कुमारजी, मनोजजी, मनीषजी (सी.ए.) जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
(8) श्री श्रीपाल मलजी-श्रीमती मधुजी, श्री चिरागजी-श्रीमती लक्ष्याजी सुराणा (नागौर वाले), चेन्नई
(9) श्री कनकराजजी, महेन्द्रजी, देवांशजी कुम्भट, जोधपुर-मुम्बई
(10) सी. आर. कोठारी मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि), जयपुर-वडोदरा-मुम्बई
(11) नाहर परिवार मुम्बई, भोपाल, इन्दौर, बरेली।
(12) सौ. प्रेमलताजी श्री सोहनलालजी, सौ. रंजनाजी श्री महावीरजी बोथरा, जलगाँव (महाराष्ट्र)
(13) श्रीमती लाड़श्रीजी, राजीवजी, संजीवजी, सन्दीपजी नाहर, सूरत (गुजरात)

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

उदारमना लाभार्थियों की अनुमोदना एवं स्वेच्छा से नये जुड़ने वाले लाभार्थियों का हार्दिक स्वागत।

NAVKAR CITY JODHPUR
NORTH INDIA'S FINEST TOWNSHIP
navkar
G+2 APARTMENTS (with lift)
₹44 Lacs Onwards
LUXURIOUS VILLA
₹1.14 Crores Onwards
RENDERED IMAGE
DAY VIEW AT PRESENT
ACTUAL IMAGE
RENDERED IMAGE
LATEST CONSTRUCTION PICTURES
CASTING BRICKWORK
DEVELOPMENT IN FULL SWING
NAVKAR CITY BROCHURE
PANORAMIC SITE VIEW
www.navkarcity.com
sales@navkarcity.com
8504 000 222
Near DPS Circle, Pal-Gangana Road
WWW.RERA.RAJASTHAN.GOV.IN/RERA REG NO. RAJ/P/2019/1048
Disclaimer: Visual representations shown are only informative and indicative of the envisaged developments subject to variation and modification made by the company as approved by the competent authorities

JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

- NUTRITION FOODS
- BREAKFAST CEREALS
- FORTIFIED RICE KERNELS
- WHOLE & BLENDED SPICES
- VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)
Tel.: 0141-2770294
Email-jvsfoods@yahoo.com
Website-www.jvsfoods.com
FSSAI LIC. No. 10012013000138

CERTIFIED ISO 22000 CERTIFIED

Food Safety System Certification 22000

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENSA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office**:101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | Tel: +91 22 3064 5000 | Fax: +91 22 3064 3131 | **Email**: sales@kalpataru.com | **Website**: www.kalpataru.com

This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

In association with
HDFC
PROPERTY FUND

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन